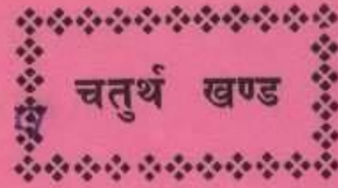
लघु विद्यानुवाद



इस खण्ड में (४—१ से ४—२४)

प्रत्येक तीर्थंकर के काल में उत्पन्न शासन रक्षक यक्ष यक्षणि के चित्र सहित स्वरूप व होम विधान



चतुर्थाधिकार

प्रत्येक तीर्थंकर के काल में उत्पन्न शासन

रक्षक यक्ष यक्षिणी के

चित्र सहित स्वरूप व होम विधान

(१) श्री आदिनाथ जी (बैल का चिन्ह)

गौ मुख यक्ष—स्वर्ण के समान, कांति वाला, गो मुख सदृश वाला, वृषभ वाहन वाला, मस्तक पर धर्म चक्र, चार भुजा वाला ऊपर के दाहिने हाथ में माला, बांऐ हाथ में फरसा तथा नीचे वाले दाहिने हाथ में वरदान, बांऐ हाथ में बिजौरे का फल धारण करने वाला होता है। (चित्र नं० १)

"चक्रेश्वरी यक्षिणी" (अप्रतिहत चक्रा) :—स्वर्ण के जैसे वर्ण वाली, कमल पर बैठी हुई गरुड़ की सवारी, १२ भुजा वाली, दोनों हाथों में दो वज्र, दो तरफ के चार चार हाथों में आठ चक्र, नीचे के दाहिने हाथ में वरदान धारण करने वाली, नीचे के बांऐ हाथ में फल। प्रकारान्तर से चार भुजा वाली भी मानी है। ऊपर के हाथों में चक्र, नीचे के बाऐ हाथ में बिजोरा, दाहिने हाथ में वरदान धारण करने वाली है। क्षेत्रपाल ४ जय, विजय, अपराजित, माणि भद्र। (चित्र नं० २)

(२) श्री अजितनाथजी (हाथी का चिन्ह)

"महायक्ष"—जिन शासन देव—स्वर्णसी कांति वाला, गज की सवारी चार मुख व आठ भुजा वाला है। बांऐ चारों हाथों में चक्र, त्रिशूल, कमल और अंकुश तथा दाहिने चारों हाथों में तलवार, दंड फरसा और वरदान धारण करने वाला है। (चित्र नं० ३)

"रोहणि यक्षिणी"—स्वर्ण समान कांति वाली, लोहासन पर बैठने वाली चार भुजा

वाली हाथों में शंख, चन्द्र अभय और वरदान युक्त है। (चित्र नं० ४)

क्षेत्रपाल—४ क्षेंम भद्र, क्षांति भद्र, श्री भद्र, शान्ति भद्र।

(३) श्री संभवनाथजी (घोड़े का चिन्ह)

"**त्रिमुख यक्ष**"—कृष्ण वर्ण वाला, मोर वाहन वाला, तीन नेत्र व तीन मुख वाला, छह भुजा वाला, बांऐ हाथों में चक्र, तलवार व अंकुश और दाहिने हाथों में दंड, त्रिशूल, और तीक्षण कतरनी को धारण करने वाला है। (चित्र नं० ५)

"**प्रज्ञप्ति यक्षिणी**"—श्वेत वर्ण, पक्षी की सवारी छह हाथ वाली हाथ में अर्द्ध चन्द्रमा, फरसा, फल तलवार, तूम्बी और वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र नं० ६)

क्षेत्रपाल—४ बीर भद्र, वलि भद्र, गुण भद्र, चन्द्राय भद्र।

(४) श्री अभिनन्दन नाथजी (वानर का चिन्ह)

"**यक्षेश्वर यक्ष**"—कृष्ण वर्ण वाला, गज की सवारी, चार भुजा वाला, बांऐ हाथ में धनुष और ढाल, दाहिने हाथ में बाण और तलवार धारण करने वाला है। (चित्र नं० ७)

"**वज्र शृंखला यक्षिणी**"—स्वर्ण सी कांति वाली, हंस वाहिनी, चार भुजा वाली, हाथों में नाग पाश, बिजोरा फल, माला और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र नं० ८)

क्षेत्रपाल—४ महा भद्र, भद्र भद्र, शत भद्र, दान भद्र।

(५) श्री सुमतिनाथजी (चकवे का चिन्ह)

"**तुम्बरु यक्ष**" -कृष्ण वर्ण वाला, गरुड़ की सवारी और यज्ञोपवति धारण करने वाला, चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनों हाथों में सर्प, नीचे दाहिने हाथ में वरदान तथा बांऐ हाथ में फल धारण करने वाला है। (चित्र नं० ९)

"**पुरुष दत्ता यक्षिणी**"—(खड्गवरा) स्वर्ण के वर्ण तथा हाथी की सवारी करने वाली, चार भुजा वाली है। हाथों में वज्र, चक्र, और बरदान धारण करने वाली है। (चित्र नं० १०)

क्षेत्रपाल—४ कल्याण चन्द्र, महा चन्द्र, पद्म चन्द्र, नय चन्द्र।

(६) श्री पद्मप्रभुजी (कमल का चिन्ह)

"**पुष्प यक्ष**"—कृष्ण वर्ण वाला, हरिन वाहन, चार भुजा वाला। (वसु नन्दि

प्रतिष्ठा कल्प मेर भुजा वाला) है। दाहिने हाथ में माला व वरदान तथा बाऐं हाथ में ढाल और अभय को धारण करने वाला है। (चित्र नं० ११)

"**मनोवेगा (मोहनी) यक्षिणी**"—स्वर्ण वर्ण तथा अश्व वाहन वाली, चार भुजा वाली है। हाथों में वरदान, तलवार, ढाल और फल को धारण करने वाली है। (चित्र नं १२)

क्षेत्रपाल—४ कालाचन्द्र, कल्पचन्द्र, कुमुत चन्द्र, कुमुद चन्द्र।

(७) श्री सुपार्श्वनाथजी (स्वस्तिक का चिन्ह)

"**मातङ्ग यक्ष**"—कृष्ण वर्ण वाला, सिंह की सवारी करने वाला, टेढ़ा मुंह वाला, दाहिने हाथ में त्रिशूल, बांऐ हाथ में दण्ड को धारण करने वाला है। (चित्र नं० १३)

"**काली देवी (मानवी) यक्षिणी**" यक्षिणी—श्वेत वर्ण वाली, बैल की सवारी करने वाली चार भुजा वाली है। हाथों में घंटा, फल, त्रिशूल और वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र नं० १४)

क्षेत्रपाल—४ विद्याचन्द्र, खेमचन्द्र, विनयचन्द्र।

(८) श्री चन्द्र प्रभुजी (चन्द्रमा का चिन्ह)

"**श्याम यक्ष**"—कृष्ण वर्ण, कबूतर (कपोत) की सवारी करने वाला, तीन नेत्र तथा चार भुजा वाला है। बांऐ हाथ में फरसा ओर फल, दांऐ हाथ में माला और वरदान युक्त है। (चित्र नं० १५)

"**ज्वाला मालिनी (ज्वालिनी) यक्षिणी**"—श्वेत वर्ण भेंसा (महिष) की सवारी करने वाली तथा आठ भुजा वाली है। हाथों में चक्र, धनुष नाग पाश, ढाल, बाण, फल, चक्र, और वरदान है। (चित्र नं० १६)

क्षेत्रपाल—४ सोम कांति, रविकांति, शुभ्र कांति, हेम कांति।

(९) श्री पुष्पदन्तजी (मगर का चिन्ह)

"**अजित यक्ष**"—श्वेत वर्ण वाला, कछुआ की सवारी तथा चार हाथ वाला है। दाहिने हाथों में अक्ष माला है और वरदान तथा बांऐ हाथों में शक्ति और फल को धारण करने वाला है। (चित्र नं १७)

"**महाकाली (भ्रकुटि) यक्षिणी**"—कृष्ण वर्ण वाली, कछवा की सवारी तथा चार

भुजा वाली है हाथों में वज्र, फल, मुग्दर और वरदान युक्त है। (चित्र नं० १८)

क्षेत्रपाल—४ वज्रकांति, वीरकांति, विष्णुकांति, चन्द्रकांति।

(१०) श्री शीतलनाथजी (कल्प वृक्ष का चिन्ह)

"**ब्राह्म यक्ष जिन शासन देव**"—श्वेत वर्ण, कमल आसन, चार मुख और आठ हाथों वाला है। बांऐ हाथ में धनुष, दण्ड, ढाल और वज्र तथा दाहिने हाथ में बाण, फरसा तलवार और वरदान को धारण करने वाला है। (चित्र नं० १९)

"**चामुण्डा देवी (मानवी चामुण्डी) यक्षिणी**"—हरे वर्ण वाली, काले सूवर की सवारी, चार भुजा वाली है, हाथों में मछली माला, बिजोरा फल और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र नं० २०)

क्षेत्रपाल—४ शतवीर्य, महावीर्य, बलवीर्य, कीर्तिवीर्य।

(११) श्री श्रेयांसनाथजी (गेंडे का चिन्ह)

"**ईश्वर यक्ष**"—श्वेत वर्ण, बैल की सवारी करने वाला, त्रिनेत्र तथा चार भुजा वाला है। बांऐ हाथ में त्रिशूल और दण्ड तथा दाहिने हाथ में माला और फल को धारण करने वाला है। (चित्र नं० २१)

"**गौरी यक्षिणी**"—स्वर्ण वर्ण तथा हरिन की सवारी करने वाली, चार भुजा वाली है। हाथों में मुग्दर, कलश, कमल, ओर वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र नं० २२)

क्षेत्रपाल—४ तीर्थ रुचि, भाव रुचि, भव्य रुचि, शान्ति रुचि।

(१२) श्री वासुपूज्यजी (भैंसे का चिन्ह)

"**कुमार यक्ष**"—श्वेत वर्ण तथा हंस की सवारी करने वाला है। त्रिनेत्र और छह भुजा वाला है। बांए हाथ में धनुष, नोलिया और फल तथा दाहिने हाथों में बाण गदा और वरदान को धारण करने वाला है। (चित्र नं० २३)

"**गान्धारी (विद्युन्मालिनी) यक्षिणी**"—हरित वर्ण, मगर वाहिनी तथा चार भुजा वाली है। ऊपर के दोनो हाथ में कमल, फल, वरदान युक्त है। (चित्र नं० २४)

क्षेत्रपाल—४ बन्धि रुचि, तत्व रुचि, सम्यक्त रुचि, तूर्य वाद्य रुचि।

(१३) श्री विमलनाथजी (सूवर का चिन्ह)

"**चतुर्मुख यक्ष**"—वर्ण मुख, हरित वर्ण वाला, मोर की सवारी करने वाला चार



गौमुख यक्ष नं. १



चक्रेश्वरी यक्षणी नं. २



महायक्ष नं. ३



रोहिणि यक्षणी नं. ४



त्रिमुख यक्ष नं. ५



प्रज्ञप्ति देवी नं. ६

मार्गदर्शक :– आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज



यक्षेश्वर यक्ष नं. ७



वज्रशृंखला यक्षणी नं. ८



तुम्बरु यक्ष नं. ५



पुरुषदत्ता यक्षी नं-५



पुष्प यक्ष नं-११



मोहिनी यक्षी नं-१२



मातंग यक्ष नं. १३



काली यक्षणी नं. १५



श्यामयक्ष नं. १५



ज्वाला मालिनी यक्षणी नं. १६



अजितयक्ष नं. १७



महाकाली यक्षणी नं. १८



ब्रह्मयक्ष देव नं. १९



चामुण्डादेवी नं. २०



ईश्वर यक्ष नं. २१



गौरी देवी नं. २२



कुमार यक्ष नं. २३



गान्धारी यक्षणी २४



षणमुख यक्ष नं. २५



वैराटी देवी नं. २६



पाताल यक्ष नं. २७



अनन्त मती यक्षणी नं. २८



किन्नर यक्ष नं. २९



मानसी यक्षणी नं. ३०



गरूड यक्ष नं. ३१



महामानसी यक्षणी नं. ३२

मुख, बारह भुजा वाला है। ऊपर के आठ हाथों में फरसा तथा बाकी के चारों हाथों में तलवार, ढाल, माला और वरदान धारण करने वाला है। प्रतिष्ठा तिलक में छह मुख वाला है। (चित्र नं० २५)

"**वैराटी देवी यक्षिणी**"— हरे वर्ण वाली सर्प वाहिनी, चार भुजा वाली है। ऊपर के दोनों हाथों में सर्प, नीचे के दाहिने हाथ में बाण बांऐ हाथ में धनुष को धारण करने वाली है। (चित्र नं० २६)

क्षेत्रपाल—४ विमल भक्ति, आराध्य रुचि, वैद्य रुचि, भावस्य वैद्य वाद्य रुचि।

(१४) श्री अनन्तनाथजी (सेही का चिन्ह)

"**पाताल यक्ष**" लाल वर्ण तथा मगर की सवारी करने वाला और तीन मुख वाला, मस्तक पर सर्प की तीन फणि को धारण करने वाला तथा छह भुजावाला है दाहिने हाथ में अंकुश त्रिशूल और कमल तथा बांऐ हाथ में चाबुक हल और फल धारण करने वाला है। चित्र नं० २७।

"**अन्नतमति यक्षिणी**" स्वर्ण वर्ण वाली, हंस वाहनी, चार भुजा वाली है हाथों में धनुष, बीजोरा फल बाण और वरदान धारण करने वाली है। चित्र नं० २८।

क्षेत्रपाल ४ स्वभाव नामा, पर भाव नामा, अनौपम्य, सहजानन्द।

१५. श्री धर्मनाथजी (वज्र का चिन्ह)

"**किन्नर यक्ष**"—मूंगे (प्रवाल) के वर्णमाला मछली की सवारी करने वाला, त्रिमुख और छह भुजा वाला है बांए हाथों में फरसा वज्र और अंकुश तथा दाहिने हाथ में मुग्दर माल, और वरदान को धारण करने वाला है। चित्र नं० २६।

"**मानसी यक्षिणी**"—मूंगे जैसी लाल कांति वाली व्याघ्र की सवारी करने वाली,छह भुजा वाली है। हाथों में कमल, धनुष वरदान, अंकुश बाण और कमल को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३०।

क्षेत्रपाल –४ धर्मकर, धर्माकारी, सांतकर्मा (सातु कर्मक) विनय नाम।

१६. श्री शान्तिनाथजी (हरिन का चिन्ह)

"**गरूड़ यक्ष**"—कृष्ण वर्ण वाला टेढ़ा मुख वाला (सूवर का सा मुंह वाला) सूवर की सवारी करने वाला चार भुजा वाला है। नीचे के दोनों हाथों में कमल और फल तथा ऊपर के दोनों हाथों में वज्र और चक्र लिए हुये हैं। चित्र नं० ३१।

"**महामानसी (कंदर्पा)** यक्षिणी"—मयूर वाहिनी चार भुजा वाली तथा स्वर्ण के समान वर्ण वाली है। हाथों में चन्द्र, फल, वज्र और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३२।

क्षेत्रफल—४ सिद्धसेन, महासेन, लोक सेन, विजय केतु।

१७. श्री कुन्थनाथ जी (बकरे का चिन्ह)

"**गंधर्व यक्ष**"—कृष्णा वर्ण वाला, पक्षी की सवारी करने वाला तथा चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनों हाथो में नागपाश नीचे दोनों हाथों में क्रमशः धनुष और वाण है। चित्र नं० ३३।

"**जया गान्धारी**" यक्षिणी—स्वर्ण वर्ण वाली, काले सूवर की सवारी करने वाली चार भुजा वाली है हाथों में चक्र शंख, तलवार और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३४।

क्षेत्रपाल ४ यक्षनाथ, भूमिनाथ, देशनाथ, अवनिनाथ।

१८. श्री अरहनाथजी (मत्स्य का चिन्ह)

"**खगेंद्र यक्ष**"—शंख की सवारी करने वाला त्रिनेत्र तथा छह मुख वाला है बांए हाथों में क्रमशः धनश, कमल, माला, बीजोराफल, बड़ी यक्ष माला और अभय को धारण करने वाला है। चित्र नं० ३५।

"**तारावती यक्षिणी**"—स्वर्ण वर्ण वाली हंस वाहनो, चार भुजा वाली है। हाथों में सर्प हरिण वज्र और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३६।

क्षेत्रपाल ४ गिरिनाथ, गह्वरनाथ, वरूणनाथ मैत्रनाथ।

१९. श्री मल्लिनाथजी (कलश का चिन्ह)

"**कुबेर यक्ष**"—इन्द्र धनुष जैसे वर्ण वाला, गज वाहिनी चार मुख आठ हाथ वाना है।

"**अपराजिता देवी यक्षिणी**" हरित वर्ण वाली, अष्टापद की सवारी करने वाली चार भुजा वालो, हाथों में ढाल फल तलवार और वरदान को धारणा करने वाली है। चित्र नं० ३८।

क्षेत्रपाल—४ क्षितिप, भवप, क्षांतिप, क्षेत्रप (यक्षप)।

२०. श्री मुनिसुव्रतनाथजी (कच्छप का चिन्ह)

"वरूण यक्ष"—श्वेत वर्ण तथा बैल की सवारी करने वाला जटा के मुकुट वाला, आठ मुख वाला, प्रत्येक मुख तीन तीन नेत्र वाला और चार भुजा वाला है। बांए हाथ में ढाल और फल तथा दाहिने हाथ में तलवार और वरदान है। चित्र नं० ३९।

"बहुरुपिणी (सुगन्धनी देवी) यक्षिणी"—पीत वर्ण, कृष्ण सर्प की सवारी करने वाली और चार भुजा वाली है हाथों में ढाल फल तलवार और वरदान धारण करने वाली है। चित्र नं० ४०।

क्षेत्रपाल—४ तंद्रराज, गुणराज, कल्याणराज, भव्यराज।

२१. श्री नमिनाथजी (नील कमल का चिह्न)

"भ्रकुटि यक्ष"—रक्त वर्ण वाला, बैल की सवारी करने वाला चार मुख तथा आठ हाथ वाला, हाथों में ढाल, तलवार, धनुष, बाण, अंकुश कमल चक्र और वरदान है। चित्र नं० ४१।

"चामुण्डा (कुसुममालनि) यक्षिणी"—हरित वर्ण वाली मगर की सवारी करने वाली चार भुजा वाली, हाथों में दण्ड, ढाल, माला और तलवार है। चित्र नं० ४२।

क्षेत्रपाल ४ कपिल, बटुक, भैरव, भैरव, सल्लाकारव्य।

२२. श्री नेमिनाथजी (शंख का चिन्ह)

"गोमेद यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला तीन मुख तथा पुष्प के आसन वाला मनुष्य की सवारी करने वाला और छह हाथ वाला है हाथों में मुग्दर फरसा, दण्ड, फल, चक्र और वरदान है। चित्र नं० ४३।

"आम्रा (कुष्माण्डनी) यक्षिणी"—सिंह वाहनी आम की छाया में रहने वाली दो भुजा वाली हैं बांए हाथ में प्रिय पुत्र की प्राप्ती के लिए आम्रा की लूम को धारण करने वाली है तथा दाहिने हाथ में शुभकर पुत्र को धारण करने वाली है। चित्र नं० ४४

क्षेत्रपाल ४ कौकल, खगनाम, त्रिनेत्र कलिंग।

२३. श्री पार्श्वनाथजी (सर्प का चिन्ह)

"धरणेन्द्र यक्ष" आकार के समान नीले वर्णवाला, कछुआ की सवारी करने वाला,

मुकुट में सर्प का चिन्ह और चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनों हाथों में सर्प और व नीचे के बांऐ हाथ में नागपाश और दाहिने हाथ में वरदान को धारण करने वाला है। चित्र नं० ४५।

"**पद्मावती देवी यक्षिणी**"—कमल (आशाधर पाठ में कुक्कुट) सर्प की सवारी करने वाली कमलासानी माना है मस्तक पर सर्प के तीन फणों के चिन्ह वाली माना है। मल्लिषेणाचार्य कृत पद्मावती कल्प में चारों हाथों में पाश फल वरदान को धारण करने वाली भी माना है। प्रकारान्तर में छह और चौबीस भुजा वाली भी माना है। छह हाथों में पाश, तलवार, भाला बाल चन्द्रमा गदा और मूसल को धारण करती है। तथा २४ हाथों में शंक तलवार, चक्र, बाल चन्द्रमा, सफेद कमल, लाल कमल, धनुष, शक्ति, पाश, अंकुश, घंटा, बाण, मूसल, ढाल त्रिशूल, फरसा वज्र, माला, फल, गदा पान नवीन, पत्तों का गुच्छा और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ४६।

क्षेत्रपाल ४ कीर्तिधर, स्मृतिधर, विनयधर, अब्जधर (अब्जारव्य)।

२५. श्री महावीरजी (सिंह का चिन्ह)

"**मातंग यक्ष**"—मूंगे के जैसे वर्ण वाला, गज वाहन मस्तक पर धर्म चक्र को धारण करने वाला और दो भुजा वाला है। बांयें हाथ में बिजोराफल, दाहिने हाथ में वरदान है। चित्र नं० ४७।

"**सिद्धायिक यक्षिणी**"—स्वर्ण के समान वर्ण वाली भद्रासनी, सिंहवाहनी, दो भुजा वाली बांयें हाथ में पुस्तक व दाहिने हाथ में वरदान युक्त है। चित्र नं० ४८।

क्षेत्रपाल ४ कुमुद, अंजन, चामर, पुष्पदंता।

॥ इति ॥





गंधर्व यक्ष नं. ३३



जया गांधारी यक्षणी नं. ३४



खेन्द्र यक्ष नं. ३५



तारावती यक्षणी नं. ३६



कुबेर यक्ष नं: ३७



अपरा जिता देवी नं. ३८



वरुण यक्ष नं. ३९



बहुरूपिणी यक्षणी नं. ४०



भ्रकुटी यक्ष नं. ४१



चामुण्डा यक्षणी नं. ४२



गोमेद यक्ष नं. ४३



आम्र कुष्माण्डनी यक्षणी नं. ४४



धरणेन्द्र यक्ष नं. ४५.



.पद्मावती देवी यक्षणी नं. ४६



मातङ्ग यक्ष नं. ४७



.सिद्धायिका देवीनं. ४८

अष्ठमातृका स्वरूप वर्णन

१–(ब्रह्माणी) देवी पद्मराग वर्णवाली, पद्मवाहन, मूसल का आयुध धारण करने वाली है।

२–(माहेश्वरी देवी) सुकर का वाहन, दंड और वरदान, आयुध को धारण करने वाली और श्वेतवर्ण वाली है।

३–(कौमारिदेवी) विद्रुम वर्ण वाली, मयुर का वाहन (खड्ग) तलवार का आयुध धारण करने वाली है।

४–(वैष्णविदेवि) इन्द्रनील वर्ण वाली, चक्रायुध धारण करने वाली, और गरूड वाहन वाली है।

५–(वाराहिदेवी) नील वर्ण वाली, वराहका (सुकर) वाहन वाली, हल का आयुध धारण करने वाली है।

६–(इन्द्राणि देवी) सुवर्ण वर्ण वाली, वज्रायुध धारण करने वाली, हाथी का वाहन वाली है।

७–(चामुंडिदेवी) अरूण वर्ण वाली, व्याघ्र वाहन वाली, शक्ति आयुध को धारण करने वाली है।

८–(महालक्ष्मीदेवी) सर्वलक्षणों से पूर्ण गदा का आयुध, चूहें का वाहन, और श्वेत वर्ण।

अष्टजयाद्यादेवता स्वरूप

१–(जयादेवी) पाश, असि, खेटक, और फल, सोने के समान वर्ण वाली, पीतांबर को धारण करने वाली, फूल की माला पहने हुये, चार भूजा वाली।

२–(विजयादेवी) छः हाथ वाली कोदंड, बाण, असि, गदा, सरोज, फल, के आयुध धारण करने वाली रक्त वर्ण वाली, रक्ताम्बर वाली।

३–(अजितादेवी) श्वेत वर्ण वाली, सूवर्ण वस्त्र, मत्स्य का वाहन, दो भुजा वाला, एक हाथ में कृपाण एक हाथ फल।

४–(अपराजितादेवी) कृष्ण वर्ण वाली, कृष्णांबर धारण करने वाली ६ भुजा वाली खेट, कृपाण रूचक, अभय, गदा, पाश, के आयुध को धारण करने वाली।

५–(जंभादेवी) लाल वस्त्र को धारण करने वाली, श्वेत वर्ण वाली, अष्ट भुजा वाली, धनुष, बाण, कृपाण, गदा, वर, माला, फल, अंबुरूह।

६–(मोहादेवी) रक्तवर्ण वाली, श्वेत वस्त्र को धारण करने वाली, सिंहाधिरूढ, चार भुजा वाली, माला, अभय, अंभोज, (कमल), वरद, को धारण करने वाली है।

७–(स्तंभादेवी) सूवर्ण वर्ण वाली, लाल वस्त्र को धारण करने वाली, हाथी की सवारी, छह हाथ वाला, खडग, त्रिशूल, उत्पल, मातुलिंग, वरद, अभय के आयुध वाली हैं।

८–(स्तंभिनीदेवि) रक्तवर्ण वाली, लाल वस्त्र को धारण करने वाली, ४ भुजा वाली, फल, असि, पुत्रीपरिका, अभय के आयुधों को धारण करने वाली, द्विरदाधि रूढ।

सोलह विद्या देवियों के नाम

रोहिणी १ प्रज्ञाप्ते २ वज्र श्रृंखला ३ बज्रांकुशे ४ अप्रतिचक्रे ५ पुरूषदता ६ कालि ७ महाकालि ८ गान्धारि ९ गौरि १० ज्वालामालिनि ११ वैरोटि १२ अच्युते १३ अपराजिते १४ मानसि १५ महामानसि १६।

सोलह विद्या देवियों के वाहन व आयुध २४ यक्षिणीयों अन्तर्गत ही है इसलिये अलग से नहीं दिया है। २४ यक्षियों के चित्र सहित वर्णन कीया है।

चतु:षष्टि योगिनीयों के नाम

दिव्ययोगिनी १ महायोगिनी २ सिद्धयोगिनी ३ जिणेश्वरी ४ प्रेताशी ५ डाकिनी ६ काली ७ कालरात्रि ८ निशाचरी ९ हुंकारी १० सिद्धवैताली ११ ह्रींकारी १२ भूतडामरी १३ ऊर्ध्वकेशी १४ विरूपाक्षी १५ शुक्लाङ्गी १६ नरभोजिनी १७ षट्कारी १८ वीरभद्रा १९ धूम्राक्षी २० कलहप्रिया २१ राक्षसी २२ घोररक्ताक्षी २३ विश्वरूपा २४ भयंकरी २५ वैरी २६ कुमारिका २७ चण्डि २८ वाराही २९ मुण्डधारिणी ३० भास्करी ३१ राष्ट्रटंकारी ३२ भीषणी ३३ त्रिपुरान्तका ३४ रौरवी ३५ ध्वंसिनी ३६ क्रोधा ३७ दुर्मुखी ३८ प्रेतवाहनी ३९ खट्वाङ्गी ४० दीर्घलंबोष्ठि ४१ मालिनी ४२ मन्त्रयोगिनी ४३ कालिनी ४४ त्राहिनी ४५ चक्री ४६ कंकालि ४७ भुवनेश्वरी ४८ कटी ४९ निकटी ५० माया ५१ वामदेवाकपर्दिनी ५२ केशमर्दी ५३ रक्ता ५४ रामजैघा ५५ महषिणी ५६ विशाली ५७ कार्मुकी ५८ लोलाकाक

श्री दिगम्बर व श्वेताम्बर क्रमशः षोडशविद्या देवियों के चित्र (जैन प्रतिमा विज्ञान से)



१. रोहिणी (दिग०)



१. रोहिणी (श्वे०)



२. प्रज्ञप्ति (दिग०)



२. प्रज्ञप्ति (श्वे०)



३. वज्रशृंखला (दिग)



३. वज्रशृंखला (श्वे०)



४. वज्रांकुशा (दिग०)



४. वज्रांकुशा (श्वे०)



५. जाम्बूनदा (दिग०)



५. अप्रतिचक्रा (श्वे०)



६. पुरुषदत्ता (दिग०)



६. पुरुषदत्ता (श्वे०)



७. काली (दिग०)



७. काली (श्वे०)



८. महाकाली (दिग०)



८. महाकाली (श्वे०)



९. गौरी (दिग०)



९. गौरी (श्वे०)



१०. गांधारी (दिग०)



१०. गांधारी (श्वे०)



११. ज्वालामालिनी (दिग०)



११. ज्वाला (श्वे०)



१२. मानवी (दिग०)



१२. मानवी (श्वे०)



१३. वैरोटी (दिग०)



१३. वैरोट्या (श्वे०)



१४. अच्युता (दिग०)



१४. अच्छुप्ता (श्वे०)



१५. मानसी (दिग०)



१५. मानसी (श्वे०)



१६. महामानसी (दिग०)



१६. महामानसी (श्वे०)

दि० क्षेत्रपालशांतिनाथमं० खजराहो



दृष्टि रक्षोमुखी ५९ मडोयधारिणी ६० व्याघ्री ६१ भूतादिप्रेत नाशिनी ६२ भैरवी, महामाया ६३ कपालिनी वृषाङ्गनी ६४।

यक्ष अथवा यक्षिणीयों की पंचोपचारी पूजा का क्रम

प्रथम सकलीकरण करे, फिर अष्टद्रव्य सामग्री शुद्ध अपने हाथ से धोकर, यक्ष अथवा यक्षिणी की पंचोपचारी पूजा भक्ति से श्रद्धानपूर्वक करे।

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु भगवति अमुक यक्ष अथवा अमुक यक्षिणी एहि २ संवौषट्।

इति आह्वान मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽतु, भगवती, अथवा, भगवते, अमुक यक्ष, अथवा अमुक यक्षिणी, तिष्ठ २ ठः ठः

इतिस्थापन मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽतु भगवति, अथवा, भगवते, अमुक यक्ष, अथवा अमुक यक्षिणी, ममसन्निहिता भव २ वषट्।

इति सन्निधीकरण मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽतु भगवति अथवा भवावते, अमुकयक्ष अथवा अमुक यक्षिणी, जल-गंध अक्षत् पुष्पादिकान् गृण्ह २ नमः।

उपरोक्त मंत्र से प्रत्येक द्रव्य को चढ़ाते समय उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करे। प्रत्येक द्रव्य से पूजा हो जाने के बाद विसर्जन करे।

इति द्रव्य अर्पण मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽतु, भगवति अथवा भगवते, यक्ष, अथवा अमुक, यक्षिणी स्वस्थानं गच्छ २ जः जः जः।

इति विसर्जन मंत्र

इस प्रकार यक्ष अथवा यक्षिणी की पूजा करनी चाहिये।

होम विधि

पहले शकली करण के बाद होम शुरू करे

तद्यथा—ॐ ह्रीं क्ष्वीं भु स्वाहा पुष्पाञ्जलिः ॥ १ ॥

इस तरह के मन्त्र जाप के विधान को पूर्ण कर दशांस अग्नि होम करे इसका विधान इस प्रकार है।

"ॐ ह्रीं क्ष्वीं" इस मन्त्र का उच्चारण कर पुष्पांञ्जलि क्षेपण करे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥ क्षेत्रपालबलिः ॥ २ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर क्षेत्रपाल को बलि देवे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वायु कुमाराय सर्व विघ्नविनाशनाय महीं पूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा ॥ भूमि सम्मार्जनम ॥ ३ ॥

इस मन्त्र को पढ़कर भूमिका सम्मार्जन-सफाई करे ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मेघ कुमाराय धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं तं पं स्वं झं झं यं क्षः फट् स्वाहा ॥ भूमि सेचनम् ॥ ४ ॥

यह मन्त्र पढ़कर भूमि पर जल सीचे ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अग्नि कुमारायं ह्म्ल्व्र्यूं ज्वल ज्वल तेजः पतये अमित तेज से स्वाहा ॥ दर्भाग्निप्रज्वालम ॥ ५ ॥

यह मन्त्र पढ़कर दर्भ से अग्नि सुलगावे ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं षष्ठि सहस्त्र संख्येभ्यों नागेभ्यः स्वाहा नागतर्पणम ॥ ६ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर नागों की पूजा करे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं भूमिदेवते इदं जलादिकमर्चनं गृहाण स्वाहा । भूम्यर्चनम् ॥ ७ ॥

यह मन्त्र पढ़कर भूमि की पूजा करे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं अंर्ह क्षं वं वं श्रीं पीठ स्थापनं करोमि स्वाहा ॥ होम कुण्डाऽग्रव्यक पीठ स्थापनम ॥ ८ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर होम कुण्ड से पश्चिम की ओर पीठ स्थापन करे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं समग्दर्शनज्ञानः चारित्रेभ्यः स्वाहा ॥ श्री पीठार्चनम ॥ ९ ॥

इस मन्त्र को पढ़कर पीठ की पूजा करे ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अंर्ह जगतां सर्व शान्ति कुर्वन्तु श्री पीठे प्रतिमास्थापनम् करोमी स्वाहा ॥ श्री पीठे प्रतिमास्थापनम् ॥ १० ॥

यह मन्त्र पढ़कर श्री पीठ पर प्रतिमा स्थापन करे ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमेष्टिभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमात्मकेभ्य स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनाधिनिधनेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमो नृसुरासुर पूजितेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तज्ञानेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्त दर्शनभ्यः स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽअनन्तवीर्येभ्य स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्त सौख्येभ्यः स्वाहा इत्यष्टभिर्मन्त्रैः प्रतिमार्चनम्: ॥ ११ ॥

इन आठ मन्त्रों का उच्चारण कर प्रतिमा की पूजा करना चाहिये ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं धर्म चक्रायां प्रतिहत तेज से स्वाहा ॥ चक्रत्रयार्चनम ॥ १२ ॥

इस मन्त्र को पढ़कर तीनों मन्त्र से चक्रों की पूजा करे ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्वेतच्छत्रत्रयश्रियैं स्वाहा ॥ छत्रत्रय पूजा ॥ १३ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर छत्र त्रय की पूजा करे ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ह्सौं २ सर्व शास्त्र प्रकाशनि वद् वद् वाग्वादिनी अवतर अवतर। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः संनिहिता भव भव वषट् क्लूं नमः सरस्वत्यै जलं निर्वपामि स्वाहा ॥ एवं गन्धा क्षत पुष्प चरु दीप धूप फल व स्त्राभरणादिकम्। प्रतिमाग्रे सरस्वती पूजा ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं इत्यादि मन्त्र पढ़कर सरस्वती का आव्हान स्थापन और सन्निधिकरण करै "क्लूं" इत्यादि पढकर जल गन्ध अक्षत पुष्प नवैध दीप धूप फल और वस्त्राभरणादिकसे प्रतिमा के सामने सरस्वती की पूजा करे ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र पवित्रतरगात्र चतुर शीत लक्षण गुणाष्टा दश सहस्त्र शील गणधरचरणाः आगच्छत २ संवौषट इत्यादि गुरु पादुका पूजा ॥ १५ ॥

"ॐ ह्रीं" इत्यादि पढ़कर गणधरो की पादुका की पूजा करे ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं कलियुग प्रबन्ध दुर्मार्ग विनाशन परम सन्मार्ग-परिपालन भगवन् यक्षेश्वर जलार्यनं गृहाण गृहाण इत्यादि जिनस्य दक्षिणे यक्षार्चनम ॥ १६ ॥

"ॐ ह्रीं" इत्यादि पढ़कर जिन भगवान के दक्षिण की ओर यक्षों की पूजा करे ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं कलियुग प्रबन्ध दुमार्ग विनाशिनि सन्मार्ग प्रवर्तिनि भगवती यक्षी देवते जलाद्यर्चनं गृहाण गृहाण । इत्यादि बामे शासन देवतार्चनम ॥ १७ ॥

यह मन्त्र पढ़कर जिन भगवान की बाईं ओर शासन देवताओं की पूजा करे ॥ १७ ।

ॐ ह्रीं उपवेशनभूः शुद्यतु स्वाहा ॥ होम कुंड पूर्व भागे दर्भपूलेनोपवेशन भूमि शोधनम् ॥ १८ ॥

यह मन्त्र पढ़कर होम कुंड के पूर्व भाग में दर्भ के पूले से बैठने की जमीन को शुद्ध करे ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं पर ब्रह्मणे नमों नमः ब्रह्मासने अहमुपविशामि स्वाहा । होम कुण्डाग्रे पश्चिमाभिमुखं होता उपयिशेत ॥ १९ ॥

यह मन्त्र पढ़कर होता (होम करने वाला) होम कुंड के अग्र भाग में पश्चिम की ओर मुख करके बैठे ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये पुण्याहकलशं स्थापयामि स्वाहा ॥
शाली पुञ्जोपरि फल सहित पुण्याह कलश स्थापनम् ॥२० ॥

यह मन्त्र पढ़कर चावलों के ढ़ेर पर पुण्यावाचन के कलश स्थापन करे और उनके ऊपर नारियल आदि कोई सा फल रक्खे ॥ २० ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्मसहा पद्मतिर्गीच्छ केसरि पुण्डरिक महापुंडरिक गंङ्गा सिन्धु रोहिद्रोहिता स्याहरिद्वरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरं कान्ता सुवर्ण रूप्य कूलारक्तारक्तोदा पयोधि शुद्ध जल सुवंण घट प्रक्षालित वर रत्न गन्धाक्षत पुष्पा चितमा मोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं भ्रौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः इति जलेन प्रसिञ्चय जल पवित्री करणम् ॥ २१ ॥

यह मन्त्र पढ़कर जल सींचकर पूजा करने के जल को पवित्र करे ॥ २१ ॥

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषटम ॥ कलशार्चनम ॥ २२ ॥

यह मन्त्र बोलकर कलशों की पूजा करे ॥ २२ ॥

ततो यजमानाचार्यः वाम हस्तेन कलशं धृत्वां सव्यहस्तेन पुण्यहवाचनां पठित्वा कलशं कुंडस्य दक्षिणे भागे निवेशयेत् ॥ २३ ॥

इसके बाद यजमान आचार्य बांये हाथ में कलश लेकर दाहिने हाथ से पुण्याहवाचन को पढ़ता हुआ भूमि का सिंचन करे ॥ २३ ॥ और पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां इत्यादि पुण्याहवाचन को पढ़ता हुआ कलश को कुण्ड के दाहिने भाग में स्थापन करे ॥ २३ ॥

ततः ॐ ह्रीं स्वस्तये मङ्गलकुम्भ स्थापयामि स्वाहा वामे मङ्गलकलश स्थापनं तत्र स्थालि पाक प्रोक्षण पात्र पूजाद्रव्य होम द्रव्य स्थापनम् ॥ २४ ॥

इसके बाद "ॐ ह्रीं स्वस्तये" इत्यादि पढ़कर कुंड के बांये भाग में कलश स्थापन करे और वहीं पर स्थालीपाक गन्ध पुष्प अक्षत फल इत्यादि को से सुशोभित पांच पंच पात्री' प्रेक्षणपात्र, पूजाद्रव्य और होम द्रव्य को स्थापन करे ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं परमेष्ठिभ्यों नमो नमः इति परमात्म ध्यानम् ॥ २५ ॥

इसे पढ़कर परमात्मा का चिन्तवन करे ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ध्यातृ भिरभीप्सित फलदेभ्यः स्वाहा परम पुरुष स्याध्य प्रदानम् ॥ २६ ॥

यह पढ़कर परमात्मा को अर्घ्य दे ॥ २६ ॥

तत इदं यन्त्रं कुण्ड मध्ये लिखेत् ॐ ह्रीं नीरज से नमः ॐ दर्पमथनाय नमः । इत्यादि ॥ जलंदर्भै र्गन्धाक्षतादिभि होम कुण्डार्चनम ॥ २७ ॥

इसके बाद कुण्ड के बीच में ॐ ह्रीं नीरज से नमः ॥ "दर्पमथनाय नमः" इत्यादि जिसे पीछे पूर्ण लिख आये है उस मन्त्र को लिखे जल गन्ध अक्षत दर्भ आदि से होम कुण्ड को अर्चना करे ॥ २७ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्नि स्थापयामि स्वाहा ॥ अग्नि स्थापनम् ॥ २८ ॥

इसे पढ़कर कुंड में अग्नि को स्थापना करे ॥ २८ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं दर्भ निक्षिप्य अग्निसन्धुक्षणं करोमी स्वाहा ॥ २९ ॥

यह पढ़कर कुंड में दर्भ डालकर अग्नि जलावे ॥ २९ ॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रां हं सः स्वाहा ॥ आम नम ॥ ३० ॥

यह मन्त्र पढ़कर आचमन करे ॥ ३० ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असि आ उ सा अर्हं प्राणायामं करोमि स्वाहा ॥ त्रिरुच्चार्य प्राणायाम् ॥ ३१ ॥

इस मन्त्र का तीन बार उच्चारण कर प्राणायामः करे ॥ ३१ ॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते सत्यवचनसन्दर्भाय केवल ज्ञान दर्शनप्रज्वलनाय पूर्वोत्तराग्रं दर्भ परिस्तरणमुदुम्बर समित्परिस्तरणं च करोमि स्वाहा ॥ होम कुण्डस्य चतुर्भुजेषु पञ्च पञ्च दर्भ वेष्टितेन परिधि बन्धनम् ॥ ३२ ॥

"ॐ नमोऽर्हते" इत्यादि पढ़कर कुंड के चारों कोनों पर पांच पांच दर्भ को एक साथ बांधकर परिबन्धन करे, दक्षिण और उत्तर के कोने पर रक्खे हुये दर्भों की नौंके पूर्व दिशा की ओर करे और पूर्व पश्चिम के कोने पर रक्खे दर्भों की नोकें उत्तर की ओर करे ॥ ३२ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्निकुमार देव आगच्छागच्छ इत्यादि।

इत्यादिदेव माहूय प्रसाद्य तन्मौल्युद्भवस्याग्नेरस्य गार्हपत्येनामधेयमन्त्र संकल्प्य अर्हद्दिव्यमूर्तिभावनया श्रद्धानरूपदिव्य शक्ति समन्वित सम्यग्दर्शन भावनया समभ्यर्चनम ॥ ३३ ॥

"ॐ ॐ ॐ ॐ" इत्यादि मन्त्र पढ़कर अग्नि देव (अग्निकुमार) का आह्वान करे उसे प्रसन्न करे, अर्थात् अग्नि जलावे, 'गार्हपत्य' इस नाम की कल्पना करे और अर्हन्त भगवान की दिव्य मूर्ति की तथा श्रद्धान रूप दिव्य शक्ति युक्त सम्यग्दर्शन की भावना कर पूजा करे ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं प्रशस्त वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधूचिन्ह सपरिवाराः पञ्चदश तिथिदेवताः आगच्छत आगच्छत इत्यादि कुण्डस्य प्रथम-मेखलायामं तिथि देवतार्चनम ॥ ३४ ॥

"ॐ ह्रीं क्रौं" इत्यादि मन्त्र को बोलकर कुंड की प्रथम मेखला पर पन्द्रह तिथि देवताओं की पूजा करे ॥ ३४ ॥

"ॐ ह्रीं क्रौं" प्रशस्तवर्णसर्व लक्षणसम्पूर्णस्वायुध वाहन वधू चिन्हस परिवारा नवग्रह देवता आगच्छत आगच्छतत्यादि । उर्ध्वमेखलायां द्वात्रिंशदि दिन्द्रार्चनम ॥ ३५ ॥

यह मन्त्र पढ़कर तीसरी मेखला पर बतीस इन्द्रों की पूजा करे ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं स्वर्ण सुवर्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहनवधू चिन्ह सपरिवार इन्द्रदेव आगच्छा अगच्छेत्यादि इन्द्रार्चनम ।। ३६ ।।

एवं लघ पीठेषु दशदिक्पाल पूजा करे ।। ३६ ।।

ततः ॐ ह्रीं स्थालिपाक मुपहयमि स्वाहा । पुष्पाक्षतैरुपहार्यं स्थाली पाक ग्रहणम ।। ३७ ।।

इसके बाद "ॐ ह्रीं स्थालीपाक मुपहयमि स्वाहा" यह पढ़कर पुष्पअक्षतों से भरकर स्थालि पाक को अपने पास रखे ।। ३७ ।।

ॐ ह्रीं होम द्रव्य मादधामि स्वाहा । ।। होम द्रव्याधानम्।।३८।।

इसे पढ़ कर होम द्रव्य अपने पास रखे ।

ॐ ह्रीं आज्यपात्रस्थापनम् ।।४०।।

यह पढ़ कर होम करने के घी को अपने पास रखे स्थापन करे ।।४०।।

ॐ ह्रीं स्वमुपस्करोमि स्वाहा ।। स्रुववस्तापनं मार्णनं जलंसेवन पुन-स्तापनमग्रे निधापनं च ।।४१।।

यह मन्त्र पढ़ कर स्त्रुक (सूचो) अर्थात् घी होमणे के पात्र का संस्कार इस प्रकार करे कि प्रथम उसे अग्नि पर तपावे, सेकें इसके बाद उसे पौंछे इसके बाद उस पर जल सींचे पुनः अग्नि पर तपावे और अपने सामने रखे ।।४१।।

ॐ ह्रीं स्रुङमुपस्करोमि स्वाहा ।। स्रुपस्थापनं तथा ।।४२।।

यह मन्त्र बोलकर स्त्रुव अर्थात् होम सामग्री को होमने के पात्र को सूचो की तरह संस्कार करे, स्थापना करे ।।४२।।

ॐ ह्रीं आज्यामुद्वासयामि स्वाहा ।। दर्भपिण्डोज्वलेन आज्यस्यो द्वासन मुत्पाचनमवेक्षणंम च ।।४३।।

यह मन्त्र पढ़ कर घी को तपावे वह इस तरह कि दर्भ के पूले को जलाकर घी को उठावे उत्पाचन (तपावे) और अवेक्षण (देखे) करे ।।४३।।

ॐ श्रीं पवित्रतर जलेन द्रव्यशुद्धि करोमि स्वाहा होम द्रुव्टा प्रोक्ष-णम ।।४४।।

यह मन्त्र पढ़ कर द्रव्य शुद्धि करे ।।४४।।

ॐ ह्रीं कुशमाददामि स्वाहा । दर्भपूलमादाय सर्वद्रव्य स्पर्शनम ॥४५॥

यह मन्त्र पढ़ कर दर्भ के पूले को उठाकर सब द्रव्य से छुवावे ॥४५॥

ॐ ह्रीं परम पवित्राय स्वाहा ॥ अनामिकांगुल्यां पवित्रधारणं ॥४६॥

यह मन्त्र पढ़ कर अनामिका उंगली में पवित्र पहिने ॥४६॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा ॥ यज्ञोपवीतधारणम् ॥४७॥

यह मन्त्र पढ़ कर यज्ञोपवित पहने ॥४७॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमाराय परिषेचनं करोमि स्वाहा । अग्निपर्युक्षणम् ॥४८॥

यह मन्त्र पढ़ कर कुंड के चारों ओर पानी की धार छोड़े ॥४८॥

ततः ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिकेवलिभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं पञ्चदशतिथि-देवेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नवग्रहदेवेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं दशलोकपालेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अग्नीन्द्राय स्वाहा षड़ेतान् मन्त्रानष्टादशकृत्वः पुनरावर्तनेनोच्चारयन् स्त्रुवेणप्रत्येक माज्याहुति कुर्यादित्या-ज्याहुतयः ॥४९॥

इसके बाद "ॐ ह्रीं अर्हं" इत्यादि छह मंत्र को अठारह बार दोहरा कर बोले प्रत्येक मन्त्र को बोल कर सूची घृताहुति करे। इस तरह एक सौ आठ आहुति हो जाती है इसे घृता-हुति कहते हैं ॥४९॥

ॐ ह्रां अर्हत्परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिनस्तंप-यामि स्वाहा ॥ ह्रौं उपाध्यायपरमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रः सर्वसाधुपर-मेष्ठिनस्तंपयामि स्वाहा ॥ अवांतरे पंचतर्पणानि "ॐ ह्रां" इत्यादि मन्त्र पढ़ कर मध्य में पाँच तर्पण करे ॥५०॥

यह तर्पण हर एक द्रव्य का हो और होम हो चुकने के बाद किया जाता है। इसलिये इसे अवान्तर तर्पण कहते हैं।

ॐ ह्रीं अग्नि परिषचयामि स्वाहा ॥ क्षीरेणाग्निपर्युणक्षम ॥५१॥

यह मन्त्र पढ़ कर अग्नि को दूध की धार देवे ॥४४॥

अथ समिधाहुतयः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा स्वाहा ॥ अनेन मन्त्रेण समिधाहुतयः करेण होतव्याः इति समिधा होम १०८॥ ततः षडाज्या हुतयः पञ्च तर्पणानि पर्युक्षणच ॥५१॥

अब समिधाहुति कहते है। "ॐ ह्रां" इत्यादि मन्त्र के द्वारा हाथ से समिधा की एक सौ आठ आहुतियां देवे। मन्त्रोच्चारण भी एक सौ आठ बार करे, इसके बाद पूर्वोक्त छह घृताहुति देवे। पाँच तर्पण करे और अग्नि पर्युंक्षण करे। अग्नि के चारों ओर दूध की धार देने को पर्युंक्षण कहते है ॥५२॥

अथ लवंगाद्यातुयः ॥ ॐ ह्रां अर्हद्भ्य स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा ॐ ह्रूं सूरभ्य स्वाहा। ॐ ह्रौं पाठकेभ्यः स्वाहा ॐ ह्रः सर्व साधुभ्यः स्वाहा॥ ॐ ह्रीं जिन धर्मेभ्यः स्वाहा ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनालयेभ्य स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यकज्ञानाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यकचारित्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं जया धृष्ट-देवताभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं षोडश विद्यादेवताभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिय क्षीभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं चतुदर्शभवन वासिभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं अष्टविधव्यन्तरेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं चतुर्वि-ध्योतिरिन्द्रेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं द्वादशविधकल्पवासिभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं अष्टविधकल्पवा-सिभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं नवग्रहेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं अष्टविध कल्पवासिभ्य स्वाहा। ॐ ह्रीं अग्निद्राय स्वाहा। ॐ स्वाहा भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा स्वः स्वाहा। एतान् सप्तविंशन्ति मन्त्राश्चतुवारानुच्चार्य प्रत्येक लवंग गन्धाक्षतगुग्गुलुतिलशालिकुङ्कुमकर्पूरलाजा गुरु शर्करामि राहुतिः सरुचा जुहुयात् इति लवङ्गाद्याहुतयः ॥

"ॐ ह्रीं अर्हद्भ्य" इत्यादि सताइस मन्त्रों का चार-चार बार उच्चारण कर हर एक मन्त्र को लोंग गन्ध अक्षत–गुग्गुल–कुंकम–कपूंर लाजा (भुने चावल) अगुरु और शक्कर इनकी सूची से आहूतियाँ देवे। इस प्रकार १०८ आहूति देवे ॥५३॥

॥ पूर्ववत् षडाज्याहुति पञ्चतर्पणंकपर्युक्षणानि ॥५४॥

इसके बाद पहिले की तरह छह घृताहूति पंचतर्पण और एक पर्युंक्षण करे इनके करते समय पूर्वोक्त मन्त्रो को बोलता जावे ॥५४॥

॥ अथ पीठिका मन्त्राः ॥

ॐ सत्यजाताय नमः। ॐ अर्हज्जाताय नमः। ॐ परमजातायः नमः। ॐ अनुपम-जातायां नमः। ॐ स्वप्रधानाय नमः। ॐ अचलाया नमः ॐ अक्षयाय नमः। ॐ अव्या-बाधाया नमः। ॐ अनन्तज्ञानाय नमः। ॐ अनन्तदर्शनाय नमः। ॐ अनन्तवीर्याय नमः। ॐ अनन्तसुखाय नमः। नीरज से नमः। ॐ निर्मलाय नमः। ॐ अच्छे-द्याय नमः। ॐ अभेद्याय नमः। ॐ अजराय नमः। ॐअमराय नमः ॐ अप्रमेयाय नमः। ॐ गर्भ-

वासाय नमः । ॐ अविलीनाय नमः ॐ परमनाथाय नमः । ॐ लोकाग्रनिवासने नमः । ॐ परमसिद्धेभ्य नमः ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यों नमः । ॐ केवलि सिद्धेभ्य नमः ॐ अनन्तकृत्सिदेभ्य नमः । ॐ परंपरासिद्धेभ्य नमः । ॐ अनादिपरमसिदेभ्यः नमः । ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्य नमः । ॐ सम्यकदृष्टे आसन्नभव्य निर्वाणपूजार्ह अग्निन्द्राय स्वाहा ।। सेवाफलंषट परम स्थानं भवतु अपमृत्युनाशनं भवतु ।। पीठिकामन्त्रा ।। पीठिकामन्त्रेरेतैः षटत्रिंशभ्देदभिन्नैः प्रतिमन्त्रं त्रिवारमुच्चारितैः शाल्यन्नक्षीरघृत-भक्ष्यपायस शर्करारम्भाफलैर्मिलितैरन्नाहूति । स्रूचा जुहुयात पुनराज्याहुतितर्पणपर्यु क्षणानि ।।५५।।

"ॐ सत्यजाताय नमः" इत्यादि छत्तीस पीठिका मन्त्रों का हर एक का तीन तीन बार उच्चारण करे प्रत्येक के अन्त में, शाली, अन्न दूध, घी, दूसरे खाने के पदार्थ, खोवा, शक्कर और केले इन सबको मिलाकर सूची द्वारा अन्नाहूति देवे यह भी १०८ बार हो जाती है इसके बाद जीतने मन्त्र जप किया हो उसका दशांस होम लवंगादि द्रव्य से करे फिर छह घृताहूति, पांच तर्पण एक पर्युक्षण करे ।

।। अथ पुर्ण आहूति ।।

ॐ तिथि देवाः पञ्चदशधा प्रसीदन्तु, नवग्रह देवा प्रत्यवायहरा भवन्तु । भावनादयों द्वात्रिशं द्वेवा इन्द्राः प्रमोदन्तु । इन्द्रादयो विश्वे दिक्पालाः पालयन्तु । अग्निन्द्रामोल्य दूवाऽप्यानि देवता प्रसन्ना भवतु । शेषाः सर्वेऽपि देवा एते राजानं विराजयन्तु दातरं तर्पयन्तु संघ श्लाघयन्तु वृष्टि वर्षयन्तु । विघ्नं विघातयन्तु मारीं निवारयन्तु । ॐ ह्रीं नमोऽर्हते भगवते पूर्ण ज्वलित ज्ञानाय सम्पूर्ण फलार्घ्यां पूर्णाहुतिं विदंध्महे ।।इति पूर्णाहूतिः ५६।।

"अति तिथि देवाः" इत्यादि मंत्रों के द्वारा पूर्णाहूति देवे । पूर्णाहूति में फल और पूजा का द्रव्य होना चाहिए । पूर्णाहूति के मन्त्र पूर्ण हो, वहां तक बराबर एक सरीखी घी की धार छोड़ता रहे ।।५६।।

ततो मुकलित कर :—ॐ दर्पणों घोत ज्ञान प्रज्वलित सर्व लोक प्रकाशक भगवन्नर्हन् श्रद्धां मेधां प्रज्ञां बुद्धि श्रिय बलं आयुष्यं तेज आरोग्यं सर्व शान्ति । विधेहि स्वाहा । एत पठित्वा सम्प्रार्थ्य शान्ति धारां निपात्य पुष्पाजंलि प्रक्षिप्य चैत्यलादि भक्ति त्रयं चतुर्विशंति स्तवनं वा पठि वा पञ्चांग प्रणम्य तदिव्य भस्म समादाय ललाटा दौ स्वयं धृत्वा अन्यानपि दधात् ।।५७।।

इसके बाद हाथ जोड़कर "ॐ दर्पणो घोत" इत्यादि मन्त्र पढ़े, प्रार्थना करे, शान्ति धारा दे पुष्पांजलि क्षेपण करे चैत्यलय वगैरह की तीन भक्ति अथवा चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति

पढ़े और पचांग नमस्कार कर होम की दिव्य भस्म को लेकर ललाट वगैरह स्थानों पर लगावे, और औरों को भी देवे ॥५७॥

शांति धारा शान्ति पूर्वक भक्ति से पढ़े। फिर पहले स्थापित कलश लघु पुण्याह वाचन कर, स्थापित जिनेन्द्र प्रभु की मूर्ति को स्वस्थान पर विराजमान करके मंगल कलश को बाजे, गाजे के साथ अपने घर में ले जावे।

। इति होम विधान ।

अथ पुन्याह वाचन

ॐ स्वस्ति श्री यजमा[illegible]ार्य प्रभृति समस्त भव्यजनानां सद्धर्म श्री बलायु-रारोग्यैश्वर्याभि वृद्धिरस्तु।

अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्री मदादि ब्रह्मणो मते त्रैलोक्य मध्यं मध्यासीने मध्य लोके श्री मदनावृत यक्ष सं सेव्य माने, दिव्य जम्बू वृक्षोपलक्षित, जंबू द्वीपे, महनीय महामेरो-र्दक्षिण भागे, अनादि काल सं सिद्ध भरत नाम धेय प्रविराजित षट् खन्ड मण्डित भरत क्षेत्रे, सकल शलाका पुरुष सं भूति सम्बन्ध विराजितार्य खण्डे, परम धर्म समा चरण अस्मिन् देशे, अस्मिन् विनेय जनताभिरामे,······ ··········ग्रामे श्री दिगम्बर जैन मूल संघे, सरस्वती गच्छे, बलात्कार गणे श्री मद् कुन्दकुंदाम्नाये महा शांति कर्मणोचित्ते, अत्र ······ दिव्य महा चैत्यालये, प्रदेशे एतदव सर्पिणी कालावसाने प्रवृत्त सुवृत्त चतुर्दश मनूपमान्वित सकल लोक व्यवहारे, श्री वृषभ स्वामी पौरस्त्य मंगल महापुरुष परिषत्प्रतिपादित परमोपशम पर्व क्रमे, वृषभ सेन सिंह सेन, चारू सेनादि गणधर स्वामी निरूपित विशिष्ट धर्मोपदेशे, दुःखम सुख-मानंतर प्रवर्तमान कलियुगा पर नाम धेय दुःखमाभिधान पंचम काल प्रथम पादे, महति महावीर वर्द्धमान तीर्थंकरोपदिष्ट सधर्म व्यति करे, श्री गौतम स्वामी प्रतिपादित सन्मार्ग प्रवृत्त माने, श्रेणिक महा मंडलेश्वर समा चरित सन्मार्गा विशेषे, विक्रमांक नृपाल पालित प्रवृत मानानु-कूल शक नृप काले······ ···वर्षसंमिते, प्रवृतमान········ संवत्सरे, अमुक मासे अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, प्रशस्त तारका योग करणद्रे काण होरा मुहूर्त लग्न युक्तायां, अष्ट महा प्रातिहार्य शोभित श्री मद अर्हत्परमेश्वर सन्निधौ श्री शारदा सन्निधौ, राजर्षि परर्षि ब्रह्मर्षि सन्निधौ, विद्वत्सामाज सन्निधौ, अनाधि श्रोतृ सन्निधौ, देव ब्राह्मण सन्निधौ, सुब्राह्मण सन्निधौ, याग मंडल भूमि शद्धयर्थं, द्रव्य शुद्धयर्थं, पात्र शुद्धयर्थं, क्रिया शुद्धयर्थं, मंत्र शुद्धयर्थं, महा शांति कर्म सिद्ध साधन यंत्र मंत्र तंत्र विद्या प्रभाव सं सिद्धि निमित्त विधियं मानस्य अमुक

क्रिया महोत्सव समये, पुण्याह् वाचनं करिष्ये। सर्वैः सभाजनैरनु ज्ञायतां विद्वद्विशिष्ट जनैरनु ज्ञायतां, महाजनैरनु ज्ञायतां तद्यथा।

प्रस्थमात्र तंदुलोपरि ह्रीं कार संवेष्टित स्वस्तिक यन्त्रे मन्त्र परिपूजित मणिमय मंगल कलशं संस्थाप्य, यजमानाचार्यो ऽपसव्य हस्तेन् धृत्वा पुण्याहमन्त्रमुच्चारन् सिचेत्। ॐ स्वस्तिक कलशं स्थापनं करोमि।



पास में छपे हुये यन्त्रानुसार करीब एक सेर चावल लेकर जमीन में यन्त्र बनावें, फिर उसके ऊपर जल से भरा हुआ कलश रखकर उसमें नागर वेल का पत्ता रखें और पुण्यहवाचन पढ़ते जावे और कलश का पानी उस पत्ते से दाहिने हाथ से छिड़कते जावे।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्त गंगा सिध्वादि नदी नव तीर्थ जलं भवतु स्वाहा। जलपवित्री करणं।

ॐ ह्रीं पुण्याह् कलशार्चनं करोमि स्वाहा।

साथिया के ऊपर के कलश में अर्घ चढ़ावे।

ॐ पुण्याह २ प्रियंतां २ भगवंतोऽर्हंतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः त्रिलोकनाथाः त्रिलोक प्रद्योतनकराः वृषभ अजित-संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चन्द्रप्रभ पुष्पदंत, शीतल श्रेयो वासुपूज्य विमल अनंत धर्म शांति कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रत नमि नेमि पार्श्व श्री वर्द्धमानाः शांताः शांतिकराः सकलकर्मरिपु विजय कांतार दुर्गविषयेषु रक्षंतु नो जिनेंद्राः सर्वविदश्च॥ श्री ह्री धृति कीर्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मे धाविन्यः सेवा कृषि वाणिज्य वाद्य लेख्य मन्त्र साधन चूर्णिप्रयोग स्थान गमन सिद्धि साधनःया प्रतिहत शक्तयो भवंतु नो विद्यादेवताः। नित्यमर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु वश्च भगवंतो नः प्रियंतां २ आदित्य सोमांगार बुद्ध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु ग्रहाश्च नः प्रियंतां २। तिथि करण मुहूर्त लग्न देवताः इहचान्य ग्राम नग रादिषु अपि वास्तु देवताश्चताः सर्वागुरू भक्ता अक्षिण कोष कोष्टागारा भवेयुर्दान तपोवीर्यं नित्यमेवास्तु नः प्रियंतां २ मातृपितृ भ्रातृ सुत सुहृत्स्व जन संबंधी बंधुवर्ग सहितानां धनधान्यैश्वर्य द्युति बलयशो वृद्धिरस्तु। प्रमोदोस्तु शांति र्भवतु पुष्टि र्भवतु सिद्धि र्भवतु काम मांगल्योत्सवाः संतु शाम्यंतु घोराणि शाम्यंतु पापानि पुण्य वर्द्धताम् धर्मोवर्द्धताम् श्रायुषीवर्द्धताम् कुलंगोत्रं चाभिवर्द्धताम् स्वस्ति भद्रं चास्तु नः हता स्तेपरिपंथिनः शत्रवः

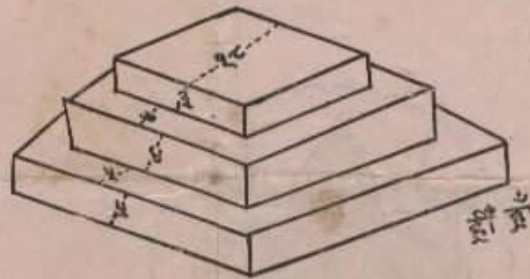
शमंयतु । निष्प्रति घमस्तु । शिव मतुलमस्तु । सिद्धाः सिद्धि प्रयच्छंतु नः । ॐ कर्मणः पुण्याहं भवंतो बुवंतु इति प्रार्थयेत् । प्रार्थितविप्राः पुण्याहं कर्मणोऽस्तु " इतिब्रूयुः । ॐ कर्मणेस्वस्ति भवंतो ब्रुवंतु । स्वस्ति कर्मणेऽस्तु कर्मऋद्धिं भवंतो ब्रुवंतु " कर्मऋद्धिस्तु ।

विशेष : —अगर होम नहीं करता है तो जितना जप किया, उतने जप का दशांस, जप चौगुना जप, ज्यादा कर लेना चाहिये । जैसे—एक हजार जप का दशांस १०० जप हुआ, उस १०० जप को चौगुना जपने से, याने ४०० बार जप कर लेने पर होम की पूर्ति हो जाती है । फिर अग्नि होम करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है ।

मन्त्र जप के बाद दशांस होम करने के लायक
होम कुण्डों का नक्शा

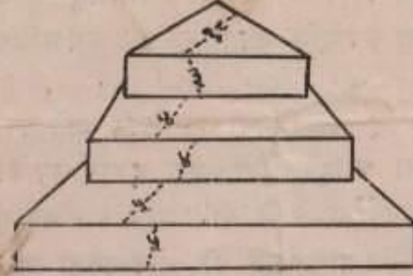
होम कुण्ड नीचे दिये गये नक्शे के मुताबिक बनावे, और होम कुण्ड के लिये ईंटें कच्ची होनी चाहिये । वध, विद्वेषण, उच्चाटन कर्म में आठ अंगुल लम्बी समिधा ले (लकड़ी) । पुष्टि कर्म में नौ अंगुल, शान्ति, आकर्षण, वशीकरण में, स्तम्भन, कर्म में बारह अंगुल की लकड़ियाँ हों । लकड़ियाँ दूध वाले वृक्ष की हों ।

तीर्थङ्कर कुण्ड (१)



गार्हपत्याग्नि

गणधर कुण्ड (२)



आहवनीय

केवली कुण्ड (३)



दक्षिणाग्नि



लघु विद्यानुवाद

पंचम खंड

इस खण्ड में (५—१ से ५—५६)

तन्त्राधिकार



पंचम तंत्राधिकार

अश्विनी नक्षत्र में अर्द्ध रात्रि को नग्न होकर अपामार्ग की जड़ को लावे, फिर कण्ठ में धारण करे तो राज सभा वश होय। १।

भरणी नक्षत्र में संखा होली की जड़ लावे, तावीज में रक्खे (पर) स्त्री वश में होय । २ ।

कृत्तिका नक्षत्र में रोहिस की जड़ लावे, पास रक्खे तो अग्नि नहीं लगे । ३ ।

रोहिणी नक्षत्र में अर्द्ध रात्रि में नग्न होय, नेगद बावची की जड़ लावे और पास रक्खे तो वीर्य चाले नहीं । ४ ।

मृगशिर नक्षत्र में महुवा की जड़ लावे तो रात्रि में चोरी नहीं होय । ५ ।

आर्द्रा नक्षत्र में अर्क की जड़ लाय, तावीज में डालकर पास रक्खे तो, झूंठी बात सच होय । ६ ।

पुनर्वसु नक्षत्र में मेंहदी की जड़ को लेकर पास रक्खे तो अपने शरीर में अच्छी सुगन्ध आती है । ७ ।

पुष्य नक्षत्र में नागरवेल की जड लेकर पास रक्खे तो, दुष्ट वाक्य से कभी भय नहीं होता है । ८ ।

आश्लेषा नक्षत्र में धतूरा की जड लेकर देहली में रक्खे तो, सर्प घर में आने का भय नहीं रहता है । ९ ।

मेघा नक्षत्र में पीपल को जड लेकर पास रक्खे तो रात्रि में दुस्वप्न नहीं आते हैं । १० ।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में आम की जड लाकर दूध में घिस कर पिलाने से बांझ स्त्री को पुत्र की प्राप्ति होती है । ११ ।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में नीम की जड को लाकर पास रक्खे तो लड़की से लड़का होता है । १२ ।

हस्त नक्षत्र में चम्पा की जड़ लाकर गले में बांधने से भूत प्रेत नहीं लगता है ।१३।

चित्रा नक्षत्र में गुलाब की जड लेकर पास रक्खे तो शरीर में नष्ट नहीं होता है । १४ ।

स्वाति नक्षत्र में मोगरा की जड लेकर भैंस के दूध में घिस कर पीने से काले से गोरा होता है । १५ ।

विशाखा नक्षत्र में बबूल की जड को लाकर पास में रक्खे तो नित्य ही चोरी करने पर प्रकाशित नहीं होता है ।

अनुराधा नक्षत्र में चमेली की जड को लाकर सिर पर रक्खे तो शत्रु मित्र हो जावे । १७ ।

जेष्ठा नक्षत्र में जामुन की जड़ को लाकर पास रक्खे तो राजा के द्वारा सन्मान को प्राप्त हो । १८ ।

मूल नक्षत्र में गूलर की जड लेकर पास रक्खे तो दूसरे का द्रव्य मिले । १९ ।

पूर्वाषाढा नक्षत्र में शहतूत की जड लेकर स्त्री को पिलावे तो योनि संकोच होती है । २० ।

उत्तराषाढा नक्षत्र में कलगरामां की जड लेकर हाथ में बाँधे तो पहलवान से युद्ध में जीते । २१ ।

श्रवण नक्षत्र में आंवली की जड, नागरवेल के रस में पीवे तो स्त्री नव यौवनवान हो । २२ ।

धनिष्ठा नक्षत्र में बबूल की पत्ती अंजन आँख में करे तो सोना, चांदी की परीक्षा में सफल होय, याने परख ज्यादा करे । २३ ।

शतभिषा नक्षत्र मे केले की जड़ लेकर शहद के साथ पीवे तो चाप न होय । २४ ।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में तुलसी की जड़ लेकर मस्तक पर रक्खे तो मुरदा कभी नहीं जलता है । २५ ।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में पीपल की जड लेकर पास रक्खे तो चतुर मनुष्य युद्ध में जीत कर आता है । २६ ।

रेवती नक्षत्र में बड की जड लेकर माथे पर रक्खे तो दृष्टि चौगुनी होय । याने अगस दृष्टि होती है । २७ ।

हिंगुल १८ तोला, अभ्रक ३२ तोला एकत्र कर रूद्रवती के रस में घोट कर चांदी के पत्रे पर लेप कर पुट दीजे तो सुवर्ण होता है । २८ ।

स्वर्ण माक्षिक ८ माशा, पारा ४ माशा, तांबा ४ माशा, सुहागा ४ माशा, इन सब चीजों को एक साथ गलाने से शुद्ध चांदी होती है। २६।

शुद्ध गन्धक को प्याज के रस में १०८ बार तपा कर भुजावे तो, फिर उस गन्धक को चांदी के पत्ते पर गलावे तो सोना होता है। ३०।

मेनशिल, सिंधव, गोरोचन, भृंगराज के रस में इन चीजों को घिस कर वाम हाथ पर, जिसको वश करना चाहे, उसका नाम लिखे, फिर अग्नि में तपावे तो वशी होता है ।३१।

हस्त नक्षत्र रविवार के दिन अंधाहुली को लेकर राजा के माथे पर डाले तो राजा वश होता है और दुष्ट व्यक्ति भी स्नेह करने लगता है। ३२।

अधोमुखा च जला च स्वेता च गिरि कर्णिका गोरोचन समीयुक्तं, तिलकं विश्व मोहनं । ३३।

चिता भस्मं विषं युक्तं, धतुरं चूर्ण मिश्रितं, यस्यांगे विक्षिप्ते सद्योयातीय मालयम। ३४।

मनुष्य की हड्डि का चूर्ण, जिसको पान में रखकर खिला देवे तो, मनुष्य मर जाता है। ३५।

भरणी नक्षत्र मंगलवार को चिता की लकड़ी लेकर आवे, शत्रु के दरवाजे पर गाड़ देवे तो शत्रु शीघ्र मर जाता है। ३६।

काले सांप की वसा, कांचली की बत्ती बनाकर धतूरे के तेल में भिगोकर, दीपक जलावे फिर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल उपाड कर और चिता की भस्म, पांच प्रकार का निमक इन सब चीजों को सम भाग मिला कर जिसके ऊपर डाल देवे वह मर जावे। ३७।

बीछू का मांस और कंटक का चूर्ण कर जिसके ऊपर डाल देवे वह मर जायेगा। अमावस के दिन चिता की भस्म से यन्त्र लिखकर चिता में ही डाल देवे तो शत्रु मर जाये ।३८।

उल्लु की विष्टा और विष को मिला कर जिसके अंग पर डाल देवे वह शीघ्र मर जाता है ।३९।

गधे का विष्टा और विष दोनो को जिसके ऊपर डाल देवे वह, शीघ्र मर जावे ।४०।

शत्रु की विष्टा मनुष्य की खोपड़ी में भर कर एकान्त बन में गाड देने से ज्यों ज्यों गडी विष्टा सुखेगी त्यों २ शत्रु मरेगा ॥४१॥

ककलास की वसा का तेल १ बींदु भी जिसके ऊपर डाल दिया जाय वह मर जायगा ।४२।

तुलसी के बीज का चूर्ण सहदेवी की जड के रस में रविवार के दिन घिस कर तिलक लगाने से मोहित होता है ।४३।

हरिताल, और असगंध को केला के रस में गौरोचन सहित घिस कर तिलक लगाने से मोहित होता है ।४४।

श्रृंगी, चन्दन, वच, कूट, ये चारों चीज की धूप बनावे फिर अग्नि में उस धूप को डाल कर अपने शरीर में धुआं लगावे और अपने मुख में भी धुआं लगाने से और वस्त्र में धुआं लगाने से राजा प्रजा पशु पक्षी जो देखे सर्व मोहित हो ।४५।

पान की जड का तिलक करने से मोह नहीं होता है ।४६।

मैनसिल, कपूर, कोकेला के रस में घिस कर स्नान करे तो मोह नहीं होय ।४७।

सेंदूर, बच, असगंध, पान के रस में घिस कर स्नान करे और तिलक करे तो मोह न होय ।४८।

भंगरया, चिचिड़ा, छुइमुइ, सहदेई, इन चारों चीजों का तिलक लगाने से मोह न होता है ।४९।

डमरू के फूल की वाती नैनु के साथ रात्रि को जलाय काजल उपाड कर अंजन करे तो मोह न होता है ।५०।

सफेद घुंघची का रस ब्रह्मदंडी की साथ घिस कर शरीर में लेप करने से मोह नहीं होता है ।५१।

सफेद दूब के रस में हरिताल को घिस कर तिलक लगाने से मोह नही होता है ।५२।

सफेद अकुआ की जड़ और सफेद चन्दन को घिस कर तिलक लगाने से मोहन होता है ।५३।

वेलपत्र छाया में सुखा कर, कपिला गाय के दूध में घिस कर तिलक लगाने से मोह नहीं होता है ।५४।

भांग के पते, सफेद सरसों, इन दोनों को कुट कर शरीर में लेप करने से मोह नहीं होता है ।५५।

तुलसी के पत्ते को छाया में सुखा कर चूर्ण करे, असगंध, और भांग का बीज सम भाग मिला कर कपिलाधाय के दूध में घिस कर गोली बनावे, उस गोली का तिलक लगाने से मोह नहीं होता है और उस गोलीकी शस्त्र में लेपन करने से शत्रु की सेना उस शस्त्र को देख कर ही भाग जाती है।५६।

विष्णु कांता का बीज में से तेल निकाले यन्त्र से, फिर उस तेल में विष भी मिलावे तेल, और अफीम, गधे का पेशाब, धतुरे का बीज का चूर्ण, हरताल, मेनसील, गन्धक, इन सब को लेकर घोटकर पाच छटांक का गोला बनाकर रख लेवे जब युद्ध का काम पड़े तब अपने शस्त्र पर उस गोले का लेप कर युद्ध मे जावे तो शत्रु की सेन्य उस शस्त्र को देखते ही भय-भीत होकर भाग जावे, और अपने पर दूसरों का शस्त्र चल नहीं सकता है।५७।

श्मशान की राख को १ मिट्टी के बर्तन में भर कर शत्रु का नाम लेकर नील के रंग में रंगे हुये डोरे से उस बर्तन को बांध कर गाड देवे तो शत्रु की सेन्य का स्तंभन हो जाता है।५८।

ऊंट की हड्डी ४ अंगुल प्रमाण कील जहाँ गाडे वहाँ गाय भैंस नहीं जाती है, उनका स्तंभन हो जाता है।५९।

रजस्वला स्त्री का कपड़ा और गौरोचन, दोनों चीज को लेकर शत्रु का नाम लेकर गड्ढे में डालने से शत्रु का स्तंभन हो जाता है।६०।

दो इंट श्मशान की आग सहित लेकर जंगल में गाड देवे तो मेघ का स्तंभन होता है।

मूलं गृन्हाति मधुकं, पिष्टानिशि समाचरेत्। निद्रास्तंभन मेतद्धि, मूल देवेन भाषितं।

भरवा क्षीर काष्टाना कील पंचागुलिक्षिपत्नौकास्तंभन मेतन्मूलदेव न भाषितं।

रविवार के दिन सती होने वाली स्त्री की चिता में इंट धर आवे फिर तीसरे रवि-वार जाकर उस इंट को ले जिसके घर में डाल दें अथवा खोद दें तो उसके घर में पत्थर बरसने लगते हैं।

उल्लू का पित्तो और कालि जो, मशान की भस्म, गाय की लूणी, इन सब चीजों को मिला कर गोली बनावे उस गोली को सोने या चांदी के तावीज में भर कर पास रखे तो अदृश्य होता है। स्वयं सबको देखता है और स्वयं को कोई नहीं देख पाता।

एक वर्ण का काला कुत्ता को पकड़ कर उपवास करावे, स्वयं भी उपवास करे, दूसरे दिन दूध, और काला तिल, उस कुत्ते को खिलावे, जब कुत्ता टट्टी करेगा, उस टट्टी मे

से काले तिल को निकाल कर तिल में से तेल निकाल कर यन्त्र में नहीं गया, उपास की बत्ती बना कर उस बत्ती को डाल कर दीपक जलावे और काजल पाडकर आंख में अंजन करे तो मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

धौली (सफेद) चिणोठी, (गुंजा) सफेद रीगणीं, (सफेद भट कटैआ) की जड लेकर चूर्ण करे फिर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल उपाड कर नैत्र में अंजन करने से अदृश्य होता है।

नागार्जुनप्रणित अंतर्ध्यान विधिः

सफेद सुरमा १, सेवार कंटक १, सोना मुखी १, जेठी मध १, ये चारों वस्तु बराबर लेकर कन्या के प्रथम मासिक धर्म का रक्त में गोली बनावे, उस गोली को सोना, चांदी के तावीज में डाल कर उस तावीज को मुंह में रखे तो मनुष्य अदृष्य होता है।

शुक्ल एक रंग की बिल्ली को तीन दिन भूखी रख कर चोथे दिन कपिला गाय के घी को खिलाबे, तब बिल्ली तत्काल उल्टी करेगी उस घी को लेकर, कपास के फल में से रुइ निकाल कर उसकी बती बनावे दीपक जलावे मनष्य की खोपडी पर काजल उपाडकर नेत्र में अंजन करे तो अदृश्य होता है।

शिवालयेतु कन्यार्क, शिलायांशिलया सह:, ललाटे तिलकं दत्वा, दृश्यो भवति तत्क्षणं।

लोद्र विभितिक, आमलक, वा रुइ के फूल, इन सबको चतुर्थांस जल घोटे और आंख में अंजन करे तो आंख में फूला का नाश होता है। रात्रिघतां का नाश होता है।

पिंडी, तगर की जड़, गोरोचन के साथ ताम्बे के बर्तन में रगड़ कर आंख में आंजने से अक्षिपुष्पं नाशयति) याने आंख का फुला नष्ट हो जाता है।

लाल चन्दन, मिरच, सम भाग लेकर पानी में पीस कर लेप करने से विस्फोटक का नाश होता है।

गडुची, हरिद्रा, दूर्वा, धूर्य से, समभाग, गुटिका क्रियते से सर्व व्रणोपशमं करोति प्रलेपन।

रवि के दिन सफेद कनेर की जड़ को लेकर कुसुम्भ डोरे से बांध कर वाम हाथ में बांधने से (मर्कटिका) का नाश होता है।

अश्विनी नक्षत्र में घोडे की पांव की हड्डी ४ अंगुल प्रमाण शत्रु के घर में फेंकने से शत्रु के कुल का उच्चाटन हो जाता है।

उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रे स्वान (कुत्ते) की पांव की हड्डी अंगुल पांच जिसके घर में डाल दिया जाय वह चक्षुहीन हो जाता है।

बालउनागवोलिन पुनः पत्राणि ग्राह्याणि जलेन घृष्टवापीयते भ्रूणो न भवति।

हींग, सिधव, का काढा बना कर पीने से (गर्भो न भवति)।

श्वेतगिरि कणिका की जड को योनी में डालने से गर्भ का नाश होता है।

मधु, कर्पूर, पदैः पूगीफलं पूरयित्वा सुरत समयेभक्षयेत (पुत्रो भवति)

पार्श्वपिप्पल फलानि एक वर्ण गो दुग्धेन प्रस्तावे स्त्रियः पानेदात व्यानि (पुत्रोत्पत्ति कृत)

काक जंगा की जड को एक वर्ण की गाय के दूध में पीवे, निश्चित ही गर्भ रहे।

भृगराज रस, पली १ (एक छंटाक) कांच कर्पूर गठियाणउ १ (कपूर) गांठियउ १ ऋतु स्नाने दिन त्रयंस्त्रीपाय्यतेत्तद्दिनत्रये श्वेत वर्ण गो दुग्धक्षीरेयी भोजन कार्य अन्यकेकिमपिन भोक्तव्यं पुत्रोत्पत्तिर्भवति दृष्टप्रत्ययः।

मातुलिंग (बिजोरा) के बीज की दूध के साथ २ खीर बनाकर घी के साथ पीवे तो स्त्री को निश्चित ही गर्भ रहे किन्तु ऋतु समये तीन दिन खाना चाहिये।

गेरू, (ह्री-डमीस) विडंग, पीपली, समभाग लेकर पीसे फिर संभोग के समय पान करने से स्त्री गर्भवान होती है।

रविवारे अष्टमी निशीथ समसे वाटिकायां जाती पत्र सरडक मेकं गृहीत्वा एक वर्ण गोक्षीरेण सहपीयतेरितु समये गर्भं धारयति।

वासकं, त्रिफला, शर्करा, मुलेठी, को समभाग लेकर पीसकर रितु समय में यदि स्त्री पीये तो गर्भवान हो।

श्वेत रींगणी मूलं पुष्य नक्षत्र में लेकर एक वर्ण की गाय के दुध में पीवे तो वन्ध्या भी पुत्रवान होती है।

मयुरशिखा की जड को दिन ३ दूध के साथ पीने से स्त्री पुत्रवान होती है। लक्ष्मणा भाग ३ उभयलिंगी भाग ४ विरहाली भाग ६ सब एकत्र करके गाय के दुध में पीसकर ऋतु समय में स्त्री को पीलाने से पुत्र होता है।

श्वेत पुनर्नवा मूल को दूध के साथ पीस कर पिलावे से स्त्री को गर्भ रहता है ।

(पद्विद्वः प्राणिविशेषः) तथा हल्दी दोनों का चूर्ण कर बकरे के मूत्र में भावना देकर मनुष्य को खिलाने से नपुंसक हो जाता है ।

तिल चूर्ण गोक्षुर चूर्णपतौ समभाग करके बकरे के मूत्र में काथ करे जब काथ ठंडा हो जाय तब माक्षिक के साथ खिलाने से नपुंसकता का नाश हो जाता है ।

उदस्ट्र हवड मध्ये मानुषास्थि प्रक्षिप्य मिथुनस्य शिरोदेशे स्थापयेत् रेतः स्तंभोभवति ।

यस्यलिंगे पाषाण निरोधोभवति (जिसके मूत्राशय में पथरी हो) तस्य (कालानमक) कृष्णलवणेन सहसुरापानं दीयत्ते साम्यंत्र जत्ति ।

अपकतिल नाल भस्म गृहीत्वा दुग्धेन माक्षिकेन सहपानं दीःते स एत्र पाखाषान लिंग पीडां नाशयति ।

संखाहुली की जड और गाय का शृंग (सींग) को बांधने से स्तन रोग का नाश होता है । काक जंगा की जड और उपलउ (पाषाण) दोनों को जल के साथ पीस कर नस्य दे अथवा पिलावे तो सर्प का जहर उतर जाता है ।

कविट्ठ की जड, नमक, और तेल, इनको पीलाने से बिच्छु का जहर उतर जाता है । तिल की जड़, अनार की छाल, समभाग लेकर ठंडे जल से पीस कर गुटीका बनावे पीलावे बीछु के जहर का नाश करता है ।

वंध्याकर्कोटिका सर्प दृष्टस्य जलेन घर्षयित्वामध्येपानं तस्यं च देयं भद्रो भवति ।

गुंगची की जड को (पायं तरे) बांधे तो व्यवहार में अपराजित होता है याने उसको कोइ जीत नहीं सकता है ।

कुंदमूलं पुष्पेणोत्पाद्य प्रसार के धर्त्तव्य प्रभूतत्रिया भवंति ।

कृष्णा निर्गुंडी का मूलं मागसिर मघि पुष्यार्के उत्पाद्य तस्मिन्नवदिने मूले श्वेत सर्प पाश्व ग्रंथौ बध्यंतेहदेव्यवहारो घनो भवति दृष्ट प्रत्यय ।

काक जंगाहाथ में बांधने से सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है ।

पिटारी, (कांकधी) की जड को संध्याकाल में लेकर कमर में बांधने से हर्ष रोग (मस्सा) का नाश होता है लेकिन जड को चौदश के दिन दीप धूप विधान से लेवे ।

उपरोक्त औषधि की लकड़ी अठारह अंगुल प्रमाण लेकर (दंतपवनेन) तो सर्वप्रकार के ज्वर का नाश करता है ।

विशाखा नक्षत्र मे पिंडी तगर की जड को चांवल के पानी के साथ पीवे से स्त्रियों का रक्त स्त्राव, बन्ध हो जाता है।

इमली के बीज २ बहेडा के बीज २ हरडे का बीज २ इन बीजों की गुटिका बनाकर पानी के साथ आख में अंजन करे तो (तिमिरंगच्छति) ज्योति ज्यादा बढ़ती है।

काक, पारावत, मयुर, कपोतनां, विष्टागृह्यते, तत्पश्चात, खर, (गधा) रूधिर सहिता निगडानि लपयेत् तत्क्षणत्रुटयंति।

सियाल के आंख का चूर्ण अपने आंख (नेत्र) में अंजन करने से रात्रि में बडे बडे भूत नजर आते हैं उन भूतों से नहीं डर कर जो उनसे इच्छा करे वही चीज वो भूत लोग लाकर देते हैं।

मनुष्य करोडि मध्ये अर्कतूल सत्कदीवरि महिषी सत्क नव नीतं दीपे प्रज्वाल्य मीष-पाततेहं जेक्रियतेऽदृश्यो भवति।

बिल्ली की जरा को (जो बच्चा पेदा होने के समय निकलती है) त्रिलोह के ताविज में डाल कर पास रखे तो अदृश्य होता है।

मुखे निलोत्पलंनाल, केशरंश्वेत पद्मिनिपुष्पं मधु शर्कराधृतेन नाभिलेपोदीयतेवीर्य-स्तम्भ छीत प्रोइ गृहीत्वा छो हरि दुग्धेन भावयित्वा पादौलेपयेत् वीर्य स्तम्भः।

श्वेतसर पंखा की जड को नाभि पर लेप करने से वीर्य का स्तंभ होता है।

मयणु मयण हलु मणसिल एकीकृत्य लिगं लेपयेत वीर्यं स्तंभो भवति।

श्वेतसरपंखा की जड को कमर में बांधने से और दक्षिण जंघाप्रदेश में स्थापित करने से वीर्य का स्तंभन होता है।

श्वेतपुनर्नवा की जड को दूध के साथ घिस कर पिलाने से स्त्रियों को गर्भ रहताहै। सांवलि (साल्मली) (सेमर) काष्टपादुकाः त्रिवंते वज्रापरिवृते मुत्रवाग्निमध्ये प्रक्षिप्य लेपोदिय ते अलग पादुकाभिः चंक्रम्यते।

सफेद कनेर की जड को रविवार के दिन ल कर कुसुंभ रंग के डोरे में वामहस्त में बांधने से (मर्कटिका) रोग नष्ट होता है

कोलिका गृहद्वय मुत्पाद्य सूक्ष्म व स्त्रेण वेष्टियित्वा तैलेन स्निग्धं कृत्वा कोरक शरावे (कोरा मिट्टी का घडापर) कज्जलं पात्यते तेनाक्षि अंजयेत् एकांतर, द्वयंतर चातुर्थिक ज्वराना-शयति। गोवृतेन दीपकं दातव्यं तस्य दीपकस्य शिखायां सूचीकाप्रोइ (सुइपोरोना) अरीबादह

नीयं, गोसत्क माथुअरीवा घर्षणीय जीरकं मगध, पिपल, नमक सेंधा, मध्ये घषणीयं ताम्र भाजने घर्षण कर्तव्यं अक्षिरोगो नश्यति ।

सरसों, हिंगुल, नीम के पत्ते, वच, सांप की कांचली, की धूप बनाकर खेने से शाकिनी का उच्चाटन होता है और सर्व प्रकार की ऊपर की बाधाएँ दूर होती हैं ।

वणिमूलं, हिंगुल, सुंठि, इन सब चीजों को बराबर मात्रा में लेकर पानी के साथ पीसकर सुंघाने से शाकिन्यो नश्यंति ।

बहेडाबीज. सैंधव, शंखनाभि सममात्रा चूर्णेन अक्षिभरणं चक्षुफुल्लोपशमः ।

वंदा कल्प

नंदिषेणाचार्य कृत

वंदाकल्पं प्रवक्ष्यामि नन्दिषेण मुनि भाषितं, यस्यविज्ञान मात्रेण, सर्वसिद्धिः प्रजायते । अश्विनी नक्षत्रे पलास (डाक) वंदा संगृह्यहस्ते बध्वा सर्पभयंनिवारयति । भरणी नक्षत्रे आंमिली (इमली) वा आंवल, वंदा संगृह्य हस्ते बध्वा संग्रामे राजकुले अपराजितो भवति सर्वजन प्रियोभवति और इसी नक्षत्र को, कुश, वंदा संगृह्यद्रव्य मध्येधान्य राशौवाध्रियते अक्षयो भवति ।

कृतिकानक्षत्रे वंध्या कर्कोटी मूलं उत्तराभिमुखोभूय उत्पाद्यते हस्तेबध्यते सर्व प्रकारस्य ज्वरंयांति । और इसि नक्षत्रको तुंबरि (उंबरि) वंदा संगृह्य दुग्धेन सहपिबेत् महापुष्टिकारकः भवति ।

रोहनी नक्षत्रे बिल्ववंदागृह्यहस्ते बध्यते सर्वदोषग्रहान् निवारयति । मृगशिरनक्षत्रे शंखपुष्पिमूलं दक्षिणाभिमुखीभूत्वा उत्पाद्य कर्णे दत्वाफूंकिते वृश्चिकविषं नाशयति ।

आद्रानक्षत्रे जातीमूलं (　　　) वायव्याभि मुखीभूय उत्पाद्य हस्ते बध्वा सर्वजन प्रिय भवति । इसी नक्षत्र में जाति मुनं वाय व्याभि मुखं भूप उत्पादय लिहसोडा वंदा संगृह्य द्रव्यमध्ये धान्यराशोवा स्थापयेत् अक्षयो भवति ।

पुनर्वसु नक्षत्रे मंदार (अकौआ) वंदा संगृह्य हस्तेबंध्वा सर्व ज्वरं नाशयति । इसी नक्षत्र में कंटिका मूलंनैऋत्याभिमुखी भूय उत्पाद्यते बीदंकृत्वा हस्ते बध्वा सर्व जनप्रियो भवति । इसी नक्षत्र में वट वंदा बीजं कृत्वाया स्त्रीअपुत्रिणी भवति स तस्याः पुत्रो भवति । पुष्य

नक्षत्रे श्वेतार्कमूल संगृह्य राजा सन्मुखंराई सहित्त सहस्त्र जाप कृत्वाऽग्नि मध्येहोमं कारयेत् सप्तरात्रे ण उच्चाटयति ।

इसी नक्षत्र में कुशवंदा संगृह्य कटिबध्वा षोडश कन्या रमते ।

अश्लेषा नक्षत्रे पुनर्न वा मूलं ईशानदिशाभिमुखी भूय उत्पाद्यते बीज क्रियते सर्व कर्माणि करोतिविषं नाशयति ।

मघानक्षत्रे मदारक मूलं पूर्वाभिमुखी भूयोत्पाद्यते सर्वकर्माणि करोति । यदाविनाय ऋ करिमस्तके प्रक्षिप्यते पूज्यते, तदा मनश्चिंतितंकार्य भवति ।

मघानक्षत्रे मधुवंदा संगृह्य क्षेत्र मध्ये तथा चतुःकौणे स्थापयेत् मूषकायांति ।

पूर्वाफाल्गुनिनक्षत्रे दाडिम (अनार) वंदाहस्ते बध्वाज्वरं नाशयति ।

उत्तराफाल्गुनि नक्षत्रं उंबरि मूलं (तुंबरि) उत्तराभिमुखो भूयत्पाद्यते हस्तेबध्वा सर्वकार्याणि करोति ।

चित्रानक्षत्रे वदरी (बैर) वंदाहस्तेवद्धा संग्रामे राजकुले अपराजितो भवति ।

स्वातिन नक्षत्रे धातकी वंदा हस्ते बध्वा यास्त्री रमते सा वश्या भवति ।

विशाखा नक्षत्रे वोरि वंदा संग्रह्यवणिजे, द्यूते, (जुएमें) अपराजितो भवति ।

अनुराधा नक्षत्रे आंविली (इमली) वंदा संगृह्य यंस्पृशेत् सवश्यो भवति ।

ज्येष्टानक्षत्रे मधूक, निंब, कपिथ, वंदा संगृह्य यः स्पर्शते सवश्यो भवति ।

मूलन क्षत्रे खदीर वंदाय हस्य गृहे ध्रियते सवश्यो भवति ।

पूर्वाषाढा नक्षत्रे अमिलोडवंदा अजाक्षिरेण सह यःपिबतित्तस्य वातरोगंनाश यति ।

उत्तराषाढा नक्षत्रे मंदारक वंदाहस्ते बध्यते सर्व जनप्रियो भवति ।

श्रवणनक्षत्रे कमोलिवंदाहस्ते बध्वा सर्वेषां विषं नाशयति ।

धनिष्ठा नक्षत्रे बबूल वंदा कटि बध्वा हरिषां (बवासिर) नाशयति ।

शतभिखा नक्षत्रे कंकोलिका वंदा अजाक्षीरेण सहपीवेत् कुष्टंयाति । इसी नक्षत्र में शंखपुष्पी मूलं उत्तराभिमुखी भूयोत्पाद्यते पीष्यते स्त्री रितुकाले दिन ३ क्षीरेण सहपीवति सा स्त्री पुरूष संग में गर्भवति भवति ।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे चंपकवंदा (चंपा) संगृह्य तिलकं कृत्वा यं इच्छति तंभवति । उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे पलासवंदा (ढाक) संगृह्य क्षीरेण सहपीवति वंध्या पुत्रं प्रसवति ।

रेवति नक्षत्रे अश्वत्थ वंदकं संगृह्य हस्ते बध्वा लोकेश्वर पुत्रं जनयंति ।

॥ इति ॥

अथ कलकोशं प्रवक्ष्यामि

धन्वंतरी कृत

श्वेत् अपराजिता, मूलं नाश्यदेयं सर्वग्रहं नाशयति ।

वंध्या ककोडी मूलं तंदुलोद केनसहा पीषयेत् सर्वविषं नाशयति ।

श्वेतगिरी कर्णिकामूलं नाश्यदेयं शिरोरोगं नाशयति ।

मयुरशिखा मूलं कर्णेविध्वा चक्षुरोगं नाशयति ।

अपामार्ग मूलं भृगाराज संयुक्तं हस्तेवध्वा सर्व जनप्रियो भवति ।

शरपंखा मूलं हस्ते वध्वा सर्वज्वरं नाशयति ।

कासमद्दकामूलं तंदुलोद के नसह पीवेत् नीद्रा नाशयति ।

अपामार्गं मूलं तंदुलोदकेन सहपिवेत काम्बलं नाशयति ।

तुलसीमूलं कर्णवध्वा चक्षुरोगं नाशयति ।

मूंडिमूलं कर्णवध्वा शिरलेपोदीयते शिरवायो नाशयति ।

वालामूलं हस्ते वध्वारात्रि ज्वरं नाशयति ।

सिवलमूलं कर्णवध्वा एकोत्तशत्त ज्वरं नाशयति ।

बहेडामूलं कर्णवध्वा सर्वं ज्वरं नाशयति।

श्वेतार्कमूलं कर्णवध्वा सर्वविषं नाशयति ।

संखपुष्पिका मूलं पुष्य नक्षत्रें उत्पाट्य हस्तेवध्वा सर्वज्वरं नाशयति ।

श्वेतगुंजा मूलं मुखे प्रक्षेप्यः कालसर्पोवारयति ।

गुडीचीमूलं हस्तेवध्वा सर्व सहस्त्रांक्षी भवति ।

उंट कटालां मूलं मूखेप्रक्षेप्यं सर्वलोकानां स्तंभयति ।

च मूलं गुर्धिणी संपेठ उत्परे धारयति सुखं शीघ्रं प्रसवोभवति ।

दूधिका मुलं कर्णवध्वा वेलाज्वरं नाशयति ।

गोखुरीका मूलंकंठे वध्वा उष्ण वातं नाशयति ।

सुहंजण मूलं कर्णेबध्वा वेलाज्वरं नाशयति ।

कटशेलुवा मूलं बध्वा ज्वरं नाशयति ।

दम्पणा मूलं कर्णे बध्वा अग्नि उद्दीपयति ।

श्वेरऐरंड मूलं कटिबध्वा श्रुकं नाशयति ।

जोडासीयनी चूर्ण कृत्वा मुखेपीणंदीयतै मरी नाशयति ।

सतावरी मूलं हस्ते बध्वा महाबलं भवति ।

उंट कटाला मूलं तंदुलोदकेन लेपोददाति गंडमाला नख प्रमाणे नाशयति ।

काक जंगामूलं करे बध्वा क्षयं नाशयति ।

कंठ सेलुआ मूलं करे बध्वापीत ज्वरं नाशयति ।

श्वेत कटाइ मूलं पुष्प नक्षत्रे उत्पाटयेत् एक वर्ण गोक्षिरेण सहापिवेत वंध्यायापुत्रो भवति ।

पलास मूलं खारं हरिताल चूर्णं, प्रलेयेत् रोमनाशयति ।

जाती मूलं, तंदुलोदकेन, सहपिवेत्, वातज्वरं नाशयति ।

आत्मश्रुक्रेण स्त्रिया वामपादं लिप्यतेस शीघ्रं वशी भवति ।

॥ ० ॥

अथलजालु कल्प

शनिवार सध्या को जहां छुइमुइ (लजालु) का पेड हो वहां जाकर १ मुट्ठी चांवल, सुपारी रक्खे, फीर उस पेड़ को मोली धागा बांधे, अपनी छाया पेड़ पर नहीं पड़ने दे, सवेरे तुमको अपने घर ले जायेंगे, ऐसा कहे। फिर प्रभात ही पिछली रात को जाकर छायारख कर उस पेड़ को उखाड़ लावे, उखाडते समय इस मंत्र को २१ बार पढ़े ॐ भ्रूभ्रूव मम कार्यं प्रत्यक्षी भवतु स्वाहा। फिर जिसको वश करना हो उसके घर में रखवादे तो वह वश में हो जाता है। लजालु पंचांग १ छटांक, घी २ छटांक, गिरकं रणी छटांक ३ संखा होली छटांक ३ सब चीज एकत्र कर गोली बनावे, फिर जिसको वश करना हो उसके खाने पीने की चीजों में

मिलाकर खिला देवे तो वश होता है। वाद, विवाद, झगड़े आदिक में पास रख कर जावे तो सब लोग उसकी बात मानते हैं। गोरोचन के साथ घिस कर तिलक करे तो राजा प्रजा सर्व-लोक वश होते हैं।

॥ ० ॥

अथ श्वेतगुंजाकल्प

शुक्ल पक्ष में श्वेतगुंजा को दशमी के दिन पूरी जड़ सहित ले, पंचांग ले, फिर उसकी जड़ को पान के साथ जिसको खाने देवे वह वश होय स्त्री वश हो। पानके साथ में घिस कर गोरोचन से टीका करे, फिर जिसका नाम ले, वह वश में होता है अथवा गुंजा चंदन मणसिल से तिलक करे जिसका नाम लेवे वह वश में होता है। गुंजा प्रियंगु, सरसो इन चीजों को जिसके माथे पर डाले वह वश में होता है, गुंजा की जड़ को पीसकर लगावे अथवा पीवे तो वातरोग का नाश होता है। गुंजा की जड़ को पानी के पीने से मूत्र कुछ नहीं होता है। गुंजा की जड़ को घिस कर पानी के साथ पिलाने से वा लगाने से सांप, बिच्छुवा अन्य विषेले जन्तुओं के द्वारा काटने से विष फेल जाता है उस विष को दूर करती है। गुंजा की जड़ को गोरोचन के साथ घिस कर तिलक करने से जो २ देखता है वह वश में होता है। गुंजा की जड़ को स्त्री के कमर में बांधने से सुख से प्रसव होता है। गुंजा की जड़ को घटके मुखेक्षिपत जयंभवति। पास रखकर राजा के पास जावे तो राज्यसभा वश होती है।

॥ ० ॥

सरपूंखा कल्प

पुष्प नक्षत्र में सूर्य उदय के समय नग्न होकर सरपंखा को ले, फिर उसको छाया में में सुखावे, जड़सहित उखाड़े,(मासाश्वेरीत जड़ लिजइ) अथ पंचांग लीजई। छाया में सुकावे। फिर उसका चूर्ण करके दुध के साथ अपने शरीर में लेप करे तो सर्व शत्रुओं का स्तंभ न होता है। सरपंखा के तिल का गोरोचन के साथ तिलक करे तो राजप्रजा सर्व वश होते हैं। दुकान पर बेठे तो व्यापार अधिक चले। सरपंखा के पंचांग की गोली को गाय के दुध के साथ २१ दिन तक पिलावे तो गर्भ धारण करे।

शुभ मुहूर्त में सोने या चांदी के ताबिज में रखकर बांधे तो शस्त्रादिक की धार बंद हो। श्वेत सरपंखा को लेने के समय २ आदमी हाथ में नंगी तलवार लेकर खड़े रहे एक

आदमी दीपक लेकर खड़ा रहे १ आदमी तीर छोड़े, जब तक तीर जमीन पर न गिरने आवे तब तक सरपंखा को उठाले और घर लेकर आजावे छाया में सुका देवे।

॥ ० ॥

पमाड कल्प

अश्वनी नक्षत्र में उत्तर दिशिमुख करके पवित्र हो सूर्योदय पहले पमाडीये की जड़ लेना, नग्न होकर, छाया पड़ने नहीं देवे, घर लाकर, कपूर, कस्तुरी, केशर, के साथ अपने पास रखना राजा प्रजा सर्व वश होते हैं सर्व कार्यों की सिद्धी होती है। जिसके हाथ में बांधे, उसका बेलाज्वर, तीजारो ज्वर आदिक नष्ट होते हैं और मक्खन के साथ जिसको खाने को देवे वह वश में होता है।

॥ ० ॥

तार ताम्र सुवर्णं च इंदु अर्क षोडशभी।
पुष्यार्कं घटिता मुद्रा दृढ दारिद्र नाशिनी।

३ रती सोना, १२ रती, तांबा १६ रती चांदी, सब मिला ले। २६ रती हुआ, इनकी अंगुठी बनवावे रविवार पुष्य नक्षत्र के योग में, उसी रोज बनवाना, उसी रोज पार्श्व प्रभु का पंचा मृत अभिषेक करके उसमें वह अंगुठी धोकर, याने गंधोदक से धोकर धूप खेवे, फिर अंगुठे के पास वाली तर्जनी अंगुली में पहने तो तीव्र दारिद्र का नाश होता है, लक्ष्मी का लाभ होता है। अंगुठी जमणे हाथ में पहनना चाहिये। भोजन करते समय अंगुठी को नीकाल देना, फिर पहन लेना। ध्यान रहे उसी रोज अंगुठी बने उसी रोज अंगुली में पहन लेना चाहिये। भक्तामर जो के प्रथम काव्य के मंत्र का १०८ बार जप करे।

॥ ० ॥

बिल्ली के ऊपर की दाढ और कुत्ते के नीचे की दाढ को, भक्तामर के काव्य का नंबर वाला मंत्र से मंत्रीक करके शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु का घर टुट जाता है महान उत्पात होता है।

सफेद सरसों सफेद चंदन, उपलेट ( ) बच तथा कपुर, इन सबको दूसरा रविपुष्य के दिन इकट्ठा करके गोली बनाकर रक्खे, जब जरूरत पड़े तब उस गोली को घीस-कर तीलक करे तो दृष्टि दोष का नाश होता है। पशुओं के आंख में अंजन करने से दृष्टिदोष दूर होता है।

अथ रक्त गुंजा कल्प

पुष्प होय आदित्य को, तब लीजिये यह मूल ।
सुकर वारी रोहड़ी, ग्रहण होय अनुकूल ॥ १ ॥
कृष्ण पक्ष की अष्टमी, हस्त नक्षत्र जो होय ।
चौदह स्वाति शत भिषा, पूनों को लेय सोय ॥ २ ॥
अर्द्ध निशा कारज सरे, मन की संज्ञा खोय ।
धूप दीप कर लीजिये, धरे धूल लो सोय ॥ ३ ॥
जो काहू नर नारी कूँ विष कोई को होय ।
विष उतरे सब तुरंत ही, जड़ी पिलावे धोय ॥ ४ ॥
जो तिलक लगावे भाल पर, सभा मध्य नर जाय ।
मान मिले स्तुति करे, सब ही पूजे पाय ॥ ५ ॥
हांजी हांजी सब करे, जो वह कहे सो सांच ।
एक जड़ी के जुगत से, सब नचावें नाव ॥ ६ ॥
ताके मूल मढ़ाये के, बांधे कमर के सोय ।
नव मासे व नारी के, निश्चय बेटा होय ॥ ७ ॥
ऋतुवती के रक्त सो, अंजन आंजे कोय ।
देखत भाजे सैन सब, महा भयानक हो ॥ ८ ॥
काजल हूं घिस आजिये, मोहे सब संसार ।
गाली दे दे ताडिये, तोय लगा रहे लाट ॥ ९ ॥
मधु सुं अंजन आंजिये, देखे वीर बैठाल ।
जो मंगावे वस्तु कू, ले आवे सो हाल ॥ १० ॥
जो घिस कर लेपन करे, दूध संग सब अंग ।
भूत प्रेत सब यक्ष गण, लगे फिरत सब संग ॥ ११ ॥

घिसके रुई लगाइये, बती घरे बनाये ।
फिर भिगोवे तेल में, दीपक देय जलाय ।। १२ ।।
करे अच मों सब नमें, घर श्मसान दरसाय ।
सात महल के बीच सूं लावे पलंग उठाये ।। १३ ।।
जो घृत में घिस के करे, लेप मूत्र नर ताय ।
भोग शक्ति बाढ़े अमित, मन अति मोद उठाय ।। १४ ।।
अजा मूत्र में रगड़कर, बेंदा दे जो हाथ ।
करे दूर की बात वो, रहे यक्षणि साथ ।। १५ ।।
गोरोचन के साथ घिस, लिखिये जाको नाम ।
मृत्यु होय बाकी तुरंत, नहीं देर को काम ।। १६ ।।
लिंग पत्र के अर्क सु, घिसिये केवल नाम ।
भूत प्रेत व डाकिनी, देखस नसे तमाम ।। १७ ।।
स्याउ संग वा रगड़ के, तलुवे तले लगाये ।
आँख मीच के पलक में, सहस, कोस उड़ जाय ।। १८ ।।
जो घिस आंजे पीस के, बंदी छोड़ कहाय ।
बन्दी पड़े छुटे सभी, बिना किये उपाय ।। १९ ।।
जो गुलाब संग याहि घिस, नाड़ी लेप कराय ।
घड़ी चाट कूं जी पड़े, मुरदा सहज सुभाय ।। २० ।।
फेर अंकोल के तेल में, घिस के आंजे कोय ।
धन दीखे पाताल को, दिव्य दृष्टि जो होय ।। २१ ।।
जो बाधिन के दुध में, घिस चौपड़े सब अंग ।
सर्व शस्त्र लागे नहीं, वद कर जीते जग ।। २२ ।।
घिस कर तिल के तेल में, मर्दन करे शरीर ।
दीखे सब संसार कू, महावीर रणधीर ।। २३ ।।

जो अलसी के तेल में, घिसिये हतश मिलाय ।
कोडि के लेपन करे, कंचन तन हो जाय ॥ २४ ॥
जो कोई संसार में, अंधा आवे जे कोय ।
सात दिवस तक आंजिये, दृष्टि चौगुनी होय ॥ २५ ॥
श्याम नगद सग रगड़ के, बीसो नख लिपटाय ।
जो नर होय कुमारजी, देखत वश हो जाय ॥ २६ ॥
कस्तूरी सू आंजिये, प्रात समय लो लाय ।
मौत जो लिखिये सवन की, काल पुरुष दरशाय ॥ २७ ॥
गंगाजल सू आंजिये, दोनों नेत्र जु मांही ।
वरसा वरसे धूल की, या में संशय नाही ॥ २८ ॥
जो आंजे निज रक्त सू भर के [illegible] ।
देखे तीन लौक कूं, अपनी आँखन सोय ॥ २९ ॥
जो आंजे निजरक्त, खुले रागनी राग ।
जो घिस पावे दूध सू, होय सिद्ध सू भाय ॥ ३० ॥
रक्त गुंजा यह कल्प हैं, सूक्ष्म कहियो बनाय ।
जो सीधे सो सिद्ध हो, या मे संशय नाय ॥ ३१ ॥

नोट :—इस रक्त गुंजा कल्प के दोहे का अर्थ इतना सरल है कि कम पढ़ा लिखा हुआ व्यक्ति भी अच्छी तरह जान लेता है । इसलिए यहां पर इसका हिन्दी अनुवाद करना उचित नहीं है ।

॥ इति ॥

मनुष्य की खोपड़ी पर, रतांजन, भीमसेन कपूर, तथा रविपुष्य के रोज जिस स्त्री के पहली बार प्रसुति में लड़का पैदा हुआ हो उस स्त्री के दूध में रवि पुष्य के दिन गोली बनावे, काम पड़े तब तीन दिन आंख में अंजन करने से, आँख का सर्व रोग नाश को प्राप्त होते हैं ।

शरद पूर्णिमा को ब्राह्मी का रस, वच, और कपिला गाय का घी इन तीनों चीजों को बराबर २ लेकर, कांसे की थाली में इन चीजों को खूब गाढ़ा २ लगावे, फिर उसमें भक्ता-मर का ६ नं० का यन्त्र लिखे, उपर अष्टगन्ध से ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं वद् वद् वाग्वादिनी लिखे, फिर चन्द्रमा के प्रकाश में रात्रि भर उस थाली को एक ऊंचे पाटे पर विराजमान कर रखे, सवेरे एक २ अक्षर को खावे, तो सरस्वती वश में होती है। महान् बुद्धिमान होता है।

ब्रह्म दंडी को शनिवार के दिन श्याम को अक्षत, सुपारी, को रखकर कुंकुम के छींटे लगाकर नोत दे, फिर रविवार की शाम को नग्न होकर धूप खेवे, फिर ब्रह्मदन्डी का पंचाग ले, फिर कपड़े पहनकर घर ले आवे, उस ब्रह्म दन्डी को कैसा भी घाव हो, व्रण हो, किसी भी प्रकार का गडगुमड हो, उसके उपर लेप करने से शीघ्र ही आराम हो जाता है।

रवि पुष्य के दिन जिस स्त्री को पुत्र पैदा हुआ हो, उस स्त्री की जेर, लेकर छाया में सुखा देवे। एकान्त में फिर उस जेर को रूई के अन्दर लपेटकर बत्ती बनावे। दीपक में रख कर जलावे, तो घर में मनुष्य ही मनुष्य ही दिखते हैं। चोर चोरी नहीं कर सकते हैं।

रवि पुष्य को (लजालु) छुइमुइ का पंचांग को ग्रहण करके छाया में सुखाले, फिर जो मनुष्य कई दिनों से खो गया है, उस मनुष्य के कपड़े में लजालु को बाँध कर, त्रिकाल उस वस्त्र में कोडा लगावे तो खोया हुआ मनुष्य शीघ्र ही आता है।

१२ भाग तांबा, १६ भाग चांदी, १० भाग सोना, इन तीनों का प्रथक २ तार खिचवा कर, रविपुष्य या गुरु पुष्यामृत योग रहते २ अंगुठी बनवाना और पंचामृत से जिनेन्द्र प्रभु का अभिषेक करके, उस अभिषेक में उस अंगुठी को धोकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में पहनना चाहिये, जिससे सर्व प्रकार का तिव्र दारिद्र नाश होता है। किन्तु रवि या गुरू पुष्यामृत योग में ही अंगुठी बनवाना चाहिये और उसी ही योग के रहते २ ही पहन लेना चाहिये। तब ही कार्यकारी हो सकती है। **आचार्य श्री महावीर कीर्ति** जी इस द्रारिद्र नाशिनी अंगुठी के लिए सबको कहा करते थे।

लोंग, केशर, चन्दन, नाग केशर, सफेद सरसों, इलायची, मनशिल, कूठ, तगर, सफेद कमल, गोरोचन, लालचन्दन, तुलसी, पिक्कार, पद्मास्वा, कुटज, को पुष्य नक्षत्र में बराबर लाकर, सबको धतूरे के रस में कुमारी कन्या से पिसवाकर, उसका चन्द्रोदय होने पर तिलक करने पर संसार मोहित होता है।

मयूर शिखा, सफेद गुञ्जा, गोरंगा (गोभी) आक का पत्ता, कीटक का मल, ओर

अपने पांचों मलों का चूर्ण। इन सब चीजों को जिस स्त्री को खिला दिया जाय वह वश में हो जाती है।

कान, आंख, दांत, जीभ, तथा वीर्य को पंच मल कहते हैं।

लाल कनेर के पुष्प, भुजंगाक्षि जटा, ब्रह्मदन्डी, इन्द्रायन, गोबन्धनी (अधो पुष्पिया प्रियंगु) लज्जावती के चूर्ण की गोलियां बनावे, उन गोलियों को बराबर नमक सहित एक बर्तन में डालकर अपने मूत्र में पकावे। इन गोलियों को भोजन आदि के साथ खिलाने से स्त्री वश में होती है।

बड, गूलर, पीपल, पिलखन, अंजीर के दूध तथा पंडुकी (पोतकी) के अंडे के रस में कपास, आक, कमल सूत्र, सेमल की रूई, सन की बनी हुई बत्ती को भावना देकर काले तिलों का दीपक जलाने से तीनों लोक वश में होते हैं।

निगुण्डी और सफेद सरसों घर के द्वार पर अथवा दुकान के द्वार पर रखी जावे तो अच्छा क्रय विक्रय होता है।

जो स्त्री कांचिका (सौवीर) के साथ जवे के फूल को मल कर ऋतु काल में पीती है। वह फिर मासिक से नहीं होती है यदि हो भी जावे तो गर्भ धारण तो कभी भी नहीं करती है।

लज्जारिका, और मेंढक की चरबी को हाथ पर लगा लेने से अग्नि का स्तम्भन होता है, और श्वास निरोध से तुला दिव्य का स्तम्भन होता है।

उत्तर दिशा में उत्पन्न होने वाली कौंच की जड़ को गो मूत्र में पीस कर उसका मस्तक पर तिलक करने से शाकिनी उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखती है।

रवि पुष्यामृत के योग में ब्राह्मी, शतावरी, शंखा होली, अधा जारा, जावत्री, केशर मालकांगणी, चित्रक, अकलकरो और मिश्री का चूर्ण करके सर्व सम भाग लेकर, सवेरे १४ कोमल अदरख के रस में २१ दिन तक खाने से बुद्धि की वृद्धि होती है।

पुष्यार्क योग में काला धतुरे की जड़ अथवा सफेद धतुरे की जड़ शनिवार को निमन्त्रण देकर, रविवार को संध्या काल में नग्न होकर ग्रहण करे, फिर कन्या कत्रीत सुत्र लपेट कर, धूप खेवे, फिर उस जड़ को अपने कमर में बांधने से स्वप्न में वीर्य का कभी स्खलन नहीं होता है।

पुष्यार्क अथवा हस्तार्क में रुद्रवंति और (   ) का पंचांग लेकर पानी में गोली बनाकर रक्खे, जब कार्य पड़े तब अपने शरीर में लेप करने से अग्नि शीतल के समान लगती है। याने अग्नि में नहीं जलता है।

मूलार्क योग में सर पंखा का पंचांग, बीसरवपरा का पंचांग, इन्दवारूणी का पंचांग शिव लिंगी का पंचांग, इन सब को एकत्र करके पेट पर लेप करने से उदर रोग शांत होते हैं।

पुष्यार्क योग मे लज्जालु पंचांग, शंख पुष्पी पंचांग, (   ) पंचांग लक्ष्मरण पंचांग, श्वेत गुंजा पंचांग इन सब चीजों को ग्रहण करके गोली बनावे, जब कार्य पड़े तब स्वयं के थूक में उस गोली को घिस कर तिलक करने से पर विद्या का छेदन होकर, आजीविका की प्राप्ति होती है।

रवि पुष्या मृत योग में दुब पंचांग का रस लाकर अष्ट गंध मिलाकर दायां हाथ की अनामिका अंगुली से माथे पर निरन्तर तिलक करने से सर्व जन वश में होते हैं।

पुष्यार्क योग में जाइ पुष्प का पंचांग और समुद्र फेन, गधेडा के मूत्र में गोली करके आंख में अंजन करने से भूत प्रेत, व्यंतरादि सर्व दोष का नाश करता है। स्त्रियों के भग पर लेपन करने से सुभागी हो जाती है।

पुष्यार्क में धन्वंतरि पंचांग, लक्ष्मणा पंचांग, शिवलिंगी पंचांग इन तीनों का चूर्ण करके सूंघने से आधा शीशी तथा सूर्य वात का नाश होता है।

पुष्यार्क योग में एक डंडी पंचांग, पुत्रं जारी पंचांग को तीन धातु के तावीज में डालकर हाथ में बांधने से, सर्व जाति की अग्नि ठंडी हो जाती है।

पुष्यार्क योग में मुरगे की विष्टा, मयुर की विष्टा लोमड़ी की विष्टा, चीमगादड की विष्टा और चतुष्पद पशुओं रज, सब को इकट्ठा करके शत्रु के माथे डालने से उसका नाश होता है।

पुष्यार्क योग में सरपंखा पंचांग, चक्रांग पंचांग, मयुर शीखा पंचांग इन सब चीजों को पानी के साथ पिलाने से सब जाति के विष से कभी मरण नहीं होता है।

पुष्यार्क योग में चक्रांग पंचाग, काक जंघा पंचांग, पिलाने से अन्दर गांठ और गोलादिक शूल की शांति होती है।

पुष्यार्क में सहदेवी का पंचांग तीन धातुओं के तावीज में डालकर धारण करने से असमय में गर्भपात कभी नहीं होता है।

पुष्यार्क में सूअर की विष्टा जमीन पर नहीं गिरे, उसके पहले ही ग्रहण करके मिष्टान्न के साथ में हाथी को खिलाने से हाथी वश में होता है।

पुष्यार्क योग में सफेद अकौआ जड़को, की जो गणेशाकार होती है उसको लाकर द्रव्य के साथ में रखने से अष्ट सिद्धि और नव निधि की प्राप्ति होती है।

गंगा पार की ताम्बा लाकर चने में मिलावें और कूट कर गुदा में धूनी दे तो बवासीर का रोग शांत होता है।

सर्प की केंचुली को मस्से के नीचे बांधे तो बवासीर ठीक होता है।

दांये हाथ की बीच की अंगुली में लोहे की अंगूठी पहनने से पथरी रोग शांत होता है।

सुबह के समय दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके हाथ में गुड़ की डली लेकर उसे दांतो से काट कर चोराहे पर फेंक देने से आधा सीसी का रोग शांत होता है।

गाय के घी में सोरा मिलाकर सूंघने से आधा सीसी रोग दूर हो जाता है।

दूध के दांत जिसके गिरे हो उस दांत को ताबीज में मडवा कर पास रखने से दांत पीडा शांत होती है।

रेशम के डोरे में जायफल की माला गूंथ कर रोगी के गले में बांधने से मृगी रोग शांत होता है।

गाय के बांये सींग की अंगूठी बनवा कर, दांये हाथ की कनिष्ठा अंगुली में पहनने से मृगी का दौरा आना जल्दी बन्द हो जाता है।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दक्षिण की ओर वाले पवित्र स्थान से, व्याघ्र नखी, बूटी की जड़ उखाड़ लावे और उसे स्त्री के कमर में बांधने से प्रदर रोग शांत होता है।

काली मूसली की जड़ को हाथ वा पांव में बांधने से रुका हुआ गर्भ गिर जाता है।

जेष्टा नक्षत्र में अडुसे की जड़ लाकर उसे धूप देकर स्त्री की कमर में बांधने से नष्ट पुष्पा स्त्री ३० दिन के भीतर फिर, रजस्वला होने लगती है।

तील की जड़ ब्रह्मदण्डी की जड़, मुलहठी, काली मिर्च और पीपल इन सबको जौ कुट का काढा बनाकर पीने से बन्द मासिक धर्म फिर से होने लगता है।

शिव लिंगी के बीज की गुड़ के साथ गोली बना कर ऋतु स्नान के बाद तीन दिन खाकर मैथुन करने से गर्भ ठहर जाता है।

निर्गुण्डि के रस में गोखरू के बीज डालकर सात दिन तक पीने से स्त्री गर्भ धारण करती है।

श्रवण नक्षत्र में काले एरण्ड की जड़ लाकर, उसे धूप, दीप देकर बन्ध्या स्त्री के गले में बांधने से बन्ध्यात्व दोष दूर हो जाता है। वह गर्भ धारण करती है।

नींबू के पुराने वृक्ष की जड़ को दूध में पीसकर घी में मिला कर पीने से दीर्घ जीवी पुत्र की प्राप्ति होती है।

रजो धर्म से निवृत होने के बाद पांच दिन तक, जो स्त्री पान की जड़ को घोंट कर पी लेती है। उसे गर्भ नहीं रहता है।

स्त्री की योनि पर हाथी की लीद रखने से गर्भ नहीं रहता है।

रवि पुष्या मृत में धतूरे की जड़ को लाकर रख ले, कार्य पड़े तब गर्भवती स्त्री के कमर में बांध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

सफेद सोंठ की जड़ को गर्भिणी स्त्री के योनि में रखने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

गर्भिणी स्त्री के हाथ में चुम्बक पत्थर रख देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

स्त्री के कमर में बांस की जड बांधने से प्रसव सुख से होता है।

नीम की जड़ स्त्री के कमर में बांधने से प्रसव सुख पूर्वक होता है।

उत्तर दिशा में उत्पन्न ईख की जड को स्त्री के नाप के डोरे में बांध कर कमर में बांधने से प्रसव सुख पूर्वक होता है।

आंवला और मूलहठी को गाय के दूध के साथ पीने से गर्भ स्तंभन होता है।

धतूरे की जड़ को कमर में बांधने से गर्भ स्त्राव नहीं होता है।

अकरकरा को सूत में लपेट कर बच्चे के गले में बांधने से मृगी रोग शांत होता है।

दूध पिलाने वाली मां अथवा धाय के कपड़े में से एक टुकड़ा फाड़ कर, पानी में भिगोवे, फिर बच्चे के माथे पर रख देने से हिचकी रोग शान्त हो जायगा।

कपूर के डलिओं की माला बनाकर बच्चे को पहनाने से सुखपूर्वक दांत आयेंगे।

बच्चे के हाथ में लोहे अथवा तांबे का कड़ा पहनाने से दांत सुखपूर्वक आवेंगे और बच्चे को दृष्टि दोष नहीं होगा।

काली सरसों और काली मिर्च को पीसकर अंजन करने से भूत बाधा नष्ट होती है।

अश्विनी नक्षत्र में घोड़े के खुर का नख लेकर रखले, उस नख को अग्नि में डाल कर धूनी देने से भूत प्रेत आदिक भाग जाते हैं।

अनार का बांधा ज्येष्ठा नक्षत्र में लाकर घर के दरवाजे पर बांध देने से बालकों के दुष्ट ग्रहों का निवारण हो जाता है।

काशीफल के फूलों के रस में हल्दी को पीस कर पत्थर के खरल में खूब घोट कर अंजन बनाले। इस अंजन को आँख में लगाने से भूतादि की बाधा अवश्य दूर हो जाती है।

रविवार के दिन सफेद कनेर की जड़ को दांये कान पर बांधने से विषम ज्वर दूर होता है और दांयी भुजा में बांधने पर शीत ज्वर दूर होता है।

चौलाई की जड़ सिर में बांधने से विषम ज्वर दूर हो जाता है।

मकड़ी के जाले को गले में लटकाने से ज्वर उतर जाता है।

रविवार के दिन आक की जड़ को उखाड़ कर कान में बांधने से सभी तरह के ज्वर दूर हो जाते है।

नारियल की जड़ को (लाँगली मूल) को गले में बांधने से महा ज्वर दूर हो जाता है।

वृहस्पति की जड़ को मस्तक पर रखने से, बांधने से महा ज्वर नष्ट होता है।

अपा मार्ग की जड़ को रोगी के भुजा में बांधने से भूत ज्वर नाश होता है।

रीठे के फल को धागे में गूंथ कर बच्चे के गले में बाँधने से उसे नजर नहीं लगती तथा हिचकी रोग शान्त होता है।

भेड़िये के दांत को बालक के गले में बांधने से बालक का अपस्मार रोग शांत होता है।

कबूतर की बीट को शहद के साथ पीने से स्त्री रजस्वला हो जाती है।

घूंघची की जड़ को कान मे बांधने से दाढ के कीडे झड़ जाते हैं।

रविवार के दिन सर्प की कॅंचुल लाकर थोड़े से गुड़ में १ रत्ती भर कॅंचुलि मिला कर देने से नाहरू रोग शांत हो जाता है।

सूकी मिट्टी का डला सूंघने से नाक का रक्त बन्द हो जाता है। नकसीर ठीक होती है।

प्याज की माला को कंठ में धारण करने से तिल्ली और जिगर दूर हो जाता है।

आंवा हल्दी, सेंधा नमक, कूठ को सम भाग लेकर नींबू के रस में पीस कर लेप करने से मुंह के धब्बे दूर होते हैं।

तज, धनिया और लोध्र को सम भाग पीस कर मस्सों तथा मुंहासों पर लेप करने से वे दूर हो जाते हैं।

सरसों, सेंधा नमक, लोंग और वच—इन सबको कूट कर मुंह पर लेप करने से मुंह पर होने वाली छोटी २ कीलें फुन्सियां ठीक होती हैं।

सफेद सांठी की जड़ को घी में पीस कर आंखों में अंजन करने से बहता हुआ पानी रुक जाता है।

बादाम, कपूर, आधी २ रत्ती लेकर खूब महीन पीस ले, फिर अंगुली से अंजन करने पर दुखती हुई आंखें ठीक हो जाती हैं।

रांगे की अंगूठी मध्यमा उंगली में पहनने से मोटापा कम हो जाता है।

सोते समय सूखा नमक पिसा हुआ शिर में मलने से झड़ते हुए शिर के बाल बन्द हो जायेंगे।

शुभ नक्षत्र में (अपामार्ग अथवा अधाझार) की जड़ लाकर व्यक्ति के बांये कान में बांधने से सर्प-बिच्छू का जहर उतर जाता है।

सर्प के काटे हुए स्थान पर सफेद सोंठ की जड़ का लेप करने से जहर उतर जाता है।

मयूर के साबूत पङ्ख को चिलम में भर कर फूंक लेने से तुरन्त सर्प का जहर उतर जाता है। किन्तु इस प्रयोग को छः-सात बार करना चाहिये, सर्प दष्टा व्यक्ति अगर बेहोस हो गया हो तो अन्य व्यक्ति स्वयं फूंक लेकर सर्प दष्टा के नाक में जोर से धुंआ फेंकने से विष उतर जायगा।

ऊंट के बालों की रस्सी बनाकर, अपनी जांघ में बांध ले तो जब तक उस रस्सी को नहीं खोलेगा तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।

कमल गट्टे को शहद के साथ पीस कर नाभि पर लेप करने से वीर्य स्खलित नहीं होगा।

पुष्य नक्षत्र में आक और धतूरे का ऊपरी भाग एवं कटेली की जड़ लाकर, सबको मिलाकर चूर्ण करे, इस चूर्ण को जिसके शिर पर डाल दिया जाय, उससे इच्छित वस्तु प्राप्त की जा सकती है।

ताल को मट्ठे में पीस कर मिट्टी सहित पुतली बनाए। उस पुतली को जिसके घर में गाढ़ दिया जाय उस घर का ग्रह क्लेश का नाश हो जाता हैं।

शुक्ल पक्ष में पुष्य नक्षत्र पडे तब घूंघची की जड़ लाकर उसे शैय्या के सिरहाने बांध-कर सोने से चौरों का भय नहीं रहता है।

कृति का नक्षत्र में कैथ का बांधा लाकर मुंह में रखने से शस्त्र के आघात का भय दूर हो जाता है।

अंकोल के फल का तेल निकाल कर उसमें तगर के फल का चूर्ण मिलावे इसे आंखों में आंजने से जहां तक दृष्टि जायगी वहां तक देवी-देवता ही दिखाई पड़ेंगे। बाद में केवल तगर के तैल का अंजन करने से पुनः मानुषि दृष्टि प्राप्त होती है।

आंकोल का तेल दीपक में भर कर घर में जलाने से भूत प्रेत दिखाई देते हैं।

मीठे तेल में गंधक डाल कर दीपक जलाने से घर में भूत प्रेत दिखाई देते हैं।

रविहस्त को पमाड की जड, शनिवार को न्योतकर रविवार को प्रातः उसे लाकर दांई भुजा में बांधने से जुआ में जीत होती हैं।

सफेद घूंघची को पानी में पीस कर बिना खूंटी वाली खडाऊं पर गाढ़ा लेप कर ले फिर उस पर पांव जमा कर चले तो खडाऊं पांव से अलग नहीं होगी।

मूली के पत्तों का रस हाथ में लेकर बिच्छु पकडने से वह डंक नहीं मारता है।

गोखरू बकरी का सींग, ताल बुखारा, शूकर की विष्टा और सफेद घूंघची इन सब को पीस कर रसोई घर में डाल देने से मिट्टी के बरतन सब फुट जायेंगे।

रविवार के दिन प्रातः काल लाल एरण्ड को न्यौत आवे। शाम के समय उसे एक झटके में तोड़ लावे कि उसके दो टुकड़े हो जायें। एक टुकड़ा नीचे गिर पड़े, दूसरा हाथ में रहे फिर दोनों टुकड़ों को अलग-अलग रख ले। फिर जिसे पीढ़े (पाटा) पर बैठा हुआ देखे, उसके शरीर से जो टुकड़ा नीचे गिर पड़ा हो, तो वह आदमी पाटे से चीपक जायगा। हाथ में जो रह गया था, उसको स्पर्श करा देने पर वह चिपका हुआ आदमी छूट जायगा।

आक के दूध में चांवलों को भीगो कर आग पर चढ़ाने से चांवल कभी भी नहीं पकते है।

भिलावे का रस में घूंघची, विष, चित्रक, और कौंच को मिला कर देने के शत्रु को

भूत लग जाता है। चन्दन खस माल कांगनी, तगर, लाल चन्दन और कूठ को एक में पीस कर शरीर में लेप करने से भूत उतर जाता है।

शुभ तिथि, शुभ वार के नक्षत्र को काली गाय के दूध को जीभ पर रखे और उसके घी को दोनों आँखों में अंजन करे तो पृथ्वी में गड़ा हुआ द्रव्य दिखेगा।

जहां पर कौए मैथुन करते हों और सिंह आकर बैठता हो वहां अवश्य ही धन गड़ा हुआ है समझना।

बहेडे के वृक्ष को साम को नोत आवे, सवेरे उसका पत्ता लाकर पांव के नीचे दबा कर भोजन करने से बीस तीस आदमी का भोजन अकेले ही खा जाता है।

बहेड़े का पत्ता तथा सफेद कुत्ते का दांत इन दोनों को कमर में बांध कर खाने बैठने से बहुत भोजन करता है।

भैंस के दूध में तथा घी में अपा मार्ग के बीजों की खीर बना लर खाने से १ महीने तक भूख नहीं लगती हैं।

पमार के बीज, कसेरू तथा कमल की जड को गाय के दूध मे पका कर खाने से एक महीने तक भूख नहीं लगती।

गोरोचन तथा केशर को महावर के साथ घिस कर, उसके द्वारा भोज पत्र के ऊपर शत्रु का नाम लिख ने से उसका स्तम्भ न हो जाता हैं। और वह सदैव वश में रहता है।

पके और सुखे हुए लभेडे (ल्हिसौड़े) के फल को खूब महीन पीस कर पानी में डालने से पानी बंध जाता है।

दो हांडियों में श्मसान के अंगारे भर कर दोनों का आपस में मुंह मिला कर जंगल में गाड़ देने से मेघ का स्तंभन हो जाता है।

चौलाइ की जड को चान्दी के तावीज में डाल कर अपने मुंह में रखने से शत्रु का मुख स्तंभित रहता है।

ऊंट के रोमों को किसी पशु पर डाल देने से वह जहाँ का तहां ही स्तंभित हो जाता है। कटेली की जड को और मुलहठी को समभाग लेकर पीसे, फिर नाक में सुंघने से निद्रा का स्तंभन हो जाता है।

ऋतुमती स्त्री की योनि के वस्त्र पर जिस मनुष्य का नाम गोरोचन से लिख कर घड़े में बन्द कर दिया जाय, उसका स्तंभन हो जाता है। फिर वह चल फिर नहीं सकता है, एक ही स्थान पर पड़ा रहता है।

जलते हुए भट्टे में घोड़े का खुर और बेत की जड़ को डाल दिया जाय तो अग्नि का स्तंभन हो जाता है। फिर खाली धुंआ उठता रहता है।

रविपुष्यामृत नक्षत्र में सफेद आकड़े की जड़ को लेकर दांई भुजा में बांधने से व्याघ्र का स्तंभन होता है।

ऊंट की हड्डी को जिस व्यक्ति का नाम लेकर पृथ्वी में गाड़ दिया जाय तो, उस मनुष्य की गति स्तंभित हो जाती है।

एकाक्षी नारियल कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं एकाक्षाय श्रीफलाय भगवते विश्वरुपाय सर्व योगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकार्य प्रदाय नमः।

पूजन विधि :—प्रथम हस्त में पानी लेकर संकल्प करे—अत्राद्य संवत् मिलाब्दे महामांगलाय फलप्रद—अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरे इष्ट सिद्धये बहुधन प्राप्तये एकाक्षि श्रीफल पूजन महं करिस्यमि। इस प्रकार कह कर पानी छींटे फिर उपर्युक्त मन्त्र को बोलते हुये श्रीफल का पंचामृताभिषेक करे, अष्ट द्रव्य चढ़ावे रेशमी वस्त्र ओढ़ाए, पूजन करे। उसके बाद सोने की वा मूंगेकी अथवा रूद्राक्ष की माला से जप शुरू करे। जप १२५०० हजार हो जाय, फिर नित्य प्रति एक माला फेरे, दीवाली, सूर्यग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय पूजन करे।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्मी स्वरूपाय एकाक्षिनालिकेराय नमः सर्व सिद्धि कुरु २ स्वाहा।

यह मन्त्र रेशमी कपड़े पर अष्ट गंध से अथवा केसर से लिखा। अनार की कलम से उस वस्त्र के उपर एकाक्षि श्रीफल रखा मन्त्र से प्रातः और संध्या को अष्ट द्रव्य से पूजा करे, मूल मन्त्र की एक माला फेरे।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं एकाक्षिनालिकेराय नमः।

इस मन्त्र की एक माला फेरे गुलाब के फूल १०८ चढ़ावे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ऐं एकाक्षिनालिकेराय नमः।

इस मन्त्र की १० माला पांच दिन तक प्रति दिन फेरे। तथा कनेर के २१ फूल चढाए। जिज्ञासित का स्वप्न में उत्तर प्राप्त होगा।

फलप्राप्ति :—

इस श्रीफल सुंघाने मात्र से स्त्री गर्भ, के कष्ट से छुटे, तुरंत प्रसव हो।

वंध्याँ स्त्री को ऋतु स्नान के बाद घोल कर पानी पिलावो तो संतान हो।

श्री फल को सात बार पानी में डुबो कर सात बार ही मन्त्र पढ़े, फिर उस पानी को घर में छींटने से भूत- प्रेत, का उपद्रव शाँत होता हो।

लाल कनेर का फूल लेकर, दक्षिण दिशा में बैठकर शत्र का नाम लेते हुए एक माला फेरे, फूल शत्रु के सामने फेंके तो शत्रु का नाश हो।

दक्षिणावर्त शंख कल्प

शंख ३ तोले का उत्तम २५ तोले का अत्युत्तम है। शंख शुक्ल वर्ण का ही उत्तम माना गया है।

यदि शंख को पानी में नमक डाल कर उस पानी में डाल दे, फिर सात दिन तक पानी में ही रहने दे, अगर शंख फटे नहीं तो समझो असली शंख है नहीं तो नकली है।

प्रयोग फल :—

शंख में पानी भर कर मस्तक पर नित्य ही छीटे तो पाप का क्षय हो।

शंख में पानी लेकर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

पूजन के पश्चात् शंख में दूध भर कर वन्ध्या स्त्री पिए तो उसके सन्तान होती है।

जिस घर में शंख हो उस घर में सर्व मंगल होता है। रोग शोक मोह का नाश, प्रतिष्ठा बढ़ती है। मान सम्मान राज्य में होता है।

पूजन विधि :—

स्नान करके, सफेद वस्त्र धारण करे, प्रतिदिन दूध से फिर पानी से शंख को स्नान करावो। फिर चांदी, अथवा सोने के पत्र पर उस शंख को सोने में मढ़ाना चाहिये, फिर अष्ट-द्रव्य से सोडसो प्रचार पूजन करना चाहिए, । पूजन करने के पहले संकल्प करें।

ॐ अद्य अमुक वर्षे अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ मम मनोवांञ्छित कार्यसिद्धये ऋद्धि सिद्धि प्राप्त्यर्थं महं दक्षिणा वर्त शंखस्य पूजनं करिष्याम।

पूजन मन्त्र :—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थायपयोनिधि जाताय श्री दक्षिणवर्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः।

इस मन्त्र को पढ़ते हुए अष्ट द्रव्य से सुगन्धित इत्र चढ़ाए, नैवेद्य चांदी के बरतन में रखे, उससें दूध, चोनी, केशर, कस्तूरी बादाम, इलायची डाले, साथ में केला रखे, जो भोजन शाला में वस्तु बनी हो उसे चढ़ाए, कपूर से आरती उत्तारे।

ध्यान मन्त्र :—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थाय पयोनिधि जाताय लक्ष्मी सहोदराय चिन्तितार्थ संपादकाय श्रीदक्षिणावर्त शंखाय श्री कराय, पूज्याय क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ नमः सर्वाभरण भूषिताय प्रशस्यायङ्गोंपाङ्गसंयुताय कल्पवृक्षाय स्थिताय कामधेनु चिन्तामणिनव नीधिरूपाय चतुर्दश रत्न परिवृताय अष्टादश महासिद्धि सहिताय श्रीलक्ष्मी देवता श्री कृष्णदेव करतल लालिताय श्रीशंख महानिधये नमः।

जप मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिण मुखाद शंखनिधये समुद्रप्रभवाय शंखाय नमः। प्रतिदिन एक या दसमाला फेरे। जप करने के बाद मन्त्र के साथ पानी आकाश को ओर छांट दे।

गौरोचन कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हन हन ॐ ह्रीं हन ॐ ह्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रों ह्रां ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—गौरोचन की टिकड़ी बनाये—२१ उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शुद्ध जगह रख दें, जब भी जरूरत हो उपरोक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके प्रयोग में लावे, गुगुल का धूप खेवे।

प्रयोग :—१. ललाट पर तिलक कर राज्य सभा में राज्य प्रमुख के पास व सरकारी किसी भी कार्य के लिए जावे तो मनोकामना सफल हो।

२. हृदय पर तिलक करके जहाँ भी जावे, तो मनोकामना सफल हो, किसी स्त्री के पास जावे, तो वश में हो।

३. मस्तक पर तिलक करके जावे तो रास्ते में सिंह, व्याघ्र, चोर आदि का भय मिटे, स्त्री-पुरुष सब वश हो, लोक प्रिय हो।

तंत्राधिकार : रुद्राक्ष कल्प

भोग और मोक्ष को इच्छा रखने वाले चारो वर्णों के लोगों को रुद्राक्ष धारण करना चाहिये। उत्तम रुद्राक्ष असंख्याय समूहो का भेदन करने वाला है। जाति भेद के अनुसार

रुद्राक्ष ४ तरह के होते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। उन ब्राह्मणादि जाति के रुद्राक्षों के वर्ण श्वेत, रक्त पीत तथा कृष्ण जानना चाहिये। मनुष्यों को चाहिये कि वे क्रमशः वर्ण के अनुसार अपनी जाति का ही रुद्राक्ष धारण करें। जो रुद्राक्ष आंवले के फल के बराबर होता है। वह समस्त अनिष्टों का विनाश करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष बेर के फल के बराबर होता है, वह उतना छोटा होते हुए भी लोक में उत्तम फल देने वाला तथा सुख सौभाग्य वृद्धि करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष गुंजाफल के समान बहुत छोटा होता है वह सम्पूर्ण मनोरथों और फलों की सिद्धि करने वाला होता है। रुद्राक्ष जैसे-जैसे छोटा होता है वैसे-वैसे अधिक फल देने वाला होता है। एक-एक बड़े रुद्राक्ष से एक-एक छोटे रुद्राक्ष को विद्वानों ने दस गुना अधिक फल देने वाला बतलाया है। अतः पापों का नाश करने के लिए रुद्राक्ष धारण करना आवश्यक बताया है। रुद्राक्ष के समान फलदायिनी कोई भी माला नहीं है। समान आकार प्रकार वाले चिकने, मजबूत, स्थूल, कण्टक युक्त (उभरे हुए छोटे २ दानों वाला) और सुंदर रुद्राक्ष अभिलषित पदार्थों के दाता तथा सदैव भोग और मोक्ष देने वाले हैं। जिसे कीड़ों ने दूषित कर दिया हो, जो टूटा फूटा न हो जिसमें उभरे हुए दाने न हो, जो व्रण युक्त हो तथा जो पूरा पूरा गोल न हो इन पांच प्रकार के रुद्राक्षों को त्याग देना चाहिये। जिस रुद्राक्ष में अपने आप ही डोरा पिरोने योग्य छिद्र हो गया हो, वही उत्तम माना गया है, जिसमें मनुष्य के प्रयत्न से छेद किया गया हो, वह मध्यम श्रेणी का होता है। ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य जिस फल को पाता है उसका वर्णन सैकड़ों वर्षों में भी नहीं किया जा सकता, भक्तिमान पुरुष साढ़े पांच सौ रुद्राक्ष के दानों का सुन्दर मुकुट बनालें और उसे सिर पर धारण करे तीन सौ साठ दानों के लम्बे सूत्र में पिरोकर एक हार बना ले। वैसे-वैसे तीन हार बनाकर भक्ति परायण पुरुष उनका यज्ञोपवीत तैयार करे और उसे यथा स्थान धारण किये रहे।

कितने रुद्राक्ष की माला—कहाँ धारण की जाऐ—छः रुद्राक्ष की माला कान में, बारह की हाथ में, पन्द्रह की भुजा में, बाईस की मस्तक में सत्ताईस की गले में, बत्तीस की कंठ में (जिससे भूल कर वह हृदय को स्पर्श करती रहे) धारण करनी चाहिये।

कौनसा रुद्राक्ष कहां धारण करना चाहिए—छः मुखा रुद्राक्ष दाहिने हाथ में, सात मुखा कंठ में, आठ मुखा मस्तक में, नौ मुखा बांये हाथ में, चौदह मुखा शिखा में, बारह मुखा वाले रुद्राक्ष को केश प्रदेश में धारण करना चाहिये। इसके धारण करने से आरोग्य लाभ सात्विक प्रवृति का उदय, शक्ति का अविर्भाव और विघ्ननाश होता है।

रुद्राक्ष के मुखों के अनुसार उसका फल निम्न प्रकार से है—

(१) एक मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् भोग व मोक्ष रूप फल प्रदान करता है। जहाँ इसकी

पूजा होती है, जहाँ से लक्ष्मी दूर नहीं जाती। उस स्थान में सारे उपद्रव नष्ट हो जाते हैं तथा वहाँ रहने वाले लोगों की सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण होती हैं

(२) दो मुख वाला रुद्राक्ष देव देवेश्वर कहा गया है। वह सम्पूर्ण कामनाओं और फलों को देने वाला है। गर्भवती महिलाओं की कमर या बाँह पर सूत से बांध देने पर गर्भावस्था नौ महिने के अन्दर किसी भी प्रकार की बाधा, भय, बेहोशी, हिस्टीरिया, डरावने स्वप्न आदि दोष नहीं होंगे साथ में एक रुद्राक्ष विस्तर पर तकिए के नीचे एक डिबिया में रख देना चाहिये।

(३) तीन मुख वाला रुद्राक्ष सदा साक्षात् साधन फल देने वाला है, उसके प्रभाव से सारी विद्यायें प्रतिष्ठित होती हैं तीन दिन के बाद आने वाला ज्वर इसके धारण करने से ठीक हो जाता है।

(४) चार मुख वाला रुद्राक्ष के दर्शन और स्पर्श से शीघ्र ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि देने वाला है इससे जीव हत्या का पाप नाश हो जाता है।

(५) पांच मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् कालाग्नि रूप है वह सब कुछ करने में समर्थ है सब कष्टों से मुक्ति देने वाला तथा सम्पूर्ण मनोवांछित फल प्रदान करने वाला है उसके तीन दाने धारण करने से लाभ होता है।

(६) छः मुखो वाला रुद्राक्ष यदि दाहिनी बाह में उसे धारण किया जाये तो धारण करने वाला मनुष्य विद्याओं का स्वामी होता है ओर पापों से मुक्त हो जाता है यह विद्यार्थियों के लिए उत्तम है।

(७) सात मुख वाला रुद्राक्ष अनंग स्वरूप और अनंग नाम से हो प्रसिद्ध है उसको धारण करने से दरिद्र भी ऐश्वर्य शाली हो जाता है। सभी रोगों का नाश होता है।

(८) आठ मुख वाला रुद्राक्ष अष्ट मूर्ति भैरव रूप है। असत्य भाषण का पाप नष्ट करता है। उसको धारण करने से मनुष्य पूर्णायु होता है और मृत्यु के पश्चात शूल धारी यक्ष हो जाता है।

(९) नौ मुख वाले रुद्राक्ष को भैरव का प्रतीक माना गया है अथवा नौ रूप धारश करने वाली माहेश्वरी दुर्गा उसकी अधिष्ठात्री देवी मानी गई है जो मनुष्य अपने बाये हाथ में इसको धारण करता है वह सर्वेश्वर हो जाता है।

(१०) दस मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् भगवान रूप है। उसको धारण करने से मनुष्य की

सम्पूर्ण कामनाऐं पूर्ण हो जाती है वह भूत प्रेत बाधा तथा सभी प्रकार की बीमारियों को हरण करने वाला है।

(११) ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष रुद्र रूप है, उसको धारण करने से सर्वत्र विजयी होता है इसे पूजा गृह अथवा तिजोरी में मंगल कामना के लिए रखना लाभ दायक है यह सबको मोहित करने वाला है।

(१२) बारह मुख वाले रुद्राक्ष को केश प्रदेश में धारण करे, उसको धारण करने से मानो, मस्तक पर आदित्य विराजमान हो जाते हैं।

(१३) तेरह मुख वाला रुद्राक्ष विश्व देवों का स्वरूप है, उसको धारण करके, मनुष्य सम्पूर्ण अभिष्ठों को पाता है तथा सौभाग्य और मंगल लाभ प्राप्त करता है।

(१४) चौदह मुख वाला रुद्राक्ष परम शिव रूप है, उसे भक्ति पूर्वक मस्तक पर धारण करे, इससे समस्त पापों का नाश होता है। इस तरह मुखों के भेद से रुद्राक्ष के मुख्यतः चौदह भेद बताये गये हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के मन्त्र निम्नलिखित रूप में है।

१–४–५–१०–१३ इन पाँचों का मन्त्र—ॐ ह्रीं नमः हैं।

२–१४ इन दोनों का मन्त्र—ॐ नमः। है।

३–इसका मन्त्र—क्लीं नमः। है।

६–९–११ इन तीनों का मन्त्र—ॐ ह्रीं हूं नमः। है।

७–८ इन दोनों का मन्त्र—ॐ हुं नमः। है।

१२–इसका मन्त्र—ॐ क्रौं क्षौं रौं नमः। है।

उपरोक्त चौदह ही मुखो वाले रुद्राक्षों को अपने अपने मन्त्र द्वारा धारण करने का विधान है रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले पुरुष को देखकर भूत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा द्रोहकारी राक्षस आदि सर्व दूर भाग जाते हैं।

एक मुखी रुद्राक्ष को साधने का मन्त्र :—

श्री गौतम गणपति जी को नमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एक मुखाय भगवते-ऽनुरूपाय सर्व युगेश्वराय त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम फलं प्रदाय नमः।

विधि :—चैत्र शुक्ला अष्टमी को १०८ रक्त वर्ण के पुष्पों से पूजन करे। धूप, दीप, प्रसाद करे केशर चन्दन कपूर का तिलक करे। प्रत्येक पुष्प पर एक मन्त्र पढ़े। फिर इसी तरह

दीपावली के दिन करे तत्पश्चात् तिजोरी में रख दे या सोने में मंढ़ा कर गले में धारण करे।

जिनमें एक मुखी रुद्राक्ष जिसका मूल्य ५-१० हजार रुपये तक भी हो जाता है। विशेष रूप से नकली आते हैं। लेते समय सावधानी रखनी चाहिए। किसी विज्ञ व्यक्ति से पहचान करवा कर लेना चाहिये।

वहेड़ा कल्प

शनिवार को संध्या को वृक्ष के पास जावे, "मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" इस मन्त्र का उच्चारण करे, चन्दन, चांवल, पुष्प, नैवेद्य धूप, दीप द्वारा उसका पूजन करे व मोली बांध कर आ जावे। दूसरे रोज रविवार पुष्य नक्षत्र के दिन सूर्योदय से पहले जावे और निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर मूल व पत्ते ले आवें।

मन्त्र :—ॐ नमः सर्व भूताधिपतये ग्रस शोषय भैरवोऽवाज्ञापयति स्वाहा।

घर पर लाकर पंचामृत से धोकर अच्छी तरह स्थापना कर, उपरोक्त मन्त्र में फिर अभिमन्त्रित करना चाहिये तत्पश्चात् प्रयोग में लाया जा सकता है।

जैसे :—(१) दाहिनी जांघ के नीचे रखकर भोजन करे, तो अपनी खुराक से बीस गुना ज्यादा भोजन कर सकता है।

(२) तिजोरी में रखे तो अटूट भंडार रहे।

निर्गुण्डी कल्प

विधि :—रात्रि के समय अकेला निर्गुण्डी वृक्ष के पास जावे और २१ प्रदक्षिणा निम्नलिखित मन्त्र को बोलते हुये सात रात्रि तक बराबर दे, तो वृक्ष सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो गौतम गणेशाय कुबेरये कद्रि के फट् स्वाहा।

तत्पश्चात् सातवें रोज वृक्ष का पंचाग ले आवे। फिर धूप दीप से पूजन करे। पंचामृत से धो कर शुद्ध जगह रखकर उपरोक्त मन्त्र की एक माला से अभिमन्त्रित कर निम्नलिखित प्रयोगों से काम लें।

जैसे :—(१) पुष्य नक्षत्र में निर्गुण्डी और सफेद सरसों, दुकान के द्वार पर रखी जाये, तो अच्छा क्रय विक्रय होता है।

(२) वृक्ष की छाल का चूर्ण, जीरे का चूर्ण सम भाग आठ दिन तक सेवन करने से हर प्रकार का ज्वर दूर हो जाता है।

(३) एक महीने तक सेवन करने से भूमिगत द्रव्य दिखाई देता है।

(४) चालीस दिन तक सेवन करने से आयुष्य में वृद्धि होती है।

(५) पचास दिन तक सेवन करने से शरीर में बल अत्यन्त बढ़ता है। मृत्यु पर्यन्त निरोग रहता है इसका सेवन करते समय हल्का भोजन, खिचड़ी आदि खाना चाहिये।

हाथा जोड़ी कल्प

शुभ दिन शुभ योग में ले, और निम्नलिखित मन्त्र का १२५०० जाप करके इसको सिद्ध कर ले।

मन्त्र :—ॐ किलि किलि स्वाहा।

योग :—(१) किसी भी व्यक्ति से वार्ता करने में साथ रखे, तो बात माने।

(२) जिसको भी वश करना हो उसका नाम लेकर जाप करे तो इसके प्रभाव से वह व्यक्ति वशीभूत होगा।

(३) प्रयोग के बाद चांदी की डिबिया में सिन्दूर के साथ रखे।

विजया कल्प

इसका भिन्न भिन्न मास में भिन्न भिन्न अनुपान से सेवन करने से अलग अलग फल हैं जो निम्न प्रकार से हैं :—

१ चैत्र मास में पान के साथ खाने से पंडित बने।

२ वैशाख मास में अकलकरा के साथ खाने से जहर नहीं चढ़ेगा।

३ ज्येष्ठ मास में नींबू से खाने से, तांबे के से रंग का शरीर हो।

४ आषाढ़ मास में चित्र वल से खाने से, केश कल्प हो।

५ श्रावण मास में शिवलिंगी से खाने से, बलवान बने।

६ भाद्र मास में रुद्रवंती से खाने से, सबका प्रिय होता है।

७ आश्विन मास में माल कांगनी से, खाने से अमरी उतरे स्वस्थ हो।

८ कातिक मास में बकरी के दूध के साथ खाने से, सभोग शक्ति बढ़े।

९ मार्ग शीर्ष मास में गाय के घृत के साथ खाने से, दृष्टि दोष मिटे।

१० पोष मास में तिलों के साथ खाने से जल के भीतर की वस्तु भी दृष्टि गोचर हो
११ माघ मास में मोथा की जड़ के साथ खाने से शक्तिशाली हो।
१२ फाल्गुन मास में आंवला के साथ खाने से पैदल यात्रा की शक्ति बढ़े।

यक्षिणी कल्प

(१) विचित्रा (२) विभ्रमा (३) विशाला (४) सुलोचना (५) बाला (६) मदना (७) धूम्रा (हंसनी) (८) मानिनी (९) शतपत्रिका (१०) मेखला (११) विकला (१२) लक्ष्मी (१३) काल करणी (१४) महाभय (१५) माहिन्द्रीका (१६) श्मसानी (१७) वट यक्षिणी (१८) चन्द्रिका (१९) चक्रपाली (घंटा कर्णि) (२०) भीषणा (२१) जनरंजिका (२२) विशाला (२३) शोभना तथा (२४) शंखिनी।

विचित्रा—मन्त्र :—ऐं विचित्रे विचित्र रूपे सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करने से, विचित्रा नामक यक्षिणी सिद्धि होती है।
प्राप्ति :—अजरामरत्व का वरदान देती है।

विभ्रमा—मन्त्र :—ॐ ह्रीं भर भर स्वाहा।

विधि :—एक लाख जाप करे तथा तीन कोनों का यज्ञ कुंड बनाकर उसमें दुग्ध, घृत व मधु से दशांस हवन करे तो विभ्रमा नामक यक्षिणी सिद्ध होती है।
प्राप्ति :—साधक के स्त्री रूप में रहती है तथा चिंतित अर्थ देती है।

विशाला—मन्त्र :—ऐं विशाले ह्रीं ह्रीं क्लीं एहि एहि ह्रां विभ्रम भुये स्वाहा।

विधि :—श्मसान में दो लाख जाप करे। गुग्गुल व घृत का दशांस हवन करे।
प्राप्ति :—साधक के स्त्री के रूप में रहे। ५०० व्यक्तियों तक का भोजन दे। साधक अन्य स्त्री के साथ संगम न करे।

सुलोचना—मन्त्र :—ॐ लं लं सुलोचने सिद्धं देहि-देहि स्वाहा।

विधि :—पर्वत पर या नदी के किनारे तीन लाख जाप करें। घृत से दशांस हवन करे, तो सुलोचना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।
प्राप्ति :—आकाश गामिनी दो पादुकाएँ भेंट करें जिससे जहाँ चाहे जा सके।

मदना—मन्त्र :—ऐं मदने मदन बिंटबिनी आत्मीय मम देहि २ श्रीं स्वाहा।

विधि :—राज द्वार पर एक लाख जाप करे तथा जाति पुष्प व दूध से दशांस हवन करे तो मदना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :– एक गुटिका भेंट करे, जिसे मुंह में रखने से अदृश्य हो जाने की शक्ति प्राप्ति होती है।

मानिनी—मन्त्र :—ऐं मानिनी ह्रीं ऐहि-एहि सुन्दरि हस-हस समीह में सगमकं स्वाहा।

विधि :—जहाँ चौपाये जानवर रहें। वहाँ बैठकर १,२५,००० जाप करे व लाल फूल व तीन मधुर वस्तुओं से दशांस होम करें, तो मानिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :– साधक के पास स्त्री रूप में आकर उससे संभोग करें। उसके बाद एक तलवार भेंट दें। जिससे वह विद्याधर बनने की शक्ति प्राप्त करें।

हंसिनी—मन्त्र :—हंसिनी हंसयनि क्लीं स्वाहा।

विधि :—नगर द्वार पर एक लाख जाप करें व कमल पत्र से दशांस हवन करें तो हंसिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—साधक को अंजन भेंट करें, जिससे पृथ्वी के अन्दर की वस्तुयें देखी जा सके।

शतपत्रिका—मन्त्र :–शतपत्रिके ह्रां ह्रीं श्वीं स्वाहा।

विधि :—वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करें व घृत से दशांस हवन करे, तो शतपत्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—पृथ्वी में गड़े खजाने को बताये।

मेखला —मन्त्र :—ह्ं मम मेखले ग ग ह्रीं स्वाहा।

विधि :—पलाश वृक्ष के नीचे १४ दिन तक जाप करें, तो मेखला नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—प्रतिदिन ५०० रुपये तक भेंट दे।

विकला—मन्त्र :—विकले ऐं ह्रीं श्रीं ह्ं स्वाहा।

विधि :—घर में तीन मास तक जाप करे, तो विकला नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :–अणिमा (छोटा होना) आदि विद्या दे।

लक्ष्मी —मन्त्र :—ऐं कमले कमल धारिणी हंस स्वाहा।

विधि :—लाल कनेर के फूलों से एक लाख जाप करें। कुंड में गग्गुल से दशांस हवन करें। इससे लक्ष्मी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—पांच विद्या दे तथा मनवांछित धन दे।

कालकर्णि—मन्त्र :—क्रौं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा।

विधि :—ब्रह्म वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करें, मधु-मिश्रित दशांश हवन करें, तो कालकर्णि नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—सैन्य स्तंभन, अग्नि-स्तंभन, मधु-स्तंभन तथा गर्भ-स्तंभन की विद्या दे।

महाभय—मन्त्र :—ह्रीं महाभय एंहि स्वाहा।

विधि :—श्मसान में जहाँ मुर्दा जलाया गया हो, वहाँ बैठकर एक लाख जाप करे तो महाभय नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—रसायन दे, जिसके खाने से वृद्धावस्था नहीं आये व वृद्धावस्था हो तो युवा हो जाये।

माहिन्द्री—मन्त्र—माहिन्द्री कुल-कुल युल-युल स्वाहा।

विधि :—इन्द्र धनुष के उदय के समय निर्गुण्डी वृक्ष के नीचे बैठ कर १२,००० जाप करें, तो माहिन्द्री नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—आकाश गामिनी, पाताल गामिनी, नगर प्रवेश, वचन सिद्ध, देव, भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, वेताल, सोटिंग, आदि को दूर करने की शक्ति दे।

श्मसानी मन्त्र :—ह्रां ह्रीं स्थुः श्मशान वासिनी स्वाहा।

विधि :—श्मसान में नग्न हो कर ४ लाख जाप करें, तो श्मसानी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—एक पट्ट दे, जिससे अदृश्य होकर तीनों लोकों में घूम सकें।

वट्यक्षिणी मन्त्र :—ऐं कपालिनी ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं हंस ह्म्क्लीं फुट् स्वाहा।

विधि :—वट वृक्ष के नीचे बैठ कर चांदनी रात में तीन लाख जाप करे, तो वट नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—साधक की स्त्री के रूप में रहकर वस्त्र, अलंकार, स्वर्ण, गन्ध व पुष्प आदि दे।

चन्द्रिका मन्त्र :—ॐ नमो भगवती चन्द्रिकाय स्वाहा।

विधि :—शुक्ल पक्ष की रात्रि में एक लाख जाप करें, तो चन्द्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—अमृत रसायन दे, जिससे हजार वर्ष तक जीवित रहने की शक्ति प्राप्त हो।

घंटाकर्णि मन्त्र :—ऐं घंटे पुर क्षोभय राजा नाम क्षोभय क्षोभय भगवती गंभीरः ह्वर्प्लीं स्वाहा।

विधि :—बजते हुये घण्टे के साथ बीस हजार जाप करें, तो घंटाकर्णि यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति:—इतनी शक्ति दे कि पूरे नगर को भयभीत कर सकें।

भीषणा :—जनरंजिका विशाला।

मन्त्र :—भीषणा क्षपेत माता छिते चिरं जीवितं कर्मव्या, साधकेन भगिन्या जन-रंगिनी कालोंजन रंगि के स्वाहा ।

विधि :—एक लाख जाप से भीषणा सिद्ध हो जायेगी। उसके सिद्ध होने से जनरंजिका सिद्ध हो जायेगी । ५० हजार और अधिक जाप से विशाला सिद्ध हो जायेगी ।

प्राप्ति :—विशाला स्त्री के समान तथा जनरंजिका, दासी के समान रहेगी तथा भीषणा इन दोनों के पंच की स्थिति में रहेगी ।

शोभना मन्त्र :—ॐ अशोक पल्लवा काटकर तले श्रीं क्षः स्वाहा ।

विधि :—लाल वस्त्र व माला से तीनों समय १४ दिन तक जाप करें, तो शोभना नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :—साधक की स्त्री के समान रहेगी ।

शंखिनी मन्त्र :—ॐ शंख धारिणी शंखा भरणे ह्रां ह्रीं क्लीं ग्लीं श्रीं स्वाहा ।

विधि :—सूर्योदय के समय शंख माला से १० हजार जाप करें, कनेर के फूल, सफेद गाय के घृत तथा आठ प्रकार के धान्य सहित दशांस हवन करे, तो शंखिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :—अन्न व पाँच रुपये प्रतिदिन दें ।

रत्न, उपभोग, फल व विधि

भारत में भिन्न २ ग्रहों की दशा में भिन्न भिन्न रत्नों को धारण करने का विधान है । इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें विशेष रूप से ज्ञातव्य हैं ।

माणिक्य (मानिक) कौन धारण करें :—माणिक्य सूर्य का रत्न है । यदि किसी के जन्म के समय सूर्य अनिष्टकारी हो तो उसे माणिक्य धारण करना चाहिये ।

धारण विधि :—कम से कम ३ रत्ती का माणिक्य होना चाहिये । अपने जन्म मास की १, ६, १० या २८ वीं तारीख को या रविवार को प्रातःकाल ग्रीवा, भुजा, या अंगुली में इसे धारण किया जाता है । लालडी (सूर्य मणि) को भी चांदी में जड़वाकर रविवार को मध्यान्ह में धारण किया जाता है ।

माणिक्य को धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानों निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

मोती कौन धारण करें :—मोती चन्द्रमा का रत्न है। यदि किसी को जन्म के समय चन्द्रमा निर्बल है तो उसे मोती धारण करना चाहिये।

धारण विधि :—२, ४, ६, ११ रत्ती का मोती होना चाहिये। ७ या ८ रत्ती का मोती नहीं पहनना चाहिये। मोती को चांदी में जड़वा कर शुक्ल पक्ष, सोमवार को संध्या के समय ग्रीवा, भुजा, या अंगुली में धारण करना चाहिये। इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ इमं देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय
महते ज्येष्ठाय महते जान राज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय,
इम मनुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रमष्यै विष एष वोडमी
राजा सोमोऽस्मांक ब्राह्मणानां राजा।

मूंगा कौन धारण करें :—मूंगा मंगल ग्रह का रत्न है। अतः मंगल ग्रह की दशा में इसे धारण करना चाहिये।

धारण विधि :—जन्म कुंडली में मंगल ग्रह ४, ८ या १२ वें स्थान पर हो तो ८ रत्ती का मूंगा, सोने की अंगूठी में पहनना चाहिये। चन्द्र मंगल के योग में चांदी में, मूंगा जड़वाकर पहनना चाहिये। ५ या १४ रत्ती का मूंगा कभी नहीं होना चाहिये। मंगलवार के दिन सूर्योदय से एक घंटा पश्चात् ग्रीवा, भुजा या तीसरी अंगुली में इसे धारण करना चाहिये।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पत्तिः पृथिव्या अयम्।
अपां रेतांसि जिन्वति।

पन्ना कौन धारण करें :—पन्ना बुध ग्रह का रत्न है। अतः बुध की दशा में ५ केरेट का पन्ना धारण करना चाहिये।

धारण विधि :—पन्ने को स्वर्ण को में जड़वाकर अपने जन्म मास की ५, १४ या २३ तारीखको या बुधवार के दिन सूर्योदय के दो घंटे पश्चात् ग्रीवा, भुजा, या मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिते।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्व मिष्टापूर्त संसृजेथामयं च । अस्मि-
न्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदंत ।

पुखराज कौन धारण करें :—पुखराज गुरु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। गुरु की दशा में पुखराज धारण करना चाहिये ।

धारण करने की विधि :—७ या १२ कैरट का पीला पुखराज सोने की अंगुठी में जडवाकर गुरुवार को सायं सूर्यास्त से एक घंटे पूर्व ग्रीवा, भुजा या तीसरी अंगुली में धारण करना चाहिये। ६, ११, १५ रत्ती का पुखराज कभी धारण नहीं करना चाहिये।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है : -

ॐ बृहस्ते अति यदिर्यो अर्हाद्यु मद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवश ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।

हीरा कौन धारण करें : -हीरा शुक्र ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। शुक्र की दशा में हीरा धारण करना चाहिये ।

धारण विधि : —शुक्रवार की प्रातः ग्रीवा, भुजा या अंगुली में धारण करना चाहिये ।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ अन्नात् परिस्त्रुतों रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्
क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं
विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु ।

नीलम कौन धारण करें :—नीलम शनि ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। शनि की दशा में नीलम धारण करना चाहिये ।

धारण विधि :—५ या ७ रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए। शनिवार को सूर्योस्त से दो घंटे पहले से ४० मिनट बाद तक इसे एक नीले कपड़े में बांध कर भुजा पर धारण कर, तीन दिन परीक्षा करनी चाहिये यदि अनुकूल सिद्ध हो, तो धारण किये रहना चाहिये। हृदय पर धारण करने से यह उसे शक्ति प्रदान करता है।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु, पीतये शंयो रभिस्त्रवन्तु नः ।

गोमेद कौन धारण करें :—गोमेद, राहु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। राहु की दशा में इसको धारण करने से लाभ होता है।

धारण विधि :—गोमेद ६, ११ या १३ कैरट का होना चाहिये। ७, १० या १६ रत्ती का कभी नहीं होना चाहिये। इसे धारण करने का समय सायंकाल के अनन्तर दो घंटे रात तक है।

गोमेद को धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदा वृधः सखा कया शचिष्ठया वृता।

लहसुनिया कौन धारण करें :—लहसुनिया, केतु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। केतु की दशा में इसे धारण करना लाभ प्रद है।

धारण विधि :—३, ५ या ७ कैरट का लहसुनिया धारण करना चाहिये। २, ४, ११ या १३ रत्ती क निषिध है। इसको चांदी में जड़वाकर अर्द्ध रात्रि में धारण करना चाहिये।

लहसुनिया को धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्या अपेषसे। समुषद्भिरजायथाः।

॥ ० ॥

श्वेतार्क कल्प

विधि :—शनिवार के दिन वृक्ष के पास न्यौता देने जाये तो सर्वप्रथम "मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" यह मन्त्र वृक्ष के सामने हाथ जोड़कर बोले और चंदन, चांवल, पुष्प, नैवेद्य से पूजन करे, धूप दे और मोली बांधकर आ जाये। दूसरे रोज रवि पुष्य नक्षत्र को सुबह से पहले २ वृक्ष के पास नहा धोकर शुद्ध वस्त्र पहनकर जाये और निम्न मन्त्र बोलकर वृक्ष की जड़ को घर ले आवे। जड़ पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके लेनी चाहिये।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ॐ संजु स्वाहा।

इस मन्त्र से मूल को लाकर पंचामृत से धोकर ऊंचे व शुद्ध स्थान पर रख दे, तत्पश्चात् पुष्य नक्षत्र रहते उस जड़ से भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति बनावे व निम्नलिखित मन्त्र से पूजा करे। इससे श्री गौतम गणेशजी की मूर्ति भी बनाई जाती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति शिव चक्रे ! मालिनी स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर फिर किसी भी कार्यवश साथ में लेकर जायें, तो अवश्य सफल हो इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें और ज्ञातव्य है।

(१) जहां सफेद आक होता है कहते हैं कि वहां आसपास गडा हुआ धन होना चाहिए।

(२) सातवी ग्रन्थि में ऐसी गांठ पड़ती है कि उससे गणेश जी कि सूंडवाली आकृति बनती है। यदि दक्षिणावर्ती सूंडवाली आकृति के श्री गणेश मिल जाये, तो बहुत चमत्कारी होती है।

(३) पुरुष के दाहिने हाथ और स्त्री के बांये हाथ में इसे बांधने से सौभाग्य व लाभ होता है। ऐसा माना जाता है।

(४) वंध्या स्त्री की कमर में बांधने से संतान की प्राप्ति होती है।

(५) मूल को ठण्डे पानी में घिसकर लगाने से बिच्छू आदि का जहर व हर प्रकार का जहर उतरता है।

(६) मूल में गोरोचन मिलाकर गुटिका कर तिलक करे तो सर्वजन वश हो।

(७) यह मूल, वच, हल्दी तीनों बराबर मिलाकर तिलक करे, तो अधिकारी वश में हो।

(८) मूल, गोरोचन, मैनासिल भ्रंगराज चारों मिलाकर तिलक करे, तो अधिकारी वश में हो।

(९) मूल, हल्दी, हुल (लाल कुरी) स्वरक्त से भोज पत्र पर लिखकर हाथ में बांधे, सर्वजन वश हो।

(१०) मूल, वीर्य भ्रंगराज, मिलाकर अंजन करे, तो अदृश्य हो।

(११) मूल का मेघा नक्षत्र में कस्तूरी में अंजन करे, तो अदृश्य हो।

(१२) मूल का वच के साथ घिसकर हाथ के लेप करे तो हाथ नहीं जले।

(१३) मूल को छाया में सूखाकर, चूर्ण कर घृत के साथ आधा रत्ती की मात्रा में खाने से भूत, प्रेत दूर होते हैं। स्मरण शक्ति बढ़ती है। देह की कांति कामदेव के समान हो जाती है। ४० दिन थोड़ी मात्रा में सेवन करे। ऊष्णता का अनुभव हो, तो छोड़ दें।

पंचांग :— फल, फूल, जड़, पत्ते व छाल को पंचांग कहते हैं।

पंचमैल :—कान, दांत, आंख, जिह्वा, और स्ववीर्य को पांच प्रकार का मैल कहते हैं।

मूल :— किसी भी पेड़ की जड़ को मूल कहते हैं।

बंदा :—एक वृक्ष पर दूसरा वृक्ष निकल आता है। उसे बंदा कहते हैं। उस वृक्ष की गांठ लेना चाहिये।

अपनी मां का नाम कागज पर लिखकर, मस्तक के नीचे दबाकर सोने से स्वप्न दोष कभी नहीं होता है। और यह रोग मिट जाता है।

काले धतूरे की जड़ ६ मासा प्रमाण चूर्ण कर कमर में बांधने से, स्वप्न दोष कभी नहीं होता है और बवासीर रोग ठीक होता है।

ह्रीं कार कल्प

सवर्ण पार्श्वं लय मध्य सिद्ध मधिश्वरं भास्वर रूप भासम् ।
खन्डेन्दु बिन्दु स्फुट नाद शोभं, त्वां शक्ति बीज प्रमना प्रणौमि ॥१॥

अर्थ :—जिसके पार्श्व में (स) वर्ण है (ऐसा, 'ह्') 'ल' और 'य' के मध्य में सिद्ध विराजमान है। ऐसा 'र' उसके अन्दर इ' स्वर है जिसकी कान्ति दैदिप्यमान सूर्य के जैसी है, और जो अर्थ चन्द्र (कत) बिन्दु और स्पष्ट नाद से शोभा पा रहा है। ऐसा यह शक्ति बीज है। मैं तुमको उल्हासपूर्वक मन में भावपूर्वक स्तुति करता हूं ॥१॥ नमन करता हूं।

ह्रीं कार मेकाक्षर मादि रूपं, मायाक्षरं कामद मादि मंत्रम् ।
त्रैलोक्य वर्ण परमेष्ठि बीज, विज्ञाः स्तुवन्तीशभवन्त मित्यम ॥२॥

अर्थ :—हे ईश ह्रीं कार आपको विद्वान पुरुष ह्रीं कार, एकाक्षरी, आदि रूप मायाक्षर कामद, आदि मन्त्र, त्रैलोक्य वर्ण और परमेष्ठि बीज, ऐसे विशेषणों से स्तुति, करते हैं।

शिष्यः सुशिक्षां सु गुरोर वाप्य, शुचिर्वशी धीर मनाश्च मौनी ।
तदात्म बीजस्य तनोतु जाप मुपांशु नित्यं विधिना विधिज्ञः ॥३॥

अर्थ :—सद्गुरु के पास पूर्ण आज्ञा प्राप्त करके, विधि को जानने वाले शिष्य को पवित्र होकर, सर्व इन्द्रियों को वश में कर पूर्ण रूप से, मन में धैर्य धारण कर, मौन रखकर इस आत्म बीज ह्रीं कार का विधियुक्त उपांशु जाप नित्य करना चाहिये ॥३॥

विशेष —ह्रीं कार के जाप व ध्यान करने वाले को प्रथम गुरु से आज्ञा प्राप्त करना चाहिए। फिर स्वयं पूर्णरूपेण शुद्ध होकर धैर्यपूर्वक इन्द्रियों को वश में करता हुआ मौन से उपांशु जाप करे। जाप करने के पहले सकलीकरण करना परम आवश्यक है। यहां उपांशु जाप का अर्थ है कि बिना बोले मन्त्र पढ़ना, जिस में होंठ हिलते रहें। जाप १ लक्ष करना चाहिये। जाप करने का स्थान श्वेत खड़ी से रंगा हुआ मकान हो, सफेद ही कपड़ा हो, सफेद ही अन्न का भोजन करे, सफेद ही माला हो, जाप करने वाले को अपने शरीर में सफेद चंदन का विलेपन करना चाहिये। पक्ष भी शुक्ल हो, पहले एक ताम्र पत्र अथवा सोना, चाँदी वा कांसे के ऊपर की कार खुदवा ले, फिर ह्रीं

कार यंत्र का पंचामृत अभिषेक कर के, उत्तमोत्तम अष्ट द्रव्यों से पूजा करे, फिर ॐ ह्रीं नमः की आराधना शुरू करे। जाप करने वाले को एकासन अथवा उपवास करना जरूरी है। उपवास कृष्णपक्ष की अष्टमी वा चतुर्दशी को करके विद्या आराधना करे शुक्ल पक्ष में भी कर सकते हैं। षट् कर्मों के लिये कोष्टक को देख लेवें। उपवास करने वाले साधक को दस हजार जाप से भी विद्या सिद्ध हो जाती है। विद्या सिद्ध हो जाने के बाद इस माया बीज ह्रीं कार को कौन-कौन कार्य के लिये किस किस वर्ण का ध्यान करना चाहिये सो कहते हैं। ('सफेद रंग का ह्रीं" का ध्यान करने का फल") ।

त्वांचिन्तयन् श्वेत करानुकारं, जोत्स्नामयीं पश्यतिया स्त्री लोकोत्मा।

(म) श्रयन्ति तंतत्क्षणतोऽनवद्य विद्या कला शान्तिक पौष्टि कानि ॥४॥

अर्थ :—चन्द्रमा के समान उज्ज्वल ह्रीं का ध्यान करने वाले को सर्व विद्याएं, सर्व कलाएं और शांतिक पौष्टिक कर्म तत्क्षण सिद्ध हो जाते हैं। जो ह्रीं को तीनों लोक में प्रकाशमान होता हुआ ध्यान करता है। और शुक्लवर्ण का ध्यान करता है। उसकी विपत्ति का नाश होता है। अनेक रोगों का नाश, लक्ष्मी और सौभाग्य की प्राप्ति, बंधन से मुक्ति। नये काव्य की रचना शक्ति प्राप्त होती है। नगर में क्षोभ पैदा करना व सभा में क्षोभ पैदा करने की शक्ति और आज्ञा ऐश्वर्यफल की प्राप्ति होती है ॥४॥

"रक्त ह्रीं कार के ध्यान का फल"

त्वामेव बाला रुणमण्ड लाभं स्मृत्वा जगत् त्वत्कर जाल प्रदीप्तम्।

विलोक तेयः किल तस्य विश्वं विश्वं भवेदवश्यम वश्यमेव ॥५॥

अर्थ—हे ह्रीं कार तुम उदित हुए बाल सूर्य की कान्ति के समान अरुण हो। आपके अरुण मण्डल में सारा संसार विहिन है। जो इस रूप में आपका ध्यान करता है उसके वश में समस्त संसार अवश्य हो जाता है। अन्य आचार्यों के मतानुसार लाल वर्ण के ह्रीं कार का ध्यान करने से संमोहन, आकर्षण और अक्षोभ भी होता है ॥५॥ स्त्री आकर्षण के लिए स्त्री के योनि के मध्य में ध्यान करना।

पीतवर्णी ह्रीं कार के ध्यान का फल

यस्तप्त चामी कर चारु दीपं, पिङ्ग प्रभं त्वां कलयेत् समन्वात्।

सदा मुदा तस्य गृहे सहेलिं, करोतिकेलिं कमला चलाऽपि ॥६॥

अर्थ :—जो पीले कान्ति सहित तुमको तप्त सुवर्ण के समान सुन्दर सर्वत्र प्रकाशमान ध्यान करता है। उसके घर में चलाय मान लक्ष्मी भी आनन्द और लीला सहित क्रिडा करती है। वह स्तंभन कार्य और शत्रु के मुख बन्धन में उत्तम कार्य करता है ॥६॥

'श्याम वर्ण ह्रीं के ध्यान का फल'

यश्यामल कज्जलमेचकाम, त्वां वीक्षतेवा तुष धूम धूम्रम
विपक्ष पक्षः खलु तस्यवाना, तताऽभ्रवद्या त्वचिरेण नाशम् ॥७॥

अर्थ :—जो साधक ह्रीं कार मायाबीज को काला काजल के समान श्याम वर्ण रूप अथवा छिलके के धुंआ के समान ध्यान करता है। उसके शत्रु समूह क्षण भर में नाश को प्राप्त हो जाते हैं। जैसे पवन से मेघ बिखर जाते है। निःसन्देह शत्रु को मरण प्राप्त करा देता है। और नील वर्ण का (ह्रीं) तुम्हारा ध्यान करने से विद्वेषण और उच्चाटन करता है ॥७॥

कुडली स्वरूप ह्रीं के ध्यान का स्वरुप

आधार कन्दोद्‌गत तन्तु सूक्ष्म लक्ष्यद्रोवं ब्रह्म सरोज वासम्।
यो ध्यायति त्वां सर्व इन्दु बिम्बा मृतं स च स्यात् कवि सर्व भौमः ॥८॥

अर्थ : जो मूलधार कन्द में से निकलता हुआ तन्तु के समान सूक्ष्म सुषुम्ना नाडी में रहने वाले लक्ष्यों (चक्रों) को भेद कर ऊपर जाता हुआ अन्त में सहस्रार कमल में रह स्थिर हो कर वहाँ चन्द्रमा के बिम्ब के समान अमृत झर रहा हो ऐसा ह्रीं कार माया बीज का ध्यान करता है वह साधक कविओं में श्रेष्ठ चक्रवर्ति होता है ॥८॥

फल श्रुति षड् दर्शनि स्व स्व मतावलंबैः स्वे 'दैवते त (त्व) त्मय बीज मेव। ध्यात्वा तदाराधन वैभवेन. भवदे जेयः परिवारि वृन्दैः ॥९॥

अर्थ :—षड्‌दर्शन के जान कार अपने अपने इष्ट देवता ह्रीं कार बीज का ध्यान करके वे आराधना के वैभव से प्रविष्ट होकर वादिओं के समुह से अजेय बन जाते हैं। ऐसा इस माया बीज का अतिशय है।

किं मन्त्र यन्त्रै विविधागमोलैः दुःसाध्यसं नीति फलाल्प लाभैः

सुसेव्यः वः (सद्यः सुसेव्यः) फलचिन्ततार्थाश्रिक प्रदश्च (त) सिन्नेत्व मेकः ॥१०॥

अर्थ :—साधक के हृदय में एक ह्रीं बार अगर विद्यमान है, तो अन्य यन्त्र मन्त्र जिनका कि अल्पफल हैं और दुःसाध्य है, ऐसे मन्त्रो अथवा यन्त्रों का क्या प्रयोजन है। अन्यत्र आगम में जिनका वर्णन है ॥१०॥

चौरारि-मारि-ग्रह-रोग, लूता भूतादि दोषा नल बन्ध नोत्थाः ।

भियः प्रभावात् तव दूर मेव नश्यन्ति पारीन्द्रखारि वेभा ॥११॥

अर्थ : जैसे वनराज सिंह की गर्जना से हाथी दूर भाग जाते है, वैसे ह्रीं कार तुम्हारे प्रभाव से चोर, गाशु मारी, ग्रह, रोग ह्रता रोग तथा भूत, व्यंतर, राक्षस, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी पिशाचदी दोष और अग्नि तथा बन्धन से उत्पन्न होने वाला भय दूर हो जाते हैं ॥११॥

प्राप्नोत्यपुत्रः सुतमर्भहीनः श्री दायते पतिरपोशतीह ।

दूःखो सुखी चाऽभ भवेन्न किं किं, त (त्व) द्रुपचिन्ता मणिचिन्तनेन ॥१२॥

अर्थ :—चिन्तामणि समान तुम्हारे रूप का चिंतन करने से क्या-क्या प्राप्त नहीं होता ? जिसको पुत्र नहीं है उसको पुत्र की प्राप्ति होती है, जिसके पास लक्ष्मी नहीं है उसको लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। सेवक भी स्वामी बनता है दुःखी भी अत्यंत सुखी होता है ॥१२॥

विशेष—इस ह्रीं कार को साधक सालंबन ध्यान से निरालंबन ध्यान करे फिर निरालंबन ध्यान में से पराश्रित ध्यान करे, उसके बाद उल्टा पराश्रित ध्यान में से निरालंबन और निरालंबन में से सालंबन ध्यान करे, इस प्रकार ध्यान करने से अनेक सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। सलंबन बाह्य पर आदि आलंबन सहित ध्यान ॥ निरालंबन—बाह्य आलंबन बिना केवल मन के द्वारा ह्रींकार की आवृतिका ध्यान करना। पराश्रित ह्रीं कार से वाच्य ऐसे परमात्मा के गुणादिका ध्यान करना।

पुष्पादि जापामृतहोम पूजा, क्रिया धिकारः सकलोऽस्तुदूरे ।

य केवल ध्यायति बीज मेव, सौभाग्य लक्ष्मी वृणु त स्वयंतम् ॥१३॥

अर्थ :—पुष्प वगैरह के जाप से क्या, घी के होम से भी क्या, पूजा वगैरह समस्त क्रियाओं का अधिकार दूर रहा, किन्तु केवल तुम्हारे बीज रूप ध्यान से समस्त सौभाग्य रूपी लक्ष्मी स्वयं वरण, करती है ॥१३॥

महिमा :—

त्वतोऽपि लोकः सु कृतार्थ काम, मोक्षान पुमर्भ श्चतुरो लभन्ते ।
यास्यन्ति याता अथ यान्तिये ते, श्रेय परं त्वंमहिमा लवः सः ॥१३॥

अर्थ :—तुम्हारे प्रभाव से लोक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार पुरुषार्थो की प्राप्ति करते हैं। जो मोक्ष का स्थान है उसको प्राप्त कर रहे हैं, कर गये है और आगे भी करेंगे। वे सब तुम्हारी महिमा का अंश मात्र है। क्योंकि एक ह्रीं कार माया बीज के अन्दर चौबीस तीर्थंकर, चौबिस यक्ष, चौबीस यक्षिणी, समाविष्ट है। ह्रींकार को सिद्ध परमेष्ठि वाचक भी कहा है, और इस ह्रीं कार में धरणेन्द्र पद्मावती पार्शनाथ प्रभू का भी बास है। मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक को ह्रीं कार का कैसे स्थान चाहिये सो बताते है।

वृक्ष, पर्वत, शिलाओं से रहित क्षीर समुद्र के समान जो सम्पूर्ण बाधाओं से रहित आनन्द दायक शांत अद्वितीय क्षीर से परिपूर्ण जैसे क्षीर का महासागर हो ऐसी इस पृथ्वी का चिंतवन करे। फिर ऐसी पृथ्वी के बीच अष्ट दल कमल, कमल दल पर ह्रीं कार उसके बीच कर्णिका में स्वयं मै उज्ज्वल कान्तिमान पद्मासन लगा कर बैठा हू ऐसा चिंतवन करे। फिर स्वयं को चतुर्मुख तीर्थंकर, के समान समवसरण सहित ध्यान करे, चारों गतियों का विच्छेद करने वाला सर्व कर्मो से रहित पद्मासन से बैठा हुआ श्वेत स्फटिक के समान शोभा को प्राप्त कर रहा हू उसके बाद ब्रह्मरंध्र में स्थापन किया हुआ स्फटिक के समान वर्णवाला ह्रीं कार के बीच अपनी आत्मा को बैठा हुआ देखे फिर ह्रीं कार के प्रत्येक अंग से अमृत झर रहा है। और उस अमृत से मेरी आत्मा का सिंचन हो रहा है, ऐसा चिंतवन करे, ऐसा ध्यान करने से साधक तद भव मोक्ष सुख पा लेता है, अथवा तीन चार भव में नियम से मोक्ष पा लेता है।

विधामयः प्राक प्रणवं नमाऽन्ते, मध्येक (च) बीजनतु जग्नपाति
तस्यैक वर्णा वितन्योतय वन्ध्मा, कामाजु'मी कामित केव विद्या ॥१४॥



जयसिंहपुरा खोर (कानीखोह) के दिगम्बर जैन मन्दिर की मूल वेदी में—
१०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी महाराज



दिगम्बर जैन मन्दिर जयसिंहपुरा खोर पर १०८ आचार्यश्री कुन्थुसागर जी महाराज व गणनी १०५ आर्यिका श्री विजयमती माताजी आहार लेते हुये, पास में मन्दिर के मानद-व्यवस्थापक, श्री लल्लूलाल जैन गोधा, दिखाई दे रहे हैं।





जयपुर निवासी गुरु भक्त संगीताचार्य श्री शान्तिकुमार गंगवाल आचार्य श्री के चातुर्मास अकलूज जिला सौलापुर (महाराष्ट्र) में माताजी के केश लोंचन समारोह के बाद अपने परिवार जनों के साथ पिच्छी व ग्रन्थ भेंट करते हुए ।

अर्थ :—जो साधक पहले प्रणव "ॐ" और अन्त में "नमः" मध्य में अनुपम बीज "ह्रीं" कार का बार बार जाप करता है, उसके सर्व मनवांच्छित कार्य एक वर्नबाही अवश्य और कामधेनु के समान ह्रीं कार विद्या विस्तारती है, इसको एकाक्षरी विद्या कहते हैं ॐ ह्रीं नमः ।१५।

नोट :—ध्यान रहे कि शुक्ल ध्यान का ह्रीं को छोड़ कर बाकी पिली, लाल, काली, जो भी वर्ण का ध्यान करने का आया है, उस उस वर्ण के ह्रीं, को शत्रु के हृदय में ध्यान करे मारण कर्म के लिये शत्रु के नाभि में ध्यान करें।

मालामिमा स्तुतिमयीं सुगुणां त्रिलोकी ।
बीजस्य यः स्वहृदये निश्रयेत् क्रमात सः ॥
अङ्कुऽष्ट सिद्धिर वशा लुठतीह तस्य
नित्यं महोत्सव पदं लभते क्रमात् सः ॥१६॥

अर्थ :—जो मनुष्य त्रैलोक्य बीज रूप अच्छे गुण वाली स्तुति रूपी इस रूपी इस माला को तीनों काल अपने हृदय में धारण करता है, उसके गोद में आठो सिद्धियां अवश्य वश कर नित्य ही आती है और क्रम से मोक्ष पद की प्राप्ति कराती है।१६।

सोना चांदी बनाने के तन्त्र

(१) स्वर्ण माक्षिक ८ मासा

पारा	४ मासा
तांबा	४ मासा
सुहागा	४ मासा

इन सबको मिला कर 'कुप्पी' में डाले 'फिर अग्नि में गलावे' तो शुद्ध चांदी हो।

(२) गंधक को ओटा कर (गर्म कर) प्याज के रस में भुजावे १०८ बार, फिर उस गंधक को चांदी के साथ गलावे तो सोना होता है।

(३) हिंगुल शुद्ध १८ तोला, अभ्रक ३२ तोला को एकत्र करके रुद्रवन्ति के रस में घोट कर, चांदी के पत्ते पर लेप करके पुट देवे, तो सोना हो।

(४) सांग बीज एक जात की बूटी होती है। उसके पत्ते की लुगदी में तांबा रख कर अग्नि में फूके तो स्वर्ण बने।

(५) गाथा :—नाग फणिए मुल, नागण तोए एणगभनागेण

नागण होइ सुवणं धमंत पुण्ण जोगेण ।।

समयसार जयसेनाचार्य की टीका में ।

अर्थ :—नागफणी की जड़ लेना, चांदी गलाइ हुई लेना, उसमें सिन्दूर मिला कर घोटना फिर उस द्रव्य को अग्नि में धोकना तो सोना बनता है, यदि पुण्ययोग हुआ तो ।

(६) शुद्ध हिंगुल का एक तोले का डला लेकर उस हिंगुल के डले को गोल बेंगन काला वाला को चीर कर उसमें उस हींगुल को रख कर उपर से कपड़ा लपेट कर, फिर मिट्टी का उस बेंगन पर खूब गाढा लेप करे, फिर उस बेंगन को जंगली कंडों के अन्दर रख रख कर जलावे, जब कण्डों की अग्नि जल कर शांत हो जावे तब उस बेंगन को निकाले। बेंगन के अन्दर से उस हिंगुल के डले को निकाल लेवे । इसी तरह क्रमशः १०८ बेंगन में उस हिंगुल के डले को फूंके । यह रसायन तैयार हो गई । इस रसायन में से एक रत्ती लेकर एक तोला तांबे के साथ मिला कर कूप्पी में गलावे तो १ तोला सोना तैयार हो जायगा, लेकिन णमोकार मन्त्र का सतत जप करना होगा ।।

(७) लोहे के लुषा चेउधा चेपक्का सेर दुधाचेमा लोल सारख त्याल सेराचा दुधत्या भर मिलउन संख्या समोल तोले ६ आंत घालणें धोंडयाची चूल करणे वर लोट के ठेव ने शनसेनी अग्नि देवी रुचिक आटवने मगपुरे करने म्हण जे कल्क झाला जतन ठेवणे तोला १ लॉंग्या चेपानी करणे रसफिरो लागलाम्हण जे सामथ्ये अर्द्ध मासा कलं कणे काटकाणे समरस करणे हालवने भुसीस धमकव ने से नाचे मुसील बोलने घंड भा त्यावर काढ़ने म्हण जे शुद्ध धवल होय ।।इति।।

(८) कई होय अर्द्ध मेला होय मागुनो पानी कर ने एक तोल मास दाने तोले रूप मिलविणे धवल शुद्ध होय हा एक तोल्या चा अनुपान ।

(९) लाल फूल वटो लापान बहुत होय है रानोरान जड़मूल का किया थाना । नाथ कहे कथील हुआ रूपा बटोल पान सफेद फूले येर्फ नासव ही रान एक थॅव से पारा मारू नाथ कहे कंचन रूप ।

(१०) जस्त तोला १ पांढया व सूच्या भावना सात देणे मग पत्र करणे कंटक वेधनी ताडन रसान सिजवे म्हण जे एक फुट जाले मागु ते लाडन सिजवने म्हण जे पुटि २ झाले मागुते लाडन एसे पुट सात देणे मगपुरे करणे मग एक मुसीत घालोन कोलसा वर ढेऊन कोल से पेटवा वे त्याचे पानी करणे रस बरापि चलला म्हण जे मग कांही थोड़ी

बहुत मुस थोड़ी बहुत घंड झाल्या वर रस जो मुसोर डले सरल तो त्या मध्ये पारा तोला १ मे लवने पारा व जस्त तत क्षण एक होती मग ते खला मध्ये बारीक करून ठेवणे म्हण जे कलंक सिद्ध साध्य झाला एक करून ठेवणे तांब पत्र कंटक वेधनीं करुन मग रूई चेपाना चा रस काहुन हे वणे मग ताम्र पत्र लाऊन रूई रसात सिजवने एसेपुट ७ देणे मगपूरे करणे मग श्वेत झालीया एक मुसीत घालणं त्याचे पानी करणे ।। इति ।।

शुल्वस्य भाग त्रतय नेकैकं नाग वेगयोः ।। ११ ।।
समावर्त्य विचूरायार्थं सिद्ध चूर्णेन पूर्ववत् ।
नागमेंक द्वयंशु ल्वंषद् शुल्वं चैकं पन्नगं ।। १२ ।।
रूध्वाधियातंतु तच्च् हेमगेरिकं ।। १३ ।।
रूध्वाध्मातं पुनश्चूर्णे सिद्ध चूर्णे न पूर्ववत् ।
गंध केनहतं शुल्वं माक्षि कं कंच समं समं ।। १४ ।।
हंस पाच्यि त्रक द्रावै दिन मेकं विमर्दयेत् ।
तेनैव तार पत्राणिलिप्त्वा रूध्वा पुटेप चेत् ।। १५ ।।
समुद्ध पुटा त्पश्चा त्कृत्वा पत्राणि लेपयेत ।
पूर्वक ल्केन रूध्वाथपुटं दत्वा समुद्धरेत् ।। १६ ।।
इत्येवं सप्तधा कुर्यात्तार मायाति कांचनम् । इति ।
राजावर्त्त च पारापत मलं समं ।। १७ ।।
असित्यसेन कुरू तेस्वर्ण रोप्यं च पूर्ववत् । इति ।
रसं शिरीष पुष्पस्य आर्द्र कस्य रसं समं ।। १७ ।।
भावयेत्सम वाराणि राजावर्तसु चूर्णितं ।
तेनैव शत स्वर्णं तार द्रुतं समं ।। १६ ।।
वेधयेत् सर्व मांशेन वत्सिद्धं दिव्यं भवति कांच नं । इति ।
कुंकुमं विमलं ताप्यं रस कंद रदं शिला ।। २० ।।
राजावर्तं प्रवालं च राजी गैरिक टंकणं ।
सैंधवं चूर्ण ये त्तुत्यंम शीत्यंशेन वेधयेत ।
काच माच्या द्रवैः समं ।। २१ ।।

णमं मर्धेतु तेरूध्वा आरण्ड्रोत्पल कं पुटेत् ।
इत्ये वं तुत्रिधा कुर्यान्मिर्दितं पुट पाचितं ॥ २२ ॥
तद्ध हिंगुलं शुद्ध क्षिप्त्वा तस्मिन्वि मर्दये त्कांजि कै यमि मात्रंहि पुटे नै केन पाचयेत् ॥ २३ ॥
अस्य कल्कस्य भागैकं भागा श्चत्वारिहाटकं ।
अंधभुर्वाग तंध्मातं समादाय विचूर्णयेत् ॥ २४ ॥
पूर्ववत्पूर्व वत्कल्केन रूध्या दंयं पुटे पुनः ।
अनेन षोऽशां शेनसित वर्ण वेध येत ॥ २५ ॥
सेचये त्कांगुणी तैलं रक्त वर्णेन भावितं ।
पुनर्वेध्य पुनः सेच्य षोडशांशेन बुद्धिमानं ॥ २६ ॥
एवं वार त्रयं वेध्यं दिव्यं भवति कांच नं । इति ।
ताम्र तुल्य स्य नागस्य शोध येत् ध्यमनेन च ।
ताम तुल्यं शुद्ध हेम समा वर्त्य लिपत्रयेत् ॥ ३२ ॥
इष्टि का तुवरी चैव स्फटिका लवणं तथा ।
गैरिकं भाग वृद्धंशं मारना लेन पेषयेत् ॥ ३३ ॥
तेनलिप्तवा पूर्व पत्रं रुध्वा मज पुटे पचेत् ।
एवं पुनः पुनः पाच्यं यावत्स्वर्ण विशेषितं ॥ ३४ ॥
तत्स्वर्ण ताम्र संयुक्तं समावर्या तुपत्रयेत्पूर्व वत्पुट पाकेन पचेत्स्वर्ण विशेषितं ॥ ३५ ॥
इत्येवं षड्गुणं ताम्र स्वर्णं वाह्यं क्रमेण तत् ।
तत्स्वर्ण जायते दिव्यं पद्मराग समः प्रभः ॥ ३६ ॥
षड्त्रिशेन ते नैवमष्ट वर्णंतु वेध येत् ।
तत्सर्वं जायते दिव्यं दशवर्णं न संशयः ॥ २७ ॥ इति ।
समं ताप्यं ताम्र चूर्णं ताप्यार्द्धं लोह चूर्णकं ।
कन्या द्रावै क्षणं मर्द्यं तै रे व मर्दयेत् ॥ ३९ ॥

एवं वाराश्च तुषष्टि त तः शुष्कं विचूर्णयेत् ॥
षोऽशां शेन तैनैव मष्ट वर्णं तु वेधयत् ॥ ४० ॥
तत्स्वर्णं जायते दिव्यं दश वर्ण न संशयः ।इति ।
गंधकेन हत स्वाल्वं दर्दार्द्धं युत सुतकम् ।
मन शिले समायुक्तं मातुर्लिगेन मर्द ते ॥
नाग पत्र प्रलेपानां त्रिपुटं कुंक मारून सन्नभम् ॥
तार वेदश्य त्रिगुणं द्यंतं तारामायात कंचनम् ॥ १ ॥

गंधक लेके बाटे पानी से तांवें चे तगड को लेप करे। अग्निदेय ताम्र मरेनंतर हिंगुल जस्त मनशिल समभा ३। लेय वा ताम्र मरलेला एकम् करिनिंबू रस से खरल करे दिन इनंतर सीस को पत्र करीते बाट लेली जिनरु तेपत्रास लेप करे मग रान गोविरी की अंगार कापुटती न देय। तर ते शीस मरेल असर ३ भाग चांदी १ भाग ते नाग भस्म मुसमे गलावे वसु थाय ॥ इति॥

गन्धकेन हले सुल्वं दर देन समान मिता ॥
तत समा मनि शिला युक्तं मातु लिंगेन मर्दताम् ॥
त्रिषष्ट पुट नं नागं कु कुमारुन सन्न भंम् ॥
षोडशं शतार वेदांत एवं भव नु कांचनम् ॥ २ ॥

गंधक से तां वामारे हिंगुल क दोई समान मन शिल लेप निंबू रस में मर्दन करे शीशे पतरा को लेप करे नंतर रान गोवि रोके छपुट दे अग्नि की मूतर कुंकम सारभस्म होय षोडश भाग चांदी एक भाग ते भस्म एक भाग मुसमे गलावे पीत ॥ इति ॥

गंधिकं मधु संयुक्तं हरि वीर्येन मर्दताम ॥
भमिस्ता मास मेकं तारा मयात कंचनम् ॥ ३ ॥

गन्धिक मदुपारा एकत्र करी खल करे दिवस २ शीशी में भरे। उकरडा में गाढे मास १ मग काढुन तोला चां दीसु मासादेय वसु ॥ इति ॥

हार मेकं मयं तीरं तार नीक्षण चतुर्गंठां ॥
चतुरष्ट मष्टवंगं च वंगं स्थंभन रौषधंम् ॥ ४ ॥

पीतल चांदी पोलाद रेत ४ कथील भाग ८ एकत्र मुस मेंगलावे, एक मेक होय जाय

तब निकाल लेय ते जिनस घट होय नंतर बारीक बांटी तोला कथील को पानी करी एक मासा कथीला सी देय रजत ॥ इति ॥

हिंगुलक उत्तम लेय तोला १ खडा काले बैंगन में भरे। फिर बैंगन की ऊपर मिट्टी का लेप करे। अग्नि में देय जब बैंगन पक जाय, ठंड भये काटे। एसे१०८ बैंगनमें पकावे। एप्रमाण करे भस्म होय ते भस्म तोला तांबे को गूंज देय वसु ॥

मन्त्र :—ॐ नमो अरिहंताणं रसायनं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र का जाप्य ४५०० करे ॥ इति ॥

जूनी ईंट लेय १ साचे दल वाटे ४ के सममधी खड्डा करके खड्डी में पारा भरे तोला २ मग जस्ताची वाटी तो पांच की ऊपर बाँधो ढंके। पारा का ऊपर मग भौताल वाटी की संधी (सांठ) गुड चुना ओमू से मग तीन पत्थर के ऊपर ईंट चढ़ावे। नीचे अंग.र नर बेर की लकड़ी की देद प्रहर १६ मग्ने वाटी ऊपर हजार नींबू को रस लेप चो वादे सोलह प्रहर मग ठंडी भवे निकारे नारियल फोड़े।

मन्त्र जप :—ॐ नमो भवावते अर घटे मम रसायनं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॥

जप १०,००० नंतर ते भस्म पर की तोला तांबे को गूंज १ देय उत्तम पीत। जस्त भस्म देय तर मध्यम भंगार ॥ इति ॥

पारास्तंभन का तंत्र

मन्त्र :—अल बांधो, थल बांधो, बांधो जल का नीरा, सात कोस समुंदर बांधो, बांधो बावन वीरा, लंका ऐसी कोट, समुंदर ऐसा खाइ, पारा तेरा उडना बांधो, शिव तोर वी जाई बंध जा पारवती की दोहाइ ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र को कमलाक्ष की माला से पूर्व की तरफ मुख करके चौरासी हजार जप करे, दशांस अग्नि में आहुति देवे, होम द्रव्य, खोवा, १ सेर, शहद १ सेर, सौंप १ सेर, दूध १ सेर, घी १ सेर, आम की लकड़ी। तब मंत्र सिद्ध होता है।

मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद पारा एक रुपया भर से लेकर नोसौं भर पारा तक एक पात्र में धर, छोटा वरि आरी बूटी का दो चार पत्र डारि, इसी मन्त्र को १०८ अथवा तीन, अथवा सात, अथवा एक इस बार मन्त्र पढ़ि २ पारा कुं फूक के ढाक ते जाना, मन्त्र पढ़ते जाना, अच्छी भांति ढांकी के गोबठे (कंडे) सेर २ सेर के अग्नि में कप रोटी करके डार देना, पारा की चांदी हो जायगी। यह सिद्ध साबर मन्त्र है रसायन का।

(१) गंधक एक भाग, पारा दो भाग, हरताल भाग तीन, सिसा भाग चार, पीला वंधारी याने पीले तीलवनी उसके रस में खल कर तांबे को पुट देने से सुवर्ण के समान पीत होता है। सिद्धम् इति।

(२) हरण खुरीताश्वे रस में घुमाना चाहिये। तांबे में पारा भस्म अथवा शिशभस्म प्रथमतः डाले उसके बाद रस में घुमावे। सिद्धम्।

(३) कन्हैरा मंशिल पतोला उसका रंग कनेर के फुल जैसा रहता है। १ तोला कथिल का पानी करना। उसमें एक रती गुंजा मंसिल डालना। उसमें शुद्ध शुभ्र होता है।

(४) कलकपारा सेर ७७२ काले पत्थर के खल में उसको घोटना। सफेद रिंगणी उसके फूल सफेद होते है उसको तोड़कर उसके बाद भूजा शाखा पाला घिसकर उसका रस बनाना। २सेर खल में डालकर उसको खलना। पारा माखन जैसा बनता है। कुम्भार से एक बेलनी लाना। उसमें खल किया हुआ पारा डालना। एक बीतभर खड्डा खनना। कैरको कोयला भट्टी जलाना। उसपर बेलनी रखना। उसमें रिंगणी का रस डालना। बेलणी आटे के पाक करना। पारा और रस ओटने के बाद पूरा पारा पीता है।

(५) समभाग संना भाग १ सज्जो खार भाग १ फटकडी भाग १ सोरा कलमी भाग १ संख्या समोल १ नगसागर रुनी कौशा कज्जकली ६ वटिका करना। उस पर पुट देते जाना, सात बार पुट देना। ताम्र धवल शुद्ध होता है।

(६) सफेद फुलोंक कोहुला लेकर उसका ऊपरी हिस्सा निकालना। उसकी शाक पकाना। उसमें कथील डालना। पकने बाद ठंडा होने के बाद निकालना। शुभ्र धातु होय।

पूज्यपाद स्वामी कृत

सोना बनाने की विधि :—

श्लोक :—पारदं पलमेकं च हरितालं च तत्समम्।
गंधकं च तयो तुल्यं मर्दनीयं विशेषतः।
दिनेकं सूर्य दुग्धेन पश्चात् छाया विशेशतं।
कोपिको दूरे विनिक्षिप्य मुखं रूध्वा विराचितं।
रतिमात्र प्रयोगेन दिव्यं भवति कांचनम्।

अर्थ :—पारद १ पल, हरताल १ पल, और गंधक १ पल, इन द्रव्यों को लेकर विशेष रूप से मर्दन करे, आकड़े के दूध में, फिर छाया में सुखा कर उसको साने गलाने की कुप्पी में डालकर मुख को रूध करे, फिर अग्नि में फूके तब एक रसायन तैयार हो जायगा, उस रसायन को १ रती, तोला तांबे के ऊपर प्रयोग करे तो शुद्ध सोना होता है।

गंधक से तांबा को मारकर हिंगुलक दोई समान, मनशिल लेप नींबू रस में मर्दन करे, शोना के पतरा पर लेप करे, फिर रानगोबिरो के ६ पुट देवे अग्नि में तो कुंकुमसार भस्म हो जायगा। सोलह भाग चांदी पर वह एक भाग रसायन भस्म, लेकर कुप्पी में गलावे तो सोना होता है।

श्लोक :— गंधिकं मधु संयुक्तं हरी वीर्येन मर्दताम् ।
भूमीस्ता मासमेकं तारामायात कंचनम् ।

गंधक, मद, पारा, एकत्र करके खरल करे, दिवस २ शीशी में भरे, उकरडा में गाडे मासा १ निकाल कर एक तोला चांदी के साथ गलावे तो सोना होता है ।

पीतल चांदी पौलाद रेत ४ भाग कथील भाग ८ एकत्र मुसल में गलावे, एक मेक हो जाय, तब निकाल कर, जब जिनस घट्ट हो जाय नन्तर बारीक बांटी तोला कथील को पानी-करी एक मासा कथील देय तो चांदी बने ।

चांदी बनाने का तंत्र

तरबूज सेर पांच से ज्यादा कुछ तौल में होय ऐसा एक तरबूज ताके तले की तरफ तेचकरी काट के उसमें संमलखार पैसे दो भर चिथरा में लपेट कर डारि के तब पेदा तरबूजा की लगाय के कपरौटा सात दफे सुखाय २ के करना तबगज पुट का आंच देना, जब तरबूज जलने नहीं पावे तब निकाल लेना, तब तांबा तोला १ पर मासा १ उपरोक्त रसायन देना तो शुद्ध चांदी बने ।

सोना बनाने का तंत्र

शीशा को प्रहर चार अग्नि में देना जब ठंडा होय तब तोला एक का पत्र बनाय कर, उसके ऊपर हिंगुल तोला १ नींबू के रस में खरलकर पत्त पर चुपड कर दो दीए के बीच में रख कर बंद करे ऊपर कपरौटी करे, सुखावे, सेर एक जंगली कंडे में उसको फूंके, जहां किसी की छाया नहीं पड़े, जब ठंडा हो तब निकालना, इस भांत सात बार करे तब शीशा की भस्म बनेगी, बंधक होय सो तोला एक चांदी भरे तो एक की मात्रा डालने से शुद्ध सोना बनेगा ।

हीरा बनाने की विधि

मऊ के बीज का तैल तैयार रखे, जब बनौला आकाश से पडे, तब तुरन्त अग्नि जलाकर, उस तैल को अग्नि पर चढ़ादे, फिर गर्म करे, उस गर्म तैल में बिनौला ले, लेके डालते जाना, सब पत्थर हो जायगा जम करके वही कोरा हीरा है । लेकिन मउ की लकड़ी को ही आंच दे । कडाई को जब बनोला पत्थर हो जाय तब नीचे उतारना । भाग्य अच्छा हो तो यह कार्य अच्छा हो जाय ।

—: समाप्त :—

ग्रंथ प्रकाशन कार्य में दान दाताओं की सूची

लघु विद्यानुवाद ग्रन्थ प्रकाशन कार्य में निम्न महानुभाओं से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है :—

६००१)	श्रीमान् दानवीर सेठ पन्नालालजी सेठी आसाम (नागालैण्ड)
४००१)	गुप्तदान
४००१)	गुप्तदान
१५०१)	श्री माणकचन्दजी मोतीचन्दजी अकलूज सौलापुर (महाराष्ट्र) वाले (स्वर्गीय श्री गंगाराम जी दोशी की पुण्य स्मृति में)
२८०६)	अकलूज जैन निवासियों से प्राप्त राशि
११५१)	श्री जौहरी लालजी मोतीलालजी, छिन्दवाड़ा
१००१)	श्री हीराचन्दजी खेमचन्दजी फड़े अकलूज,
१००१)	श्री मियाचन्दजी रतुचन्द फडे अकलूज
१००१)	श्री ताराचन्दजी जैन कार्य पालन मंत्री पी. डब्लू. डी. भिंड
१००१)	श्री दुलचन्दजी देवचन्दजी दोशी अकलूज
१००१)	श्री अभयकुमारजी रूपचन्दजी फडे अकलूज
१००१)	श्री महावीर मोतीचन्दजी शाह अकलूज
१००१)	डा० सुरेशकुमार जैन इलाहबाद
५०१)	श्रीमती चतुराबाई सुन्दरलाल चक्रेश्वरा
५०१)	श्री शांतिलालजी गुलाबचन्दजी गांधी अकलूज
५०१)	श्री जयकुमारजी खुशालचन्दजी गांधी अकलूज
५०१)	श्री दीपचन्द जी लालचन्द जी फडे अकलूज
५०१)	श्री प्रेमचन्दजी गुलाबचन्दजी गांधी अकलूज (श्री कांतिलालजी प्रेमचन्दजी कपुनी य स्मृती में)
५०१)	श्रीमती चंचल बाई हीरचन्द गंगाराम भम्मड्कर अकलूज
५०१)	श्री अनंतलालजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१)	श्री बापूचन्दजी वीरचन्दजी दोशी अकलूज
५०१)	श्री बापूचन्दजी मोतीचन्दजी अकलूज
५०१)	श्री प्रेमचन्दजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१)	श्री नेमीचन्दजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१)	श्री मान् सेठ सम्पत कुमार जी कटक
५०१)	श्रीमान् सेठ विजय कुमार जी कटक
१५०१)	श्री भाग चन्दजी छाबडा जयपुर
१००१)	श्री हरक चन्दजी पाण्डया (गोहाटी वाले) जयपुर
१००१)	श्री मोतीलालजी छाबडा, जयपुर

१००१) श्री मोतीलालजी जौहरीलालजी, खड़गपुर
१००१) श्री महावीर कुमारजी लौग्या, जयपुर
१००१) श्री शांतिकुमारजी गंगवाल जयपुर
५०१) श्री मोतीलालजी हाड़ा जयपुर
५०१) श्री रतनलालजी गिरराज जी राणा
५०१) श्री गुलाबचन्दजी चौमू वाले फर्म (रामसुख चुन्नीलाल) जयपुर
५०१) श्री चिरंजी लालजी महावीर कुमारजी सोगाणी जयपुर
५०१) श्री सुन्दर लालजी गप्पूलालजी पापड़ीवाल, जयपुर
५०१) श्री कपूरचन्दजी पाण्डया, जयपुर
५०१) श्री हीरालालजी सेठी जयपुर
५०१) श्री कमल चन्दजी चिंतामणीजी बज जयपुर
५०१) श्री हरिश्चन्द्रजी पाटनी, जयपुर
५०१) श्री प्रेमचन्दजी अनिलकुमारजी काला, जयपुर
५०१) श्री रामअवतारजी राजकुमारजी, जयपुर

"कुंथु विजय ग्रंथ माला" समिति उपरोक्त सभी महानुभावों का आभार प्रकट करती है। कि समिति के द्वारा भविष्य में जब २ भी इस प्रकार के अद्भुत अलभ्य ग्रंथों का प्रकाशन होगा, सहयोग मिलता रहेगा।

